

८

अंक-विद्या (ज्योतिष)
(NUMEROLOGY)

अंक-विद्या

(ज्योतिष)

(NUMEROLOGY)

लेखक

ज्योतिषकलानिधि देवजशिरोमणि
पंडित गोपेशकुमार श्रोभा एम.ए., एल-एल.बी.

पुनर्मुद्रण : दिल्ली, १९६६, १९६६, १९७२, १९७७, १९८२, १९८६

© मोतीसाल बनारसीदास

मूल्य कार्यालय: बगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली ११० ००७

शाखाएँ: चौक, वाराणसी २२१ ००१

अग्रोक राजपथ, पटना ८०० ००४

२४ रेसकोसे रोड, बगलौर ५६० ००१

१२० रामपेट्टा हाई रोड, मैनापुर, भद्रापुर ६०० ००४

मूल्य: रु १८

नरेन्द्रप्रकाश जैन, मोतीसाल बनारसीदास, दिल्ली ७
द्वारा प्रशाशित तथा जैनेन्द्रप्रकाश जैन, थी जैनेन्द्र प्रेस, ए-४५
नारायणा, कॉज-१, नई दिल्ली-२८ द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

“वनं समाधिता येऽपि निर्ममा निष्परिग्रहाः ।
अपि ते परिपृच्छन्ति ज्योतिषां गति कोविदम् ॥”

जो सर्वसंग परित्याग कर वन का समाधिय ले चुके हैं, ऐसे रागद्वेष शून्य, निष्परिग्रह मुनिजन-संत-महात्मा भी ज्योतिष शास्त्र वेत्ताओं से भविष्य ज्ञात करने के लिये उत्सुक रहते हैं; तब साधारण संसारी प्राणी की तो चर्चा ही क्या ?

प्रायः इस भविष्य ज्ञान की प्राप्ति ज्योतिष शास्त्र के द्वारा होती है। ज्योतिष शास्त्र अथाह सामर है। जन्म-कुण्डली निर्माण के लिये, जन्म का स्थान, ठीक समय का ज्ञान आदि परमावश्यक हैं। शुद्ध लग्न, भाव स्पष्ट, ग्रह स्पष्ट, मान्दि स्पष्ट मित्रामित्रचक्र, सप्तवर्गी चक्र, दशवर्गी, दशा, अन्तर्दशा, अष्टक वर्ग, सर्वाष्टक वर्ग आदि वनाने में बहुत गणित करना पड़ता है और परिश्रम साध्य है। फलादेश में भी अनेक विचारों का सामञ्जस्य करना पड़ता है। बृहत् ज्योतिष शास्त्र की परिक्रमा लगाना बैसा ही कठिन है जैसा पृथ्वी की परिक्रमा लगाना।

पृथ्वी की परिक्रमा के मन्त्रन्व में पुराणों में एक कथा^१ है कि एक बार स्वामी कार्तिक तथा गणेश जी दोनों ने आग्रह किया कि उनका विवाह हो। स्वामी कार्तिक चाहते थे पहिले उनका विवाह हो तथा गणेश जी चाहते थे पहिले उनका विवाह। तब उनके माता-पिता ने कहा कि जो पहिले पृथ्वी की परिक्रमा पूर्ण कर

१. देलिमे शिव पुराण (रद्द संहिता), कुमार खण्ड १६ वां अध्याय ।

(४)

आवेगा उसी का विवाह पहिले किया जावेगा । स्वामी कार्तिक अपने वाहन मधूर पर चढ़ कर द्रुतगति से चले और देखते-देखते आँखों से ओझन हो गये । गणेश जी का शरीर भारी और वाहन थोटा-सा 'मूपक' । सो विचार में पड़ गये कि कैसे परिक्रमा पूर्ण करें ? उन्होंने अपने माता-पिता को बैठाया, उनके चरणों का पूजन कर ७ बार माता-पिता की परिक्रमा की और प्रणाम कर कहा कि "मैंने पृथ्वी की परिक्रमा कर ली—भाई एक बार भी परिक्रमा करके नहीं आये । अब पहिले मेरा विवाह कीजिये" । शास्त्रों में माता-पिता का पूजन और परिक्रमा पृथ्वी-परिक्रमा के समान है । इस युक्ति से गणेश जी का विवाह हो गया और उन्हें शृङ्खि, शृङ्खि-यह दोनों विश्वरूप प्रजापति की दो सुन्दरी कन्याएँ—पत्नी रूप में प्राप्त हुईं ।

कहने का तात्पर्य यह है कि जो सज्जन ज्योतिष शास्त्र की वृह-त्-परिक्रमा में अक्षम हैं, वह गणेश जी के उपर्युक्त उदाहरण को लेकर "अक विद्या" का अभ्यास करे तो थोड़े परिश्रम से—केवल अंगरेजी की जन्म तारीख, नाम, किंवा प्रश्न से भविष्य का बहुत कृद्ध शुभाशुभ जान सकते हैं । अंगरेजी में Numerology की अनेक पुस्तकें हैं जिन्हें हिन्दी में अंक-विद्या (ज्योतिष) की कोई पुस्तक मेरे देखने में नहीं आई । अनेक ग्रन्थों का अध्ययन तथा अनुशीलन कर यह पुस्तक पाठकों के सम्मुख रखी जा रही है ।

"शरण करवाणि कामदं ते चरणं वाणि चराचरोपजोद्यम् ।

करणामसूरंः कटाक्षपातंः कुरुमामम्ब्र कृतार्थसार्थवाहम् ॥

विज्ञप्ति दशमी २०१४
६३ दरियानगंग, दिल्ली }
टेलीफोन नं०-२३७२८ }
गोपेशकुमार श्रीभा

पिनी

पहला प्रकरण

अंक-विद्या रहस्य—पृथ्वी के तत्वों की विभिन्नता—मूलतत्व 'शब्द'—शब्द और 'दहू' की एकता—संख्या का महत्व और शक्ति—संख्या और क्रिया का घनिष्ठ सम्बन्ध—१०८ संख्या का महत्व—५४ का महत्व—ग्रन्थ संख्याओं की विविध क्रियाओं में उपयोगिता—नाम और संख्या का सम्बन्ध—अनेक नामों में से मुख्य नाम का निर्णय—'मरपतिजयचर्चर्पा' का मत—नाम, संख्या तथा जन्म-तारीख का सम्बन्ध—गीता में १८ अध्याय ही क्यों?—१८ पुराण—महाभारत में १८ पर्व—रामायण का ६ दिन में पारायण—भगवत का ७ दिन में—गायत्री में २४ अक्षर—देवताओं तथा तिथियों की संख्या का रहस्य।

८-१६

दूसरा प्रकरण

यथा अंक-विद्या में कुछ सत्यता है—दो बादशाहों का ५३६ वर्ष के बाद एक-सी संख्या की तारीख में जन्म—ठीक ५३६ वर्ष के बाद विलकुल एक सी घटनाओं को पुनरावृत्ति—विष्टर ह्यूमो का अंक-विद्या विषयक अनुभव—३२ वर्ष बाद विलकुल एक-सी घटना परम्परा—यह दियों के इतिहास में ४६० वर्ष का महत्व—ऐतिहासिक उदाहरण—'मिथ' तथा 'पेलेस्ट्राइन' के सम्बन्ध में 'कोरो' की भविष्यवाणी—१३ की संख्या की 'शुभता' तथा 'अशुभता' पर विचार—अमेरिका के इतिहास में '१३' की संख्या का महत्व—'कोरो' हारा दिया गया '१३' संख्या का अन्य उदाहरण—१४ संख्या से संबद्ध प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना-परम्परा

१७-३०

तीसरा प्रकरण

मूल अंक बनाने की विधि और उनका प्रभाव—१ से ६ तक के—मूल अंक—ग्रन्थ संलिपामों के मूल अंक बनाने की प्रक्रिया—जिनका जन्म १, १०, १६ या २८ तारीख को हुआ हो उनका शुभाशुभ विवेचन (शुभ मास, शुभ अंक, शुभ रंग)—जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष; जिनका जन्म २, ११, २० या २९ तारीख को हुआ हो उनका शुभाशुभ विवेचन—जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष—शुभ अंक, शुभ मास, शुभ रंग; जिनका जन्म ३, १२ या २१ तारीख को हुआ हो उनका शुभाशुभ विवेचन—शुभ तारीख, महत्वपूर्ण वर्ष, शुभ रंग—जिनका जन्म ४, १३, २२ या ३१ तारीख को हुआ हो उनका शुभाशुभ विवेचन—प्रहृति, स्वभाव, शुभ तारीख—जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष, शुभ रंग आदि; जिनकी जन्म की तारीख ५, १४ या २३ ही उनकी प्रहृति, गुण स्वभाव—शुभ वर्ष, शुभ रंग, महत्वपूर्ण वर्ष आदि; जिनकी जन्म सारीख ६, १५ या २४ ही उनकी प्रहृति और स्वभिरधि, शुभ वर्ष, शुभ रंग, जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष; जिनकी जन्म तारीख ७, १६ या २५ ही उनकी प्रहृति, गुण, स्वभाव, शुभाशुभ विवेचन, शुभ मास, शुभ रंग आदि; जिनकी जन्म तारीख ८, १७ या २६ ही उनकी प्रहृति तथा स्वभाव—शुभाशुभ विवेचन—शुभ वर्ष और अंक—शुभ रंग; जिनकी जन्म तारीख ९, १८ या २७ ही उनका शुभाशुभ विवेचन—शुभ मास, रंग, जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ।

३१-

चौथा प्रकरण

मंदुष्ट अंक—जन्म तारीख, जन्म मास तथा जन्म का हिस्सा गंद्याद अंक—जन्म तारीख, जन्म मास तथा जन्म का हिस्सा जीड्युक्टर उम एप्पल वर एक्सांड्रा—३० गुलालटेट अंक वर मन—भार्डोक '०' का उदाररूप—भार्डोक '५' का उदाररूप—भार्डोक '८' का उदाररूप—विभिन्न 'भार्डोक' में गंदुष्ट अंक इनमें वारे वर—हिंग भार्डोक वारे ही शोकना

‘इतिहा’ सन् भव्या जावेगा—भाग्यांक से सम्बन्धित शुभ वार, शुभ मास तथा शुभ सारीख का घाट—झंक-विद्या और यंत्र—सूर्य भादि नवप्रहों के यंत्र ।

५६-७१

पांचवां प्रकरण

‘नाम’ और झंक-विद्या का सम्बन्ध—यहूदियों में नाम का महत्व—भारत में जन्म नक्षत्र के अनुसार नाम का महत्व—प्रतिष्ठा नाम का महत्व—अंग्रेजी के प्रत्येक ‘शहर’ को ‘संल्या’ में परिवर्तन करने की प्रक्रिया—उदाहरण—प्रथोजन—‘१०’ से ‘७०’ तक की प्रत्येक संल्या का गुण और प्रभाव—कोई नाम शुभ है या नहीं यह जानने का प्रकार—नाम और जन्म-नक्षत्र का सामग्रजस्त—‘नाम’ के अनुसार कौन-कौन-सी सारीखें उपयुक्त होंगी—किस ‘शहर’ या ‘मोहल्ले’ में भाग्योन्नति होगी

७२-८२

छठा प्रकरण

मास-वार तथा धंटे का महत्व—ईंग्लैण्ड के राज-पराने के उदाहरण—भारतीय मत—मास की शुभाशुभता—वार की शुभा-शुभता—दिन का कौन-सा ‘धंटा’ अनुकूल रहेगा—‘होरा’ विचार—होरा चक्र—किस ‘राशि’ वाले को, किस ग्रह की होरा अनुकूल होगी—इस सम्बन्ध में नवीन मत—नवीन मत का खंडन—भारतीय मत की प्रधानता—अमृत धटी का विचार ।

८३-१०५

सातवां प्रकरण

जन्म-मास के अनुसार फलादेश—‘सौर’ मास की महत्ता—पाइचात्य मत—भारतीय मत—१३ अप्रैल तथा १२ मई के बीच में उत्पन्न मनुष्यों पर उच्चस्थ सूर्य का शुभ फल—१३ मई तथा १४ जून के बीच जन्म लेनेवालों के लिये भविष्य फल—१५ जून और १५ जुलाई के बीच में उत्पन्न ध्यक्तियों का गुण, स्वभाव भविष्य आदि—१६ जुलाई से १६ अगस्त तक पंच वाले होने वालों के जीवन की रूपरेखा तथा भविष्य फल—१७ अगस्त से १६ सितम्बर के बीच

जन्म लेने वालों की गुण, प्रकृति आदि पर स्वराशिष्ठ सूर्य का प्रभाव तथा उनका भविष्य—१७ शितम्बर से १६ अक्टूबर तक जन्म लेने वालों का शुभाशुभ विवेचन एवं फलादेश—१७ अक्टूबर से १३ नवम्बर तक जन्म लेने वालों पर नीचस्थ सूर्य का प्रभाव—१४ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक जन्म लेने वालों पर वृश्चिक के सूर्य का प्रभाव तथा फलादेश—१५ दिसम्बर से १३ जनवरी तक उत्तप्त मनुष्यों का शुभाशुभ विवेचन एवं फल—१४ जनवरी से १३ फरवरी तक जन्म लेने वालों की प्रकृति, गुण स्वभाव तथा भविष्य फलादेश—१४ फरवरी से १३ मार्च तक जन्म लेने वाले व्यक्तियों पर 'कुभृत्य' सूर्य का प्रभाव—शुभाशुभ विवेचन—१४ मार्च से १२ अप्रैल तक जन्म लेने वाले व्यक्तियों का भविष्य फल—वराह मिहिर, सारावली 'होरासार' आदि संस्कृत ग्रंथों का मत । १०६ से १४१

आठवाँ प्रकरण

हस्तरेखा विज्ञान तथा धैर्य ज्योतिष का सम्बन्ध—हस्तरेखा से घटनाओं का ज्ञान—जीवन रेखा, भाग्य रेखा आदि पर वर्ष निश्चित करने में ध्रुक्-विद्या की सहायता—हस्तरेखा सम्बन्धी दो पूरे पृष्ठ के चित्र—उदाहरण—जन्म-कुड़ती तथा धैर्य ज्योतिष का सामर्जनत्व—दशा, अन्तर्दशा फल कथन में ध्रुक्-विद्या की उपयोगिता—गोवर फल में ध्रुक्-विद्या द्वारा फलादेश में साहाय्य—वर्षे फल में ध्रुक्-विद्या की उपयोगिता—पंतोंकी कुड़ती—केतु कुड़ती—गुरु—कुड़ती—ध्रुवी ज्योतिष में ध्रुक्-विद्या का प्रयोग । १४२—१६४

नवाँ प्रकरण

धैर्यों से प्रश्न विचार—भारतीय मत—प्रश्न के प्रत्येक अक्षर को संख्या में परिवर्तित करने का प्रकार—उदाहरण—ताम्बू हाति विषयक प्रश्न—मुण्ड-दुःख सम्बन्धी प्रश्न—तेजी मन्दी विषयक प्रश्न—धैर्यों के उत्तर का प्रकार—पाइजात्य मत—धैर्यों से मूक प्रश्न ज्ञान—इसे ८४ तक के धैर्यों से मूक प्रश्न यताने की ज्योतिष पढ़ति—नाम के धैर्यों से जय-न्यराज्य ज्ञान—'समरसार' में वर्णित जय-पराजय धर—उदाहरण—मुष्टि पश्चों के धैर्य । १६५—१८७

पहला प्रकरण अंक-विद्या रहस्य

संसार में हम जो भिन्न-भिन्न वस्तुएँ देखते हैं, उनके अनेक रूप हैं। विविध रंगों के मिलाने से नये रंग बन जाते हैं। लाल और पीला मिलाने से नारंगी का रंग बन जाता है। पीला और नीला मिलाने से हरा। इस प्रकार संकड़ों, हजारों रंग बन सकते हैं, परन्तु इनके मूल में वही सात रंग हैं जो इन्द्र धनुष में दिखाई देते हैं। इन सात रंगों के मूल में भी एक ही रंग रह जाता है जो सफेद, किंवा रंगरहित शुद्ध प्रकाश है। सूर्य की प्रकाश रेखा 'को 'प्रिज्म' में पार करने से सात रंग स्पष्ट दिखाई देते हैं। वैसे, सूर्य की किरण शुद्ध उज्ज्वल विनारंग के प्रतीत होती है।

इसी प्रकार संसार को जो विविध वस्तुएँ हमें दिखाई देती हैं उनमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश तत्त्व हैं। उनमें तत्त्वों का सम्मिश्रण भिन्न-भिन्न अनुपात और भिन्न-भिन्न प्रकार से है। किसी में कोई तत्त्व कम है, किसी में कोई अधिक। परन्तु यह समस्त जगत् केवल पांच तत्त्वों का प्रयंच है। यह पांच तत्त्व भी केवल आकाश से उत्पन्न हुए हैं। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी। पृथ्वी का गुण 'गन्ध', जल का

'रस', अग्नि का 'तेज' (रूप), वायु का 'स्पर्श' और आकाश का गुण 'शब्द' है। जैसे संसार के सभी पदार्थों के मूल में आकाश तत्व है उसी प्रकार, हम यह कह सकते हैं कि संसार के सभी पदार्थों का मूल गुण 'शब्द' है। इसी कारण शब्द को 'शब्द-ब्रह्म'—प्रथत् परम प्रभु परमेश्वर का प्रतीक माना गया है।

परिणामतः तो सब शब्द ब्रह्म के रूप ही है किन्तु भिन्न-भिन्न शब्दों का गुण और प्रभाव भी भिन्न-भिन्न है और प्रत्येक शब्द को अंक या संख्या में परिवर्तित कर उसकी माप की जा सकती है। कोई शब्द (या शब्दावली) ७००० बार आवृत्ति करने पर पूर्णता को प्राप्त होता है तो किसी का १७००० बार आवृत्ति करने पर परिपाक होता है। 'संख्या' और 'शब्द' के सम्बन्ध से हमारे ऋषि-महर्षि पूर्ण परिचित थे, इसी कारण सूर्य के मंत्र का जप ७०००, चन्द्रमा का ११०००, मंगल का १००००, बुध का ६०००, वृहस्पति का १६०००, शुक्र का १६०००, शनि का २३०००, राहु का १८००० और केतु का १७००० जप निर्धारित किया है। किसी देवता के मंत्र में २२ अक्षर^१ होते हैं तो किसी के मंत्र में ३६। 'शब्द' और 'संख्या' का घनिष्ठ वैज्ञानिक सम्बन्ध है।

इसी प्रकार संख्या और किया का घनिष्ठ सम्बन्ध है। शून्य संख्या (०), निक्षिप्य, निराकार, निर्विकार 'ब्रह्म' का द्योतक है और '१' पूर्ण ब्रह्म की उस स्थिति का द्योतक है, जब वह मद्देत रूप से रहता है। कहने का तात्पर्य यह कि 'शब्द' और 'संख्या (अंक) में सम्बन्ध होने के कारण—समस्त पदार्थों के मूल में जैसे 'शब्द' है—

१. देखिये 'मंत्र भ्रूषिपि' तृतीय तथा एकादशतरंग; पुराणार्थानि तृतीय भाग

वैसे ही 'शंक' भी । शब्द के मूल—आकाश को—'धून्य' कहते हैं और शंक के मूल को भी 'धून्य' । 'धून्य' से ही शब्द और शंक का प्रादुर्भाव होता है । यदि 'शंक' (संख्या) का किसी वस्तु या क्रिया से सम्बन्ध नहीं होता तो हमारे शास्त्र १०८ मणियों की माला बनाने का विधान नहीं करते । प्रत्येक संख्या का एक महत्व है । २५ मणियों की माला पर जप करने से मोक्ष, ३० की माला से धन सिद्धि, २७ की माला से सर्वार्थ सिद्धि, ५४ से सर्वकामावाप्ति और १०८ से सर्व प्रकार की सिद्धियाँ हो सकती हैं । किन्तु अभिचार कर्म में १५ मणियों की माला प्रशस्त है ।^१

१०८ की संख्या का क्या रहस्य है ? सूर्य राशिभ्रमण में जब एक पूरा चक्र लगा लेता है तो एक बृत्त पूरा करता है । एक बृत्त में ३६० अंश होते हैं । इस प्रकार सूर्य की एक प्रदक्षिणा के अंशों की यदि कला बनाई जावे तो $360 \times 60 = 21600$ कला हुई । सूर्य छः मास उत्तर अयन में रहता है और छः मास दक्षिण अयन में । इस हिसाब से २१६०० को दो भागों में विभक्त करने से १०८०० संख्या प्राप्त हुई ।

अब दूसरे प्रकार से विचार कीजिये । प्रत्येक दिन में सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक 'काल' का परिमाण ६० घड़ी माना है । १ घड़ी के ६० पल और १ पल के ६० विपल । इस प्रकार एक अहोरात्र में $60 \times 60 \times 60 = 216000$ विपल हुए । इसके आधे दिन में १०८०० और इतने ही रात्रि में ।

जैसे आजकल की नवीन वैज्ञानिक प्रणाली के अनुसार रूपये,

१. वैज्ञानिक शारदातितक का २३वाँ पट्ट—राघवभट्ट कृत पदार्थादर्श व्याख्या ।

पैसे, तोल, माप, यर्मामीटर आदि एक ही दशमलव के आधार पर बनाये जा रहे हैं, वैसे ही हमारे प्राचीन ऋषियों ने 'काल' और 'संख्या' का समन्वय किया था। इसी के समीकरण और सामञ्जस्य स्वरूप १०८००० की संख्या नपलव्ध हुई और दशमलव की प्रणाली के अनुसार विन्दु छोड़ देने से १०८ की संख्या प्राप्त हुई। हमारे प्राचीन ऋषियों ने 'शब्द', काल, संख्या आदि सभी का इस प्रकार सामञ्जस्य कर दिया था कि प्रत्येक नामका—नाम के अक्षरों का संख्या पिंड, बनाने से उसके सब गुण उस संख्या से प्रकट हो जाते थे। इसी आधार पर जय-पराजय चक्र आगे ६ वें प्रकरण में दिये गये हैं। इसी अंक-विद्या, भजनी—कौन किसका कर्जदार है अंक-विद्या, मंत्र-विद्या, आदि से सम्बन्ध रखता है, क्योंकि देना-पावना संख्या में ही होता है।^१

नाम की 'संख्या' में परिवर्तित करना—एक बहुत गंभीर विद्या है। आजकल के वैज्ञानिक प्रत्येक भोज्य पदार्थ को "कैलोरी" में परिवर्तित कर यह बताते हैं कि किस भोजन में कितना शक्ति-वर्धक साधन है। इसी प्रकार किसी नाम को संख्या में परिवर्तित करके यह बताया जा सकता है कि कौन से नाम का व्यक्ति, किससे अधिक शक्तिशाली होगा। प्रत्येक व्यक्ति का नाम उस व्यक्ति का प्रतीक है। धिद्वानों के मत से मनुष्य जब सोया हुमा रहता है—तब भी उसके चेतन्य की एक कला जगी हुई रहती है। और उसे सावधान या सतकं किये रहती है। यदि २० मनुष्य एक ही स्थान पर सोये हुए हों तो प्रायः जिसका नाम लेकर आवाज दी

१. वैज्ञानिक "तंत्रसार" तथा "चंद्री" अंक ४-वर्ष १२-पृष्ठ ११४

जाती है—वही जग जाता है। 'नरपति जय-चर्चा'^१ नामक ग्रंथ में लिखा है कि मनुष्य के उसी नाम का विचार करना चाहिये जिस से उसे, आवाज़ दी जावे तो वह सोता हुआ जग जावे। 'नाम' और नाम की प्रतीक 'संख्या' अनादिकाल से, फलादेश में उपयुक्त होते रहे हैं।

जिस प्रकार रेडियो की सूई जिस 'संख्या' पर स्थिर कर दीजिये उसी 'संख्या' पर प्रदाहित शब्द रेडियो पर सुनाई देने लगते हैं— उसी प्रकार 'संख्या' विशेष और उस 'संख्या' के प्रतीक 'वस्तु' या व्यक्ति में आकर्षण होता है।

अमेरिका में नवीन अनुसंधान द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि बहुत-से प्रकार के कीड़े, अपने सजातीय कीड़ों को सन्देश या संवाद में राकते हैं—इसका कारण यह है कि जिस प्रकार एक खास संख्या पर सूई स्थिर करने से रेडियो में आवाज आने लगती हैं उसी प्रकार यह कीड़े भी जो संवाद प्रेपित करते हैं उनको उनके सजातीय कीड़े ग्रहण कर सकते हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार के कीड़ों को एक बड़े बाग के अलग-अलग कोनों पर छोड़ा गया है—वह एक ही केन्द्र स्थल पर जाकर मिल जाते हैं। एक खास प्रकार की मक्खी के भुंड को दो स्थानों पर—परस्पर एक दूसरे से कई मील दूर—छोड़ कर देखा गया है कि वे एक ही स्थान पर आकर मिल जाती हैं।^२

या जुगनू को लीजिये। मादा जुगनू के पर नहीं होते, नर के होते हैं। दोनों के शरीर से प्रकाश निकलता है किन्तु मादा जुगनू के शरीर से अधिक तेज रोशनी निकलती है और इस चमके से

१. नरपति चर्चा प्रध्याय २ पृ० १५

जन्म-पत्रिका पिथान पृ० २२५

२. "Number Please" by Dr. United Cross पृ० १५

आकृष्ट होकर नर-जुगनू उसके पास आता है। भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में परस्पर क्यों आकर्षण या धूरणा का प्रादुर्भाव होता है—यह स्थूल दृष्टि से नहीं जाना जा सकता। किन्तु सब के मूल में वैज्ञानिक रहस्य है।

जंगल में दाना ढाल दीजिये। चिड़िया और कदूतर आजावेंगे। चीनी फैला दीजिये; चीटियाँ इकट्ठी हो जावेंगी। मरा हुआ जानवर ढाल दीजिये, गृद्ध और चील आकाश को आच्छादित कर लेंगी। और कहीं रात्रि में बकरा, या पाड़ा बांध दीजिये तो शेर, शिकार के लिये आजावेगा। चीनी पर शेर नहीं आता। बैंधे हुए बकरे की खुशबू से चिड़ियाँ नहीं आतीं। इसी प्रकार '१' घोतक की संख्या पा वस्तु की ओर उसके सहधर्मी आकृष्ट होते हैं। '६' घोतक संख्या पा वस्तु या व्यक्ति की ओर '६' के सहधर्मी आकृष्ट होंगे; अन्य वर्ग के नहीं। जिन व्यक्तियों या वस्तुओं में साधर्म्य होता है उनमें परस्पर आकर्षण भी होता है, यह सामान्य नियम है। एक बच्चा यह नहीं समझता कि भिन्न-भिन्न वृत्तियों का भिन्न-भिन्न वस्तुओं और व्यक्तियों से क्या सम्बन्ध है, परन्तु जानने वाले जानते ही हैं कि आम गर्मी में पकते हैं और संतरे जाड़े में।

कम उम्र का बच्चा, चिड़िया, कमेड़ी, कदूतर सब को 'चिड़िया' कहता है; परन्तु चिड़िया चिड़े के साथ ही जाकर रहेंगी, कदूतर कदूतरी के साथ ही। इसी प्रकार भंक-ज्योतिष से अनभिज्ञ सब घंकों को एक-सा समझते हैं; परन्तु इस विद्या को जानने वाले यह जानते हैं कि '१' मूल-भंक वाले व्यक्ति को '१' मूल-भंक धुम जावेगा और उसकी विशेष मिश्रता भी '१' मूल भंक वाले व्यक्ति से होगी तथा '६' मूल भंक वाले व्यक्ति को '६'

मूल-अंक की संख्या शुभ जावेगी और उसकी विशेष मित्रता भी '६' मूल-अंक वाले व्यक्ति से होगी ।

नाम और 'संख्या'—नाम और 'जन्म-तारीख' या यह कहिये कि व्यक्ति, वस्तु और संख्या में जो सामज्जस्य है उसी कारण किसी व्यक्ति के जीवन में या यों कहिये किसी राष्ट्र के जीवन में किसी 'संख्या' विशेष का महत्व हो जाता है । इसको हम केवल 'कल्यना' या 'संयोग' कह कर नहीं टाल सकते । आगे के प्रकरणों में इसके अनेक उदाहरण दिये गये हैं ।

मकड़ी जाला बुनती है—युनते समय कोई क्रम दिखाई नहीं देता, परन्तु बनने पर क्रम नज़र आता है । मधु मक्खियाँ घृता बनाती हैं; बाहर से कोई क्रम नज़र नहीं आता परन्तु भीतर कितना अधिक और सूझम क्रम रहता है, यह केवल इस विषय की पुस्तकों को पढ़ने से ही मनुष्य जान सकता है ।

कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे एक बच्चे की हृष्टि में— डाकिये के हाथ की सब चिट्ठियाँ एक सी भालूम होती हैं, परन्तु डाकिया उन्हें मकान के नम्बर और नाम के क्रम से बाँट देता है, उसी प्रकार हमारा जीवन—प्रत्येक का भिन्न-भिन्न 'अंकों' के क्रम से चलता है और जब वह 'संख्या'—उस 'संख्या' का द्योतक वर्ष या दिन आता है, तो हमारे जीवन में महत्व पूर्ण घटना होती है । इस अंक-विद्या का पूरी तरह उद्घाटन करना संभव नहीं । भगवत् गीता में १८ अध्याय ही क्यों हैं? महाभारत में १८ पर्व ही क्यों? १८ पुराणों की संख्या का वैज्ञानिक आधार वर्णा है? इस '१८' की योग संख्या $1+8=9$ है । यह क्यों? हमारे ऋषि मुनि दिव्य ज्ञान और अहतम्भरा प्रज्ञा के कारण जो पद-चिह्न छोड़ गये हैं, हम तो केवल

उनका अनुसरण मात्र ही कर सकते हैं। श्रीमद् भागवत में १२ स्कन्ध ही क्यों हैं? दशम स्कन्ध इतना बड़ा होगया कि उसे 'पूर्वार्ध' और 'उत्तरार्ध'—इन दो खंडों में विभाजित करना पड़ा। ऐसा न करके १३ स्कन्ध ही क्यों न कर दिये? रामायण का नवाह (६ दिन में पारायण) तथा भागवत का सप्ताह (७ दिन में पारायण) क्यों? गायत्री में २४ अक्षर ही क्यों हैं? विवाह के समय 'सप्तपदी' ही क्यों होती है। गणेश की चतुर्थी, दुर्गा की अष्टमी, सूर्य की सप्तमी, विष्णु की एकादशी तथा रुद्र की प्रदोष-व्यापिनी त्रयोदशी ही क्यों?—आदि यनेक ऐसे अंक-विद्या सम्बंधी वैज्ञानिक विषय हैं जिनका विवेचन करना, इस छोटी सी पुस्तक में संभव नहीं। अंक-विद्या का रहस्य इतना गंभीर है कि इसमें जितना अधिक नीचे उतरेंगे उतने ही यह मूल्य रत्न हाथ लगेंगे। यदि आप इसके नियमों का अध्ययन कर, अपने स्वर्य की जीवन की घटनाओं से यह नतीजा निकाल सकें कि कौन से दिन, और तारीख आप को 'शुभ' या 'अशुभ' जाती है तो केवल इस ज्ञान से आप अपने को बहुत लाभ पहुँचा सकते हैं। हाँ, यह कह देना आवश्यक है कि जिस प्रकार एक साधारण नियम होता है और उसका अपवाद होता है; उसी प्रकार अंक-विद्या के जो साधारण नियम बताये गये हैं उनके अपवाद भी होते हैं। कभी-कभी उस अंक वाले दिन या वर्ष में, वह 'अंक' तो शुभ फल दिखाने की चेष्टा करता है किन्तु किसी अन्य ग्रह के प्रभाव के कारण फल ठीक नहीं बैठता। इससे अनुत्साहित नहीं होना चाहिये। गंभीर अध्ययन तथा धैर्यं पूर्वक लभ्वे समय तक फल मिलाने से—कौनसा 'अंक' शुभ है कौन सा अशुभ—यह अनुभवमिद्द हो जाता है।

दूसरा प्रकरण

क्या अंक-विद्या में कुछ सत्यता है ?

बहुत से लोग इस बात में विश्वास नहीं करते कि कुछ समय के बाद एक-सी घटना घटित होती है। परन्तु बहुत बार ऐसा देखा गया है कि आज जो घटना घटित हुई ठीक वैसी ही कुछ वर्ष पूर्व हुई थी। बहुत से लोग यह तर्क करते हैं कि ऐसा केवल संयोगवश हो गया। परन्तु बहुत बार जब उतने ही वर्ष के फासले पर बारंबार एक-सी घटना घटित हो तो उसे हम केवल 'संयोगवश' कह कर नहीं टाल सकते। नीचे इसी प्रकार के एक घटनाचक्र की कुछ प्रधान-प्रधान घटनाओं का विवरण दिया जाता है। इसको देखने से विदित होगा कि एक या दो नहीं परन्तु एक के बाद दूसरी—दर्साएँ ५३६ वर्ष के अन्तर पर घटित हुईं।

(क) सेंट लूई का जन्म (२३ अप्रैल $2+3=5$) सन् १२१५ ५३६

लूई XVI का जन्म (२३ अगस्त $2+4+3=5$) सन् १७५४

(ख) सेंट लूई की वहिन 'ईसा बेला' का जन्म सन् १२२५ ५३६

लूई XVI की वहिन 'ईसा बेला' का जन्म सन् १७६४

(ग) सेंट लूई के पिता की मृत्यु सन् १२२६ ५३६

लूई XVI के पिता 'डाफ्फिन' की मृत्यु सन् १७६५

| | | |
|--------------------------------------------------------------------------------------|----------|-----|
| (घ) सेंट लूई की बादशाहत का प्रारंभिक काल | सन् १२२६ | ५३६ |
| लूई XVI की बादशाहत का प्रारंभिक काल | सन् १७६५ | |
| (ङ) सेंट लूई का विवाह | सन् १२३१ | ५३६ |
| लूई XVI का विवाह | सन् १७७० | |
| (च) सेंट लूई को वयस्काधिकार प्राप्त हुए | सन् १२३५ | ५३६ |
| लूई XVI गढ़ी नशीन हुए | सन् १७७४ | |
| (छ) विजेता सेंट लूई और इंग्लैण्ड के बादशाह हेनरी III में परस्पर युद्ध के बाद सन्धि | सन् १२४३ | ५३६ |
| विजेता लूई और इंग्लैण्ड के बादशाह जार्ज III में सन्धि | सन् १७८२ | |
| (ज) एक पूर्व देशीय राजकुमार ईसाई बनने के लिये सेंट लूई के पास आया | सन् १२४६ | ५३६ |
| एक पूर्व देशीय राजकुमार ने उपर्युक्त कार्य के लिये अपना राजदूत लूई XVI के पास भेजा । | सन् १७८८ | |
| (झ) सेंट लूई की हार । उसके साथियों का उसे छोड़ देना और उसका बन्दी होना | सन् १२५० | ५३६ |
| लूई XVI का उसके दल ने परित्याग कर | सन् १७८६ | |

दिया; वह स्वयं भागा किन्तु गिरप्रतार कर लिया गया ।

| | |
|--------------------------------------------|------------|
| (ज) नवीन धर्मवादियों द्वारा क्रान्ति | सन् १२५० |
| | <u>५३६</u> |
| ‘जेकव’ धर्मवादियों द्वारा पार्मिक क्रान्ति | सन् १७६६ |
| (ट) सेंट लूई की माता (राजमाता) का देहान्त | सन् १२५३ |
| | <u>५३६</u> |
| फांस से ‘सफेद लिली’ का अंत | सन् १७६२ |
| (ठ) सेंट लूई ने ‘जेकोवियन’ (मत-विवरितन) | सन् १२५४ |
| कर विश्राम चाहा | <u>५३६</u> |

‘जेकोवियन’ सोगों द्वारा लूई XVI का अंत सन् १७६३ उपर्युक्त विवरण अंग्रेजी की पुस्तक से लिया गया है और यह स्पष्टतया प्रतिपादित करता है कि फांस के दो बादशाहों के जीवन में—५३६ वर्ष के अन्तर पर विलकुल एक सी घटनाएँ घटित हुईं ।

सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखक विक्टर ह्यूगो ने इस ओर विशेष ध्यान आकर्षित किया है कि कई बार एक सा घटनाक्रम कुछ वर्षों के बाद दोहराया जाता है और अपने इस कथन की पुष्टि में उसने निम्नलिखित दृत लिखा है :—

(क) ड्यूक दी बेरी चाल्स दशम का पुत्र था । इसने एक विदेश की राजकुमारी से विवाह किया और १३ फरवरी सन्

१८२० को ड्यूक का कत्ल हुआ (इसी फरवरी महीने में लूई फिलिप का पतन हुआ था)। ड्यूक दी वेरी ने यह चाहा था कि वह सिहासन छोड़ दे और उसका पौत्र, जिसकी १० वर्ष की अवस्था थी, बादशाह मान लिया जाय। परन्तु उसने यह निर्णय इतनी देर से किया कि वह कामयाब न हो सका। सन् १८३० की रक्त-क्रान्ति ३ दिन तक रही। इसका पिता चाल्स दशम ७४ वर्ष की अवस्था में सिहासन छ्युत हुआ—इंगलैण्ड चला गया और वहाँ देश निकाले की हालत में मारा गया।

(ख) ड्यूक दी और लियन्स, लूई फिलिप का लड़का था। उसने एक विदेश की राजकुमारी से विवाह किया और १३ फरवरी १८५२ को दुर्घटना से मरा। इसी फरवरी महीने में लूई फिलिप का पतन हुआ था। ड्यूक ऑफ ऑरलियन्स ने चाहा कि वह सिहासन छोड़ दे और उसका पौत्र, जिसकी आयु १० वर्ष की थी, बादशाह मान लिया जाय। परन्तु उसने यह निर्णय इतनी देर से किया कि वह कामयाब न हो सका। सन् १८४८ की रक्त क्रान्ति ३ दिन तक रही। इसके पिता लूई फिलिप ७४ वर्ष की अवस्था में सिहासन छ्युत हुआ—इंगलैण्ड चला गया और वहाँ देश निकाले की हालत में मारा गया।

ऊपर के विवरण से स्पष्ट है कि ३२ वर्ष के अन्तर पर विल्कुल एक-सा घटना कम हुआ। यहूदियों के प्रारम्भिक इतिहास का आधार '७' की संख्या मानी गई है। उनके धार्मिक इतिहास में ७, तथा 7×7 (=४९) तथा, 7×70 (=४९०) इन संख्याओं का विदोष महत्व है। 'वेबीनोन' में इनकी परतंत्र स्थिति ७० वर्ष रहेगी—यह घटना से बहुत पूर्व ही भविष्यवाणी कर दी गई थी।

और 'जेहसेलम' का ध्वंस तथा उनके वहाँ पुनः जमने में $7 \times 70 = 460$ वर्ष लगेंगे इसकी भविष्यवाणी भी डेनियल ने कर दी थी । हेब्रू जाति के जन्म से 'कनान देश' प्रवेश में उन्हें 460 वर्ष लगे । जोशुआ ने जब 'कनान देश' पर विजय की, उसके 460 वर्ष बाद 'सॉल' के अधीन प्रथम यहूदी राज्य स्थापित हुआ । 'सॉल' इनका प्रथम बादशाह था । इसके समय से ठीक 460 वर्ष बाद, नेबुचद्रेजार ने जेहसेलम पर विजय प्राप्त की । और इस तिथि के ठीक 460 वर्ष बाद रोमवासियों ने जेहसेलम को नष्ट किया । '460' वर्ष के 'काल चक्र' के आधार पर—यह घटना कव घटित होंगी । इनकी भविष्यवाणी बहुत पूर्व की जा चुकी थी ।

सन् ७० ईस्वी में टिट्स ने इनका मन्दिर नष्ट किया । ७० वर्ष बाद रोमवासियों के विरुद्ध इनका द्वितीय विप्लव हुआ । यहूदी जाति छिन्न-भिन्न हो गई । $70 \times 7 = 460$ वर्ष तक यह लोग मारे मारे फिरते रहे । दूसरे 460 वर्ष का 'काल चक्र' भी इनके लिये प्रतिकूल रहा और इन पर जगह जगह अत्याचार ही होता रहा । ६८० वर्ष ($460 + 460 = 680$) व्यतीत हो जाने पर मुस्लिम सत्ता और शक्ति हासोन्मुख हुई भीर यहूदियों का प्रभुत्व मध्य एशिया में बढ़ने लगा । इसके 460 वर्ष बाद 'अमेरिका' का पता लगा । अमेरिका का पता सन् १४६२ में लगा और इस तारीख से अग्रिम 460 वर्ष में अर्थात् सन् १९८० तक यहूदी लोग पुनः अपना राज्य स्थापित कर पुनः अत्यन्त शक्तिशाली हो जावेंगे यह भविष्यवाणी 'कीरो' ने की थी । 'कीरो' की भविष्यवाणी के आधार पर पेलिस्टाइन (फिलिस्तीन) तथा मिथ देश दोनों में आर्थिक उन्नति और औद्योगिक तथा व्यावसायिक समृद्धि—यहूदियों तथा

उनके सहयोगियों द्वारा होगी। 'कीरो' ने यह भी भविष्यवाणी की है कि जर्मनी और इंग्लैण्ड एक दूसरे के मित्र हो जावेंगे और फिलिस्तीन तथा मिश्र में बहुत अधिक तादाद में अपनी अपनी फौजें भेजेंगे। रूस, चीनी तथा तारतारी फौजों को काम में लावेगा और सब मुस्लिम जातियाँ इस संघर्ष में सम्मिलित होंगी। अस्तु^१

यहाँ हमारा मुख्य विषय है 'काल चक्र'। जिस प्रकार सूर्योदय के बाद वारह घण्टे दिन रहता है और फिर वारह घण्टे रात्रि; इसके बाद पुनः दिन और रात्रि। उसी प्रकार देशों तथा जातियों के विकास अभ्युदय, उत्थान और पतन में भी कभी कभी हम 'काल चक्र' का पता लगा सकते हैं और उसके आधार पर भविष्य में होने वाली घटनाओं का पता लगा सकते हैं—प्रस्तुत पुस्तक का प्रधान विषय यही है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में—इस क्रम का—"अंकों" या संख्या द्वारा पता कैसे लगाया जावे।

कभी-कभी यह देखा गया है कि कोई संख्याविशेष या अंक-विशेष, किसी व्यक्ति या राष्ट्र-विशेष के जीवन से इतना सम्बद्ध रहता है कि उसे केवल 'संयोग' कह कर नहीं टाल सकते। बहुत से लोग १३ को अशुभ अंक मानते हैं। इसका कारण यह है कि इसी भसीह की मृत्यु के पहले जो खाना हुआ उसमें १३ व्यक्ति थे। इसाइयों में यह बहम बहुत प्रचलित है। बहुत से होटल के मालिक अपने होटल के कमरों पर नं० ढालते समय १२ के बाद

१. विशेष विवरण के लिए देखिये Hebrew Astrology by Sepharial, पृष्ठ ६२-६३।

१. Cheiro's World Predictions Future of Jews foreshadowed १६१

१२ A फिर १४, १५—इस क्रम से आगे के कंमरों पर नम्बर डालते हैं। १३ का नम्बर इस कारण नहीं डालते कि बहुत से मेहमान १३ नं० के कमरे से घबराते हैं।

आगे के प्रकरण में (देखिये प्रकरण ३) बताया गया है कि अंक-विद्या में यदि कोई अंक ६ से अधिक हो तो उसके विविध अंकों को जोड़ कर जो अंक बने वह मूल-अंक कहलाता है। इस पद्धति के अनुसार अमेरिका का मूल-अंक $13 = 1 + 3 = 4$ प्रतीत होता है क्योंकि '१३' की संख्या का अमेरिका से घनिष्ठ सम्बन्ध है। '१३' के दोनों अंक '१' तथा '३' को जोड़ने से $1 + 3 = 4$ चार बनता है। ४ का सम्बन्ध आधुनिक वैज्ञानिकों ने 'हर्शल' ग्रह से माना है। 'हर्शल' का विजली, नवीन आविष्कारों तथा द्रुत प्रगति से विशेष सम्बन्ध है और अमेरिका इन बातों के लिए प्रसिद्ध है ही। यह भी आगे तीसरे प्रकरण में बतलाया गया है कि १ तथा ४ अंकों की '२' तथा '७' अंकों से भी सहानुभूति है।

(क) वाशिंगटन प्रथम अमेरिकन

| | |
|----------------------------------------------------------------------------------|--------------------------|
| प्रेसीडेन्ट का जन्म दिवस | २२ फरवरी ($2 + 2 = 4$) |
| (ख) स्वतन्त्रता का ऐलान | ४ जुलाई = ४ |
| (ग) जार्ज टूटीय (जिसके राज्य काल में अमेरिका से युद्ध हुआ) का जन्म दिन | ४ |
| (घ) कॉन्विन्यून्यूनेशन (अ) विविल मुद्रापूर्द की भवन भाजा पुस्तकालय | |
| (च) समतर क्लिक का पतन | |

| | | | |
|-------------------------------------------------------------------|----|---------|----|
| (छ) डोनाल्डसन किले का युद्ध | १३ | फरवरी | =४ |
| (ज) फोडरिक्सवर्ग का युद्ध | १३ | दिसम्बर | =४ |
| (झ) एडमिरल डेवी का मनीला खाड़ी में प्रवेश | १ | मई | =१ |
| (ञ) 'मनीला' पर विजय और कब्जा | १३ | अगस्त | =४ |
| (ट) प्रेसीडेंट बुडरो विल्सन का जन्म दिन | २८ | दिसम्बर | =१ |
| (ठ) प्रेसीडेंट विल्सन का फौस में आगमन | १३ | दिसम्बर | =४ |
| (ड) प्रथम महायुद्ध के समय जहाजी बैड़े की ग्राहनिक यात्रा | १३ | जून | =४ |
| (ढ) जनरल पार्शिंग का जन्म दिन | १३ | सितम्बर | =४ |
| (ण) सेंट मितेल का निर्णयात्मक युद्ध | १३ | सितम्बर | =४ |
| (त) 'स्वतन्त्रता' एलान करने वाले नेता जोसेफ जेरकरसन का जन्म | २ | अप्रैल | =२ |
| (थ) जोसेफ जेरकरसन को निर्वाचित तिथि | | जुलाई | =४ |
| (द) प्रेसीडेंट मेक्किनले का जन्म दिन | २६ | जनवरी | =२ |
| (त्रुट्ट) अमेरिका से महायुद्ध की घोषणा | २० | अप्रैल | =२ |

(न) प्रेसोडेन्ट-मोनरो (जिसके नाम से 'मोनरो-

सिद्धान्त' सुविस्त्यात है) का जन्म दिन २८ अप्रैल = १

(प) प्रेसोडेन्ट मोनरो की निधन तिथि ४ जुलाई = ४

'१३' की संख्या 'नवीनता' की प्रतीक है। अमेरिका 'नई दुनिया' नाम से ही नहीं—कार्य क्रम से भी नवीन प्रगति वाला है। इसका आदर्श वाक्य भी नवीनता का प्रतिपादक 'Novus Ordo Seclorum' है।^१

जॉर्ज वार्शिगटन का प्रारम्भिक सत्कार १३, तोपों की सलामी से किया गया। अमेरिका की जो राष्ट्रीय ध्वजा है उसमें १३ पत्तियाँ हैं, १३ धारण हैं, 'ईगल' के कपर १३ सितारे हैं और 'ईगल' के प्रत्येक ढंगे में १३ पंख हैं। जब अमेरिका सर्वप्रथम राष्ट्र हुआ, तब उसमें १३ राज्य थे और १३ प्रतिनिधियों ने स्वतन्त्रता-घोषणा के राज्य-पत्र पर हस्ताक्षर किये थे। अमेरिका भांडे में १३ ही धारियाँ हैं।

'कीरो' विश्व-विद्यात ज्योतिषी, हस्तरेखा विशारद तथा अंक-विद्या का पारंगत विद्वान् था। उसने श्री एच. सी. शेर्मन नामक व्यक्ति के जीवन की घटनाओं का उल्लेख करते हुए लिखा है कि श्री शेर्मन की अपनी भावी पत्नी मिस वीक्स से प्रारम्भिक मुलाकात १३ तारीख को हुई, उसने विवाह का प्रस्ताव १३ तारीख को किया और मिस वीक्स ने विवाह की स्वीकृति भी १३ तारीख को ही दी। १३ जून सन् १९१३ को दिन के दस बजकर १३ मिनट पर वे विवाह-वेदी पर बैठे। पति-पत्नी दोनों की जन्म तारीखें भी १३ ही थीं। विवाह में १३ भेहमान आये और वधू के हाथ में जो गुलदस्ता था, उसमें १३-गुलाब के फूल थे।

एक अन्य सज्जन सेमुझल स्टोरे ने लिखा है कि उसके जीवन में '१३' की संख्या का बहुत महत्व रहा। वह १३ जनवरी, १८४० (१+८+४+०=१३) को पैदा हुआ। वह १३ वर्ष की आयु से कमाने लगा और उसने प्रथम बार २६ जनवरी (१३×२) को राजनीतिक भाषण दिया। राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने के १३ वर्ष बाद वह पालियामेण्ट का सदस्य चुना गया। '१३ वर्ष' तक प्रथम पत्नी के साथ वैवाहिक जीवन रहा। उसकी पत्नी २६ तारीख (१३×२) को मरी। वह ३ वर्ष तक 'मेयर' पद पर तथा १० वर्ष 'चेअरमैन' पद पर—इस प्रकार कुल १३ वर्ष पदाधिकारी रहा। ५८ वर्ष की अवस्था में (५+८=१३) उसने द्वितीय विवाह किया। विवाह के समय सन् भी १८६८=(१+८+६+८=२६=१३×२) था। वह लिबरल दल का सदस्य १३×३=३९ वर्ष तक रहा। सन्डरलैण्ड के चुनाव में उसे १२३३४ वोट (१+२+३+३+४=१३) प्राप्त हुई। उसके जीवन में महत्वपूर्ण वर्ष वही थे जिनमें १३ का भाग पूरा पूरा नग सके (अर्थात् १३, १३×२=२६, १३×३=३९, १३×४=५२)।

इस प्रकार '१३' की संख्या के अनेक उदाहरण अनेक पुस्तकों में भरे पड़े हैं। सुप्रसिद्ध लेखक एम. सी. पोइनसोट^१ ने लिखा है कि Paul Des Chanel १३ तारीख को पैदा हुआ। उसका विवाह १३ तारीख शुक्रवार को हुआ। १३ तारीख को चेम्बर ने इन्हें प्रेमी-डेन्ट के पद के लिए चुना। इनके नाम में १३ ही अक्षर थे।

हेनरी किस्टेमे कर्स के नाम में अंग्रेजी वर्णमाला के १३ अक्षर थे। वह १३ अक्टूबर को पैदा हुए और उन्हें विश्व-विद्यालय में माहित्य

१. The Complete Book of the Occult पृष्ठ ४१२।

की उपाधि १३ तारीख को प्राप्त हुई। उनकी कृति 'भार्या' १३ तारीख को स्वीकृत हुई और उसका रिहर्सल भी १३ तारीख को हुआ। उनकी एक अन्य कृति १३ तारीख को पेरिस में दिखाई गई और पुनः ब्रूसेल्स नामक नगर में उसकी पुनरावृत्ति १३ तारीख को की गई। उनकी अन्य कृतियाँ भी—प्रत्येक—१३ तारीख को ही स्वीकृत हुईं और १३ तारीख को ही उन्हें विशिष्ट सम्मान की उपाधि से विभूषित किया गया।

अब १३ तारीख के सम्बन्ध में एक उदाहरण ऐसा दिया जाता है जहाँ १३ ने अशुभ प्रभाव दिखाया हो। सुप्रसिद्ध उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो ने लिखा है कि जब सन् १८७१ में वह फ्रांस की राष्ट्रीय असेम्बली के लिये रवाना हुए तो १३ (फरवरी) तारीख थी। जिस छव्वे में वह गये उसमें १३ व्यक्ति थे और जब 'वह 'बोरदू' नगर में पहुँचे तब नं० १३ के मुकान में उन्हें ठहराया गया। १३ मार्च की रात्रि को उन्हें बिलकुल नींद नहीं आयी। वह बेचैनी से करवटें बदलते रहे और विचार करते रहे कि जनवरी से—लगातार—'१३' की संख्या उनका पीछा कर रही है। उसी समय उन्हें होटल के अध्यक्ष ने बुजाया और विक्टर ह्यूगोसे कहा कि "दिल की कड़ा कर लीजिये। जिस चाल्स ह्यूगो की प्रतीक्षा में आप ठहरे हैं, उसकी मृत्यु का समाचार आया है!"

कहने का तात्पर्य यह है कि कोई संख्या सर्वथा शुभ या सर्वथा अशुभ नहीं होती—

किसी का कन्दे नगोने में नाम होता है
किसी को उम्र का लबरेज जाम होता है।

इस दुनिया में शास्त्री सहर

किसी का कूच किसी का काम होता है ।

किसी व्यक्ति के लिये कोई दिन बहुत शुभ होता है—वह शासन सत्तारूढ़ होता है, परन्तु उसी दिन उसके प्रतिद्वन्द्वी को फाँसी लगाई जाती है । जो किसी एक के लिये 'शुभ' वही किसी दूसरे के लिये 'अशुभ' अंक हो जाता है । अंग्रेजी इतिहासकारों ने तारीख की 'संख्या' पर बहुत गवेषणात्मक अध्ययन किया है । हमारे भारतीय इतिहास तथा महापुरुषों की जीवनी में इस प्रकार की गवेषणा नहीं की गई है । अस्तु कोई वैज्ञानिक सिद्धान्त नाहे यूरूप में प्रतिपादित किया जावे चाहे भारत में, उसकी वैज्ञानिकता में अन्तर नहीं आता । यूरूप के इतिहास से, १४ की संख्या की पुनरावृत्ति का एक घटनाक्रम संक्षेप में यहाँ दिया जाता है :—^१

(क) फाँस के प्रथम बादशाह का राज्याभिषेक १४ मई सन् १०२६ को हुआ और फाँस का अन्तिम बादशाह हेनरी १४ मई १६१० को मारा गया । फाँस तथा नवारे के १४ वें बादशाह Henri de Bourbon के नाम में १४ अक्षर थे । फाँस का बादशाह हेनरी १४ दिसम्बर सन् १५५३ को पैदा हुआ । इसामसीह के जन्म के १४००+१४ दशक (१४०)+१४ वें साल में :

$$14 \times 100 = 1400$$

$$14 \times 10 = 140$$

$$14 \times 1 = \underline{14}$$

$$1554$$

1. "Research in the Efficiency of Dates and Names in the Annals of Nations"

अर्थात् १५५३ वर्ष पूरे हो गये थे और १५५४ वां वर्ष चल रहा था ।

१५५३ वर्ष का मूल अंक भी १४ ही होता है : $1+5+5+3=14$ ।

१४ मई १५५४ को बादशाह हेनरी ने एक आज्ञापत्र निकाला । इसी कारण-परम्परा से $14 \times 4 = 56$ वे वर्ष में वह वह क़त्ल किया गया ।

(स्थानाभाव के कारण इस विषय का पूर्ण विवरण यहाँ नहीं दिया जा रहा है ।)

१४ मई १५५२ को हेनरी चतुर्थ की प्रथम पत्नी पैदा हुई थी । १४ मई १५८८ को ड्यूक आव गाइज ने हेनरी तृतीय के विरुद्ध बगावत की । १४ मार्च १५६० को हेनरी ने ईवरी के प्रसिद्ध मुद्दे में विजय प्राप्त की । १४ मई १५६० को हेनरी चतुर्थ पेरिस की लड़ाई में हारा । १४ नवम्बर १५६२ को फैच पालियामेंट ने कानून पास किया । इसके अनुसार भविष्य के लिये उत्तराधिकारी नियुक्त करने का अधिकार हेनरी चतुर्थ से लेकर रोम के पादरियों को दे दिया गया । १४ दिसम्बर को ड्यूक आव सेनेय ने हेनरी चतुर्थ को आत्म संमरण किया । १४ सितम्बर को 'डाफिन' (जो बाद में लूई XIII के नाम से प्रसिद्ध हुआ) का ईसाई मतानुसार नामकरण संस्कार किया गया । १४ मई १६१० को बादशाह का क़त्ल किया गया ।³

इस प्रकार और बहुत सी घटनाएँ दी गई हैं 'जिनमें १४ की सत्या बारंबार आती है । वास्तव में जो फैच इतिहास से जानकारी रखते हैं वही उपर्युक्त घटनाओं के महत्व का असली मूल्यांकन कर

सकते हैं। उन समस्त घटनाओं के महत्व पर प्रकाश डालना इस छोटीसी पुस्तक में सम्भव नहीं। पुस्तकों में अंक-विद्या के प्रमाणमें सैकड़ों उदाहरण भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के जीवन से संकलित कर अंग्रेज ज्योतिषियों ने दिये हैं। यहाँ केवल बानगी के तौर पर कुछ उदाहरण दिये गये हैं।

इस विषय में कहना केवल यह है कि बहुत बार किसी-किसी के जीवन में किसी तारीख-विशेष या अंक-विशेष का महत्व पाया जाता है। यदि हम अपने-अपने जीवन की गत घटनाओं का अध्ययन कर, उस अनुभव तथा अंकविद्या के मूल नियमों के आधार पर अपने भविष्य के विषय में कुछ जान सकें तो हमें कितना लाभ हो?

साधारण जनता ज्योतिष-शास्त्र पारंगत नहीं हो सकती परन्तु अंक-विद्या के नियम इतने सरल हैं कि साधारण पढ़ा लिखा भनुष्य भी इसे अपने जीवन में लागू कर लाभ उठा सकता है। बहुत बार जन्म-कुण्डली के अन्य ग्रहों के प्रभाव के कारण अंक-विद्या के नियम सर्वथा लागू न हों—या किसी-किसी के जीवन में अनेक ग्रहों के प्रबल प्रभाव के कारण—कई अंकों की प्रधानता हो भीर किसी 'अंक'-विशेष का नियम दिखाई न दे, किंतु इससे अंक-विद्या के मूल सिद्धान्त में कोई त्रुटि नहीं होती। नियम होते हैं और उनके अपवाद भी होते हैं। इस पुस्तक को पढ़ कर इसके नियमों को अपने तथा अपने परिचित व्यक्तियों के जीवन में लागू कर देखिये कि कितनी अधिक मात्रा में यह अंक-विद्या आपको लाभ पहुँचाती है।

३ रो-प्रकरण

‘मूल अंक’ बनाने की विधि और उनका प्रभाव

अब अंग्रेजी ज्योतिष के आधार पर यह बताया जाता है कि यदि किसी तारीख में एक से अधिक अंक हों तो उनको जोड़ कर मूल अंक कैसे बनाया जाए। ? से लेकर ६ तक तो मूल अंक कहलाते हैं। इसके बाद के अंकों को निम्नलिखित प्रकार से जोड़कर मूल अंक बनाने चाहिए :—

$$10 = 1 + 0 = 1$$

$$11 = 1 + 1 = 2$$

$$12 = 1 + 2 = 3$$

$$13 = 1 + 3 = 4$$

$$14 = 1 + 4 = 5$$

$$15 = 1 + 5 = 6$$

$$16 = 1 + 6 = 7$$

$$17 = 1 + 7 = 8$$

$$18 = 1 + 8 = 9$$

$$19 = 1 + 9 = 10$$

$$20 = 2 + 0 = 2$$

$$21 = 2 + 1 = 3$$

$$22 = 2 + 2 = 4$$

$$23 = 2 + 3 = 5$$

$$24 = 2 + 4 = 6$$

$$25 = 2 + 5 = 7$$

$$26 = 2 + 6 = 8$$

$$27 = 2 + 7 = 9$$

$$28 = 2 + 8 = 10$$

यदि हमें २६ का मूल अंक निकालना हो तो $2+6=11$ इस प्रकार दो अंकों की संख्या ११ आ जाती है। इसे उपर्युक्त क्रम से फिर जोड़ना चाहिए, $1+1=2$; इस प्रकार २६ का मूल अंक २

हुआ । ३० का $3+0=3$ तथा ३१ का $3+1=4$ हुआ । किसी भी तारीख का या किसी भी संख्या का मूल अंक ज्ञात करने का तरीका यह है कि उसमें ६ का भाग दीजिए । जो शेष बचे वही मूल अंक है । यदि शेष ० बचे तो मूल अंक ६ होगा ।

अंक १

किसी भी महीने में ३१ से अधिक तारीख नहीं होती, इस कारण ३१ तक की संख्या के मूल अंक बनाना यहाँ बता दिया गया है । अब सब से पहले '१' मूल अंक के विषय में बताया जाता है । जिसकी जन्म-तारीख का मूल अंक १ होता है वह व्यक्ति कियात्मक, अपनी विचार-धारा में स्थिर तथा निश्चित स्वभाव का होता है । अर्थात् उसकी प्रकृति में अस्थिरता नहीं होती । जिस बात पर अपनी राय कायम कर लेता है उस पर स्थिर रहता है । ऊपर जो १ से लेकर ३१ तारीख तक के मूल अंक दिए गए हैं उनको देखने से पता चलेगा कि १०, १६ तथा २८ तारीख को जो व्यक्ति उत्पन्न हुये हैं उनका मूल अंक १ है । ऐसे व्यक्तियों को किसी भी महीने की निम्नलिखित तारीखों महत्व-पूर्ण जावेगी:—

१, १०, १६, २८

इन तारीखों के अतिरिक्त उनके जीवन के निम्नलिखित वर्ष भी महत्वपूर्ण होंगे ।

१ वाँ वर्ष, १० वाँ वर्ष, १६ वाँ वर्ष, २८ वाँ वर्ष, ३७ वाँ वर्ष, ४६ वाँ वर्ष, ५५ वाँ वर्ष, ६४ वाँ वर्ष, ७३ वाँ वर्ष, इत्यादि । इसका कारण यह है कि ऊपर जो-जो वर्ष गिनाये गए हैं उनको

१. देखिये "The Magic of Numbers by Leo Markun.

जोड़ने से मूल अंक १ ही बन जाता है। यथा $64 = 6+4 = 10 = 1+0 = 1$ । इसी प्रकार सर्वेत्र समझना चाहिये। ‘१’ संख्या पर सूर्य का प्रभाव विशेष माना गया है और अंगरेज ज्योतिषियों के मतानुसार जो व्यक्ति २१ जुलाई से २८ अगस्त तक के समय में पैदा होते हैं उन पर सूर्य का प्रभाव विशेष होने के कारण यदि कोई मनुष्य उपर्युक्त समय में भी पैदा हुआ हो और १, १०, १६ या २८ तारीख को पैदा हो तो, उस पर सूर्य का प्रभाव भी अधिक होगा।

जिन लोगों की जन्म-तारीख का मूल अंक १ होता है, वह अनुशासन पसन्द नहीं करते। वह स्वयं अपनी संस्था के संचालक या अपने विभाग के अध्यक्ष होना चाहते हैं। इन लोगों को चाहिये कि अपने किसी भी नए काम की बुनियाद १, १०, १६ या २८ तारीख को छालें। यदि साथ ही २१ जुलाई से २८ अगस्त के बीच वाले कानू में वह कोई नया कार्य करें तो इन्हें विशेष सफलता होगी। ‘१’ अंक तो इनका अपना अंक हुआ, इस कारण शुभ होगा ही; किन्तु १ के अतिरिक्त २, ४ तथा ७ का अंक भी, इन्हें शुभ होता है।

इस कारण २, ११ ($1+1=2$), २० ($2+0=2$) तथा २६ ($2+6=8=1+1=2$) तारीख भी इन्हें अच्छी जावेगी। ४, १३ ($1+3=4$), २२ ($2+2=4$), तथा ३१ ($3+1=4$) तारीखें भी शुभ जावेगी। ७, १६ ($1+6=7$), तथा २५ ($2+5=7$) तारीख भी इन्हें शुभ होंगी।

ऊपर साधारण नियम बताया गया है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के वर्षों में यह विचार करना चाहिये कि १, २, ४

तथा ७ अंक वाले वर्ष उसे कैसे गये उदाहरण के लिए यदि कोई मनुष्य अपने गत जीवन के अनुभव से इस नतीजे पर पहुंचे कि, १, १०, १६, २८, ३७, वर्ष तो अच्छे गये किन्तु ७, १६, २५, ३४ या ४३ वर्ष अच्छा नहीं गया और महीने को ७, १६ या २५ वीं तारीख उसे अच्छी नहीं जाती तो भविष्य में किसी महत्वपूर्ण काम के लिये उसे ७, १६ या २५ वीं तारीख नहीं चुननी चाहिए।

'१' अंक वाले मनुष्य को रविवार तथा सोमवार शुभ होता है। इसलिए यदि १ ता० को या १० ता० को या १६ ता० को या २८ ता० को रविवार पड़े तो उसे विशेष अच्छा जावेगा। इसी प्रकार यदि ४ या १३ या २२ तारीख को रविवार पड़े तो भी उसे विशेष शुभ होगा। गहरा या हल्का भूरा रंग या पीला अथवा सुनहरी रंग इनके लिये विशेष अनुकूल होता है। पुरुष गहरे या हल्के भूरे रंग के कपड़े पहिनें तो उन्हें शुभ प्रभाव दिखावेगे। कपड़े का रंग पसन्द करते समय हमें लोक-रचि का भी ध्यान रखना पड़ता है। पुरुष गहरे पीले या सुनहरी रंग के कपड़े नहीं पहन सकते किन्तु जिन स्त्रियों की जन्म तारीख का मूल अंक १ हो वे पीली या सुनहरी रंग की साड़ी या ब्लाउज़ पहन सकती हैं।'

जीयन के महत्वपूर्ण वर्ष

१ मूल अंक वालों के जीवन के निम्नलिखित वर्ष महत्व पूर्ण होंगे ?

(क) १, १०, १६, २८, ३७, ४६, ५५, ६४।

(ख) ४, १३, २२, ३१, ४०, ४६, ५८, ६७।

१. वैज्ञानिक Harmony in Number, Name & Colour by Prof. Kelland.

(ग) २, ११, २०, २६, ३८, ४७, ५६, ६५।

(घ) ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१।^१

अंक २

'२' अंक का अधिष्ठाता चन्द्रमा है। सूर्य और चन्द्रमा मित्र हैं। इस कारण '१' अंक वाले व्यक्तियों को २ का अंक भी शुभ बताया गया है। परन्तु सूर्य में तेज होता है, चन्द्रमा में शीतलता। इस कारण जिनका मूल अंक २ हो, वे व्यक्ति कल्पनाशक्ति वाले, कलाप्रिय तथा प्रेमी होते हैं। शारीरिक शक्ति उनमें उतनी अधिक नहीं होती किन्तु मस्तिष्क सम्बन्धी कार्य में बाजी मार ले जाते हैं।

महीने की निम्नलिखित किसी भी तारीख को जिनका जन्म हुआ हो, उन सब का भूल अंक २ होगा।

२

$$11 = 1 + 1 = 2$$

$$20 = 2 + 0 = 2$$

$$26 = 2 + 6 = 11 = 1 + 1 = 2$$

अंगरेज ज्योतिषियों^२ के मतानुसार जिनका जन्म २० जून से २५ जुलाई तक हुआ हो उन पर चन्द्रमा का विशेष प्रभाव रहता है। इस कारण जिन व्यक्तियों का जन्म उपर्युक्त काल में हुआ हो और जन्म-तारीख का मूल अंक भी २ हो तो उन पर चन्द्रमा

१. इस विषय के विशेष जितासु कृपया देखें :—

"The Science of Numerology : What Numbers Mean to You" by Walter B. Gibson. तथा

२. Numerlogy : Its Practical Application to Life by Clifford W. Cheasley.

का विशेष प्रभाव रहेगा । जिनका मूल अंक २ हो उन्हें कोई भी महत्वपूर्ण कार्य महीने की २ री, ११ वीं, २० वीं या २६वीं तारीख को करना चाहिए । यदि यह लोग नवीन कार्य २० जून से लेकर २५ जुलाई तक—इस वीच में कर और नवीन कार्य का प्रारंभ भी २ अंक वाली तारीख को हो तो विशेष सफलता की संभावना है ।

जिन व्यक्तियों का मूल अंक २ है, उन्हे १,४ तथा ७ की सख्त्या भी शुभ होती है । इस कारण २ अंक वाले व्यक्तियों को उचित है कि अपने गत जीवन की घटनाओं से यह नतीजा निकालें कि जीवन का १ ला, १० वाँ, १६ वाँ तथा २८ वाँ वर्ष उन्हें कैसा गया और प्रत्येक महीने की १ अंक वाली तारीखें इन्हें कैसी जाती हैं । यदि यह शुभ जाती हों तो इन तारीखों को भी वह नवीन कार्य प्रारंभ कर सकते हैं, तथा ३७, ४६, ५५, ६४ वाँ वर्ष भी अच्छा जावेगा । इसी प्रकार ४ अंक की परीक्षा करनी चाहिए कि जीवन का ४ था, १३ वाँ २२ वाँ तथा ३१ वाँ वर्ष कैसा गया और महीने की यह तारीखें कैसी जाती हैं । ७ का अंक, २ का मिश्र समझा जाता है । इस कारण जिन व्यक्तियों की जन्म-तारीख का मूल अंक २ हो उन्हे प्रत्येक महीने की ७, १६ तथा २५ वीं तारीख भी उत्तम जानी चाहिए । और इनके जीवन का ७ वाँ, १६ वाँ, २५ वाँ, ३४ वाँ, ४३ वाँ, ५२ वाँ, ६१ वाँ तथा ७० वाँ वर्ष भी महत्वपूर्ण होगा ।

जिनका मूल अंक २ है, उनके लिये रविवार, सोमवार तथा शुक्रवार शुभ होता है । इसलिये यदि २ या ११ या २० या २६ तारीख को सोमवार भी हो तो इन्हें विशेष शुभ होगा ।

जिनको जन्म-तारीख का मूल अंक २ हो उन्हें द्वा बात के

लिए प्रयत्नशील होना चाहिए कि अपने मस्तिष्क की बेचैनी और उलझन को कम कर, जिस बात का विचार पक्का किया हो उसे कार्यान्वित करने में जी-जान से जुट जावें। यह लोग प्रायः मुस्तक-किल मिजाज नहीं होते, एक बात के विषय में विचार पक्का करते हैं और फिर उसमें तब्दीली या तरमीम करते रहते हैं और फिर दूसरी कोई नई योजना बनाने लगते हैं। धैर्य और अध्यवसाय की कमी के कारण जिस बात का विचार करते हैं उसे पूरा नहीं करते। अपने स्वभाव की इस कमजोरी के कारण इन्हें सफलता में बाधा होती है। इनमें आत्म-विश्वास को कमी होती है; थोड़ी सी निराशा से उदासीन हो जाते हैं। यदि अपनी इस भावुकता पर विजय पा सकते हैं तो बहुत सी बातों में सफल हो सकते हैं।

इन्हें सफेद, काफ़ूरी (चन्द्रमा के रंग का), हरा या अंगूरी रंग विशेष शुभ है। इस लिए इस रंग की पोशाक पहनना चाहिए। काला, लाल या गहरा रंग इनके लिये अनुकूल नहीं है।

अंक ३

इस अंक का अधिष्ठाता वृहस्पति है। जिन व्यक्तियों का जन्म निम्नलिखित किसी भी तारीख को हुआ हो उनका मूल अंक ३ होगा :-

$$3=3$$

$$12=1+2=3$$

$$21=2+1=3$$

$$30=3+0=3$$

अंगरेज ज्योतिषियों के मतानुसार १६ फरवरी से २१ मार्च

तक तथा २१ नवम्बर से २१ दिसम्बर तक—इन कालों में जिनका जन्म हुआ हो उन पर वृहस्पति का विशेष प्रभाव रहता है। इस कारण यदि किसी व्यक्ति का जन्म उपर्युक्त काल में हुआ हो और जन्म की तारीख का मूल अंक भी ३ हो तो उस पर वृहस्पति का प्रभाव विशेष मात्रा में होगा।

३ अंक वाले व्यक्ति महत्वाकांक्षी, शासन की इच्छा 'रखने वाले तथा अनुशासन में कठोर होते हैं। यदि फौज या सरकारी किसी विभाग के अध्यक्ष हों तो अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के कार्य में विधिलता नहीं होने देते। यह इतनी सख्ती से हुक्मत करते हैं कि इनके बहुत से अधीनस्थ व्यक्ति इनके शत्रु हो जाते हैं।

३ अंक वाले व्यक्तियों को उचित है कि महत्वपूर्ण कार्य, किसी भी महीने की ३ री, १२ वी, २१ वीं या ३० वीं तारीख को करें। यदि साथ ही १६ फरवरी से २१ मार्च तक के समय में या २१ नवम्बर से २१ दिसम्बर वाले काल में ३ मूल अंक वाली ता० को, नये काम की बुनियाद ढाले तो विशेष सफलता की संभावना है। इस अंक वालों का ३ रा, १२ वाँ, २१ वाँ, ३० वाँ, ३६ वाँ, ४८ वाँ, ५७ वाँ तथा ६६ वाँ वर्ष अच्छा जावेगा।

३ अंक की ६ के अंक तथा ६ के अंक से भी सहानुभूति है। इसलिए जिन व्यक्तियों की जन्म-तारीख ३, १२, २१ या ३० हो उन्हें अपने गत जीवन के अनुभव से यह देखना चाहिए कि उनके जीवन का ६ ठा, १५ वाँ, २४ वाँ वर्ष कैसा गया तथा प्रत्येक महीने की यह तारीख कैसी जाती है। यदि विशेष अनुकूल जाती हों तो इन तारीखों को भी महत्वपूर्ण कार्यों के लिए उपयोग में ला सकते हैं। यदि ६ ठा, १५ वाँ आदि ६ मूल अंक वाले वर्ष गत जीवन में

शुभ गए हों तो भविष्य में भी ३३ वाँ, ४२ वाँ, ५१ वाँ, ६० वाँ वर्ष शुभ जावेगा। इसी प्रकार यदि उनके जीवन का है वाँ वर्ष, १८ वाँ वर्ष तथा २७ वाँ वर्ष अनुकूल गया हो और प्रत्येक मास को ६, १८ तथा २७ वीं तारीख भी शुभ जाती हो तो इन्हें भी अपनी शुभ तारीखों में सम्मिलित कर सकते हैं। जीवन में ६ मूल अंक वाले—३६ वाँ, ४५ वाँ ५४ वाँ, वर्ष भी शुभ जावेगा।

३ अंक वाले व्यक्तियों को बृहस्पतिवार, शुक्रवार तथा मंगलवार शुभ होता है। इसलिए यदि ३, १२, २१ या ३० तांत्रिकों को बृहस्पतिवार भी हो तो उनके लिए विशेष शुभ होगा। यदि ६ का मूल अंक शुभ जाता हो तो ६, १५ या २४ तांत्रिकों को शुक्रवार भी पड़े तो विशेष शुभ होगा। ६, १८ या २७ तांत्रिकों को मंगलवार हो तो और भी अनुकूल होगा। ३, १२, २१, ३०—इन सब अंकों का मूल अंक ‘३’ ही है। जिनकी जन्म-तारीख का मूल अंक ‘३’ हो, उनमें परस्पर विशेष आकर्षण होता है। भिन्न-भिन्न जाति, कुल, शील, राजनीति, आर्थिक या सामाजिक परिस्थिति वश आकर्षण में भेद अवश्य होगा परन्तु उनकी मानसिक वृत्तियों में एक-मूलता अवश्य होगी और ३ मूल अंक वाले, ३ मूल अंक वालों के अच्छे मित्र हो सकते हैं। देखिये प्रेसीडेन्ट रूज़बेल्ट की जन्म-तिथि—३० जनवरी थी, चर्चिल की ३० नवम्बर तथा स्टालिन की २१ दिसम्बर। तीनों की जन्म-तारीख का मूल अंक ३ था। इसी कारण संभवतः लड़ाई के समय भिन्न-भिन्न राजनीति के पोषक होने पर भी, ‘३’ मूल अंक होने के कारण, ३ राष्ट्रों के ३ कर्णधार द्वितीय महायुद्ध के समय अपने-अपने देश से आकर योरूप के एक दूर्दृश्य पर गुप्त मंत्रणा के लिए एकत्र हो सके और शत्रु को

अपनी सम्मिलित योजना के कारण परास्त कर सके। मेरा विचार है कि यदि स्तालिन, चर्चिल तथा प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट, तीनों की ही जन्म तारीख का मूल अंक ३ नहीं होता तो यहतीनों एक स्थान पर सौमनस्यपूर्ण विचार-विनिमय के लिये एकत्रित नहीं होते।

३ मूल अंक वाले व्यक्तियों को चमकीला गुलाबी रंग, या हल्का जामुनीरंग विशेष शुभ होता है। स्त्रियाँ इस रंग की पोशाक पहिनें तो उन्हें विशेष अनुकूल होगी। पुरुष वर्ग अपने कमरे की दीवालों पर यह रंग करावें या इस रंग का फूलीचर, परदे आदि अपने कमरे में लगावें तो शुभ होगा।

अंक ४

अंगरेजी ज्योतिष के अनुसार '४' का मुख्य अधिप्राता हर्शल नामक श्रह है। 'हर्शल' नामक अंगरेज वैज्ञानिक ने सर्वे प्रथम इसका पता लगाया। उसी के नाम से इसे 'हर्शल' कहा जाता है। हर्शल का मुख्य प्रभाव है सहसा प्रगति, विस्तोट, आश्चर्यजनक कार्य, असंभावित घटनाएं आदि। इसलिए जिस व्यक्ति की जन्म-तारीख का मूल अंक ४ होता है वह प्रायः औरों से संघर्ष करता है। जो अन्य लोगों की राय या विचारधारा होगी उसके विरुद्ध '४' अंक वाला व्यक्ति अपना विचार प्रदर्शन करेगा; इस कारण उसके बहुत से विरोधी और दात्रु हो जाते हैं। किसी भी महीने में निम्नलिखित किसी भी तारीख को जिन व्यक्तियों का जन्म हुआ होगा, उनका मूल अंक '४' होगा :—

$$४=४$$

$$१३=१+३=४$$

$$२२=२+२=४$$

$$३१=३+१=४$$

अंगरेज ज्योतिषियों का मत है कि यदि जन्म की तारीख का मूल अंक ‘४’ हो और यदि जातक का जन्म भी २१ जून से ३१ अगस्त तक के बाल में हुआ हो तो उस पर ‘४’ का प्रभाव विशेष मात्रा में रहेगा। यह लोग सुधारक, पुरानी प्रथा के उन्मूलक और नवीन प्रथा के संस्थापक होते हैं। सामाजिक या राजनीतिक क्षेत्र-किसी में भी पुरानी पद्धति को हटा कर नवीन पद्धति बैठाना इनके स्वभाव के अनुकूल होता है। यह लोग आसानी से औरें से मिश्रता स्थापित नहीं करते। तथापि जिन व्यक्तियों की जन्म तारीख का मूल अंक, १, २, ७ या ८ हो उनसे इनका सीहादं हो सकता है।

‘४’ अंक वाले व्यक्ति रूपे जोड़ने पर इतना जोर नहीं देते जितना भी उड़ाने पर। इन व्यक्तियों को उचित है कि संग्रहीतता की और विशेष ध्यान दें। इन लोगों को रविवार, सोमवार तथा शनिवार शुभ होते हैं। यदि कोई नवोन या महत्वपूर्ण कार्य करना हो तो किसी भी भीड़ने की अंग्रेजी ता० ४ या १३ या २२ या ३१ को करें तो सफलता होगी। यदि २१ जून से ३१ अगस्त के बीच में नवीन कार्य की बुनियाद डालें और साथ ही तारीख भी ४, १३, २२ या ३१ हो तो विशेष सफलता की आशा है। यदि ‘४’ मूल अंक वाली तारीख को रविवार भी हो तो और भी शुभ होगा। यदि २, ११, २० या २६ तारीख हो और उस दिन सोमवार भी हो तो यह ‘२’ का मूल अंक तथा सोमवार दोनों ‘४’ अंक बालों के लिए शुभद होने के कारण और भी सत्प्रभाव दिखावेंगे।

यदि ‘४’ अंक वाले व्यक्ति सहिष्णु बनाने के अभ्यासी बनें और अन्य व्यक्तियों से व्यर्य संधर्य कर अपने प्रतिद्वन्द्वी और शत्रु न

बनावें तो विशेष सफल हो सकते हैं। 'धूप-छाँह' का रंग, नीला तथा खाकी (भूरा) रंग इन्हें विशेष अनुकूल होगा। 'धूप-छाँह' से तात्पर्य है दो प्रकार के रंगों का सम्मिश्रण—कहीं गहरा मालूम हो कहीं हल्का—ऐसा वस्त्र या कमरे, फरनीचर और परदों आदि का रंग इनके लिए शुभ है।

जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष

४ अंक वाले व्यक्तियों को ४ था, १३ वाँ, २२ वाँ, ३१ वाँ ४० वाँ, ४६ वाँ ५८ वाँ और ६७ वाँ वर्ष महत्व पूर्ण जावेगा। साथ ही १ ला, १० वाँ, १६ वाँ, २८ वाँ, ३७ वाँ, ४६ वाँ ५५ वाँ तथा ६४ वाँ वर्ष भी महत्व पूर्ण होगा। ४ अंक वाले व्यक्ति को मंदि २, ११, २०, २६ तारीखें शुभ जाती हैं तो, २, ११, २०, २६, ३८, ४७, ५६, ६५ और ७४ वाँ वर्ष भी शुभ जावेगा तथा '७' का मूल अंक अनुभव से शुभ सिद्ध हुआ हो तो ७ मूल अंक वाले जीवन के वर्ष भी शुभ जावेंगे।

अंक ५

इस अंक का अधिष्ठाता 'बुध' ग्रह है। जिन लोगों का जन्म नीचे लिखी किसी भी तारीख को हुआ हो उनका मूल अंक ५ होगा।

टिप्पणी—इस सम्बन्ध में २२ वें वर्ष के विषय में यह स्मरण रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक मनुष्य के जीवन के २२ वें वर्ष का अधिष्ठाता सूर्य होता है—इस कारण जिन लोगों को जन्म कुण्डली में सूर्य वस्तान् शुभ राति तथा शुभ भाव में शुभ प्रह्लौं से युक्त वीक्षित है उन्हें २२ वीं वर्ष अवश्य अच्छा जावेगा और जिनको जन्म कुण्डली में सूर्य अनिष्ट स्थान में हित है या नीच राति या शायु गृह में है उन्हें २२ वीं वर्ष अनिष्ट जावेगा। इसी प्रकार २८ वें वर्ष के दिवार में—भारतीय ज्योतिष के अनुसार मंगल की प्रधानता है।

मूल अंक बनाने का वाय भोट-झनझ मुभाव ।

५
५
५
५
५

२३=२+३=५

अंगरेज ज्योतिषियों के मतानुसार २१ मई से २३ जून तक और २१ अगस्त से २३ सितम्बर तक प्रति वर्ष, बुध का प्रभाव विशेष रहता है। इस कारण यदि कोई व्यक्ति इस अन्तर में पैदा हुआ हो और उसके जन्म की तारीख का मूल अंक भी '५' हो तो उस पर बुध का प्रभाव विशेष होगा। यह लोग बहुत मिलनसार होते हैं और किसी भी व्यक्ति से शीघ्र मंत्रीभाव कर लेते हैं, इस कारण किसी भी अंगरेजी तारीख को कोई व्यक्ति पैदा हुआ हो इनका मित्र हो सकता है। परन्तु यदि किसी व्यक्ति की जन्म तारीख का मूल अंक ५ हो तो (अर्थात् वह ता० ५, १४ या २३ को पैदा हुआ हो), अपने समान ही मूल अंक होने से, इनकी उससे हार्दिक घनिष्ठता हो जावेगी।^१

बुध का प्रभाव व्यापार क्षेत्र में विशेष है। इस कारण यह लोग व्यापार—खास कर सट्टे या शीघ्र लाभ होने वाले व्यापार-की ओर विशेष आकृष्ट होते हैं। इनका स्नायुमंडल बहुत फुर्ती से कार्य करता है, इस कारण ये जल्दवाज होते हैं। इनकी प्रकृति में यह विशेषता होती है कि अधिक दिन तक किसी बात पर चिंता, शोक या पश्चात्ताप नहीं करते। किसी ने मानसिक आघात पहुँचाया—तो थोड़े काल में ही उसे भूल गए, और पूर्ववत् अपने कार्य में लग गए।

इन लोगों के लिए बुधवार, बृहस्पतिवार तथा शुक्रवार विशेष शुभ होते हैं। यदि यह किसी कार्य की नवीन आर्योजना का प्रारंभ ५, १४ वा २३ ता० को करें तो विशेष सफलता होगी। यदि साथ ही उस दिन वार भी बुध हो तो और भी शुभ होगा। यदि २१ मई से २३ जून तक अयवा २१ अगस्त से २३ सितम्बर के बीच के काल में इनके लिए अनुकूल वार को ५, १४ या २३ ता० पड़े तो, उस दिन नवीन कार्य की बुनियाद डालने से अवश्य अधिक सफलता की आशा होगी। बुध का प्रभाव इन लोगों पर विशेष रहता है। बुध स्नायुमंडल का अधिष्ठाता है। यह लोग अपनी स्नायविक दक्षित इतनी अधिक व्यय करते हैं कि अधिक अवस्था में स्नायुमंडल की कमजोरी से (Nervous break down) मृद्दा आदि की आशंका होगी। इसी कारण इनके मिजाज में जल्दवाजी, चिड़चिड़ापन, शीघ्र कोध आने की प्रवृत्ति आदि के लक्षण पाये जाते हैं।

हल्का खाकी, सफेद, चमकीला उज्ज्वल रंग इनकी प्रकृति के विशेष अनुकूल होता है। अयवा किसी भी रंग का हल्का रंग इन्हें शुभ होगा। गहरा रंग नहीं पहनना चाहिए।

जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष

इनके जीवन का ५ वाँ, १४ वाँ, २३ वाँ, ३२ वाँ, ४१ वाँ, ५० वाँ, ५६ वाँ, ६८ वाँ तथा ७७ वाँ वर्ष महत्वपूर्ण होगा। भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ३२ वें वर्ष में बुध अपना पूर्ण प्रभाव दिखाता है। इस कारण जिनकी जन्म-कुण्डली में बुध शुभ भाव में तथा वलवान् होंगा उन्को उस भावसम्बन्धी शुभ फल

करेगा। जिनकी जन्म-कुण्डली में अशुभ भाव में वलहीन बैठा होगा उनको ३२ वें वर्ष में उस भाव सम्बन्धी अनिष्ट फल देगा—

अंक ६

इस अंक का अधिष्ठाता शुक्र है। जिन व्यक्तियों का जन्म निम्नलिखित किसी तारीख को हुआ हो उनका मूल अंक ६ है:—

$$6=6$$

$$15=1+5=6$$

$$24=2+4=6$$

अंगरेज ज्योतिषियों के मतानुसार २० अप्रैल से २४ मई तक और २१ सितम्बर से २४ अक्टूबर तक शुक्र का विशेष प्रभाव रहता है। इस कारण यदि उपर्युक्त काल में किसी का जन्म हुआ हो और साथ ही जन्म की तारीख भी ६, १५ या २४ हो तो ऐसे व्यक्तियों पर शुक्र का प्रभाव विशेष मात्रा में होगा। ६ अंक वाले व्यक्ति वहुधा लोक-प्रिय होते हैं। उनमें आकर्षण शक्ति और मिलनसारी होती है और इस कारण उनके सम्पर्क में आनेवाले लोग उन्हें प्रेम करते हैं। इनमें सोन्दर्योपासना भी विशेष मात्रा में होती है। सुन्दर व्यक्ति, कला, विद्या, सुन्दर वस्त्र आदि इन्हें विशेष प्रिय होते हैं। यह अपनी सुखचि सम्पन्नता के कारण आतिथ्य आदि में विशेष सत्कार करते हैं तथा लिखित कलाओं को प्रोत्साहन देते हैं। परन्तु स्वभाव के हंठी होते हैं और अपनी बात को अन्त तक निभाते हैं। किसी दूसरे की प्रतियोगिता सहन नहीं कर सकते और ईर्पा की मात्रा भी विशेष होती है।^१

यह सहसा लोगों को मित्र बना लेते हैं या यह कहिये कि दूसरे के मित्र बन जाने का स्वभाव जितना ६ मूल अंक वालों में पाया जाता है, उतना, ५ मूल अंक को छोड़ कर, अन्य मूल अंक वालों में नहीं होता ।

मूल अंक ६ की अंक ३ तथा ६ से भी सहानुभूति है । इस कारण ६ अंक वाले लोगों की मित्रता निम्नलिखित तारीखों में उत्पन्न होने वाले लोगों से विशेष होती है :

६, १५, २४

३, १२, २१, ३०

६, १८, २७

६ अंक वाले व्यक्तियों को मंगलवार, बृहस्पति तथा शुक्रवार विशेष शुभ होते हैं—इसलिए यदि ६, १५, २४—इन तारीखों में से किसी पर शुक्रवार पड़े और उस दिन नवीन कार्य प्रारंभ या सम्पादन किया जावे तो विशेष सफलता की भाशा है । यदि २० अप्रैल से २४ भई अथवा २१ सितम्बर से २४ अक्टूबर के बीच शुक्रवार और ६, १५ या २४ तारीख का योग प्राप्त हो सके तो विशेष कार्य के लिए यह दिन और भी उपयुक्त होगा ।

इन व्यक्तियों को हल्का नीला या आसमानी या गहरा नीला रंग शुभ होगा । हल्का गुलाबी रंग भी उपयुक्त है किन्तु काला या गहरा लाल, ककरेजी आदि रंग भयुक्त हैं ।

जीवन के महत्त्वपूर्ण घर्य

यदि आप का मूल अंक ६ है तो आप के जीवन का ६ ठा,

१५ वाँ, २४ वाँ^२ ३३ वाँ, ४२^२ वाँ, ५१ वाँ, ६० वाँ तथा ६६ वाँ वर्ष महत्वपूर्ण होगा ।

६ मूल अंक की ३ तथा ६ से भी सहानुभूति होने के कारणः—

(क) अपने गत जीवन के ३ से, १२ वे २१ वें ३० वें वर्ष में कैसी घटना घटित हुई यह विचार कीजिए । यदि यह वर्ष शुभ गए तो आगे के ३६ वाँ, ४८^२ वाँ, ५७ वाँ तथा ६६ वाँ वर्ष भी शुभ जावेगा ।

(ख) यदि आप के गत जीवन का ६ वाँ, १८ वाँ, २७ वाँ, ३६^२ वाँ वर्ष अच्छा गया है तो आगे का ४५ वाँ, ५४ वाँ तथा ६३ वाँ वर्ष भी अच्छा जावेगा ।

अंक ७

७ अंक का अधिष्ठाता नेपचून ग्रह है । भारतीय ज्योतिष में 'नेपचून' का नाम या इसके सदृश गुणवाले किसी ग्रह का जिक्र

१. स्मरण रहे कि अंक ज्योतिष के हिसाब से नहीं, किन्तु भारतीय ज्योतिष के मतानुसार यदि जन्म कुण्डलो में चन्द्रमा, शुभ राशि और शुभ गृह में पड़ा हो और शुभ ग्रह से युत, वीक्षित हो तो, २४ वाँ वर्ष बड़ा अच्छा जाता है और जिस भवन का स्थानीय चन्द्रमा हो या जहाँ बैठा हो उस भाव का शुभ फल करेगा । अनिष्ट चन्द्रमा अनिष्ट फल करेगा ।

२. इसी प्रकार राहु अपरा प्रभाव ४२ वें वर्ष में दिलाता है ।

३. ४८ वाँ वर्ष भारतीय ज्योतिष के मनुसार केतु का होता है । आप को जन्म कुण्डलो में केतु केन्द्र में स्थित होकर श्रिकोणेश से सम्बन्ध करता है या श्रिकोण में स्थित होकर केन्द्रेश से सम्बन्ध करता है तो विशेष माध्योदय करेगा । यह वास्तव में ज्योतिष का विषय है ।

४. इसी प्रकार भारतीय ज्योतिष के मनुसार ३६ वाँ वर्ष

नहीं है। वहुत से ज्योतिषी 'नेपचून' को 'वरण' कहते हैं। परन्तु वास्तव में यह नाम धान्तिकारक है। जिन व्यक्तियों का जन्म नीचे लिखी किसी भी अंगरेजी तारीख को हो उनका मूल अंक ७ होगा।

७=७

१६=१+६=७

२५=२+५=७

प्रायः चन्द्रमा की भाँति नेपचून भी जल प्रधान ग्रह है। इस कारण चन्द्रमा के अंक '२' तथा नेपचून के अंक '७' में परस्पर सहानुभूति है। इस कारण ७ मूल अंक वाले व्यक्तियों की ७, १६, तथा २५ तारीख को उत्पन्न होने वाले व्यक्तियों के अतिरिक्त, २, ११, २० या २६ तारीख को पैदा होने वाले व्यक्तियों से विशेष मित्रता तथा सौहार्द होने की सम्भावना होगी।

७ मूल अंक वाले व्यक्ति सर्दूल परिवर्तन पसन्द किया करते हैं। यात्रा करना, तथा नवीन स्थान देखने का शोक उन्हें वहुत होता है। इनमें कल्पनाशक्ति विशेष होने के कारण यह लोग विशेष भावुक होते हैं। चित्रकला तथा कविता में यह लोग विशेष सफलता प्राप्त कर सकते हैं। द्रव्य के विषय में भाग्य इनका उतना सहायक नहीं जितना अन्य मूल अंक वालों का; इस कारण इन्हें आर्थिक सफलता विशेष प्राप्त नहीं होती। अधिक धन संग्रह करने पर धन नष्ट हो जाने का योग भी होता है। परन्तु ७ मूल अंक वाली स्त्रियों का विवाह धनी घरों में होता है। ७ अंक वाले व्यक्तियों के धार्मिक विचार भी कुछ असाधारण होते हैं। धार्मिक भासलों में यह रुद्धि-वादी नहीं होते। प्रचलित परम्परा से भिन्न अपना धार्मिक भत रखते हैं। इन व्यक्तियों में अतीन्द्रिय ज्ञान (दूसरे की मन की वाल

विना वंताये हुए समझ जाना) विशेष मात्रा में होता है, तथा इन्हें स्वप्न भी अद्भुत प्रकार के आते हैं।

‘नेपचून’ का जल तत्व से विशेष सम्बन्ध होने के कारण समुद्र पार की यात्रा—या विदेशों से भाल मैंगवाने या भेजने आदि के व्यापार में या जहाज सम्बन्धी कार्य में इन्हें विशेष सफलता हो सकती है।

कुछ अंगरेज ज्योतिषियों के मतानुसार २१ जून से २५ जुलाई तक नेपचून का विशेष प्रभाव रहता है। इस कारण यदि कोई व्यक्ति ७, १६, या २५ तारीख को पैदा हुआ हो और उपर्युक्त काल में उसकी जन्म तारीख पड़े तो उसमें ऊपर वर्णित नेपचून के गुण विशेष मात्रा में मिलेंगे। रविवार तथा सोमवार इन्हे शुभ होते हैं। किसी भी महीने की निम्नलिखित तारीखें इन्हे विशेष अनुकूल होंगी:—

(क) १, १०, १६, २८

(ख) २, ११, २०, २६

(ग) ४, १३, २२, ३१

(घ) ७, १६, २५

अपने अनुभव से यदि यह जात हो कि ऊपर (क) या (ग) के अन्तर्गत दी हुई तारीखें प्रतिकूल पड़ती हैं—तो उन तारीखों को मुख्य या नवीन कार्य करने के लिये न चुने।

७ अंक वाले व्यक्तियों को हरा, काफूरी (हलका पीला), सफेद आदि रंग विशेष शुभ होते हैं; गहरे रंग अशुभ होते हैं।
जीवन के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष

ऊपर बताया जा चुका है कि ७ मूल अंक वालों को कौन-कौनसी अंगरेजी तारीखें अच्छी जावेगी। (क) वर्ष में नं० १ मूल

अंक वाली तारीखें हैं (ख) वर्ग में नं० २ मूल अंक वाली, (ग) वर्ग में नं० ४ मूल अंक वाली तथा (घ) वर्ग में नं० ७ मूल अंक वाली।

अब आपने गत जीवन के घटनाओं पर विचार कीजिये।

(क) आपके जीवन का १ ला, १० वाँ १६ वाँ वर्ष कैसा गया? यदि अच्छा—कोई शुभ घटना हुई तो आगे का २८ वाँ, ३७ वाँ, ४६ वाँ, ५५ वाँ आदि वर्ष भी अच्छे जावेंगे।

(ख) २ तथा ७ के अंक में विशेष सहानुभूति होने के कारण, यदि आपका मूल अंक ७ है तो २, ११, २०, २६, ३८, ४७ आदि वर्ष भी आपके जीवन में महत्वपूर्ण होंगे।

(ग) इसी प्रकार आपने गत जीवन के ४ थे, १३ वें, २२ वें वर्ष का सिंहावलोकन करके देखिये कि इन्होंने कैसा प्रभाव दिखाया। भावी जीवन का ३१ वाँ, ४० वाँ, ४६ वाँ, ५८ वाँ, ६७ वाँ वर्ष भी उसी प्रकार का प्रभाव दिखायेगा।

(घ) ७ वाँ, १६ वाँ, २५ वाँ, ३४ वाँ, ४३ वाँ, ५२ वाँ और ६१ वाँ वर्ष आपके जीवन में अवश्य असामान्य होंगे।

अंक ८

इस अंक का अधिष्ठाता शनि है। जो लोग निम्नलिखित विसी भी अंगरेजी तारीख को उत्पन्न हुए हैं, उनका मूल अंक ८ होगा।

८=८

१७=१+७=८

२६=२+६=८

अंगरेज ज्योतिषियों के मतानुसार प्रत्येक वर्ष २१ दिसम्बर से १६ फरवरी तक शनि का विशेष प्रभाव रहता है। इसलिये जो लोग उपर्युक्त काल में पैदा हों और उनकी जन्म की तारीख का

मूल अंक भी दहो तो उन पर शनि का प्रभाव विशेष मात्रा में होगा ।

८ मूल अंक वाले व्यक्ति वहुत महत्वपूर्ण कार्य करते हैं किन्तु अन्य लोग इनके साथ सहानुभूति पूर्ण व्यवहार नहीं करते, इस कारण इनके चित्त में उदासी और अकेलापन रहता है । इन लोगों में वाहरी प्रेम प्रदर्शन की आदत नहीं होती, इस कारण वहुत से लोग इन्हें शुप्क और कठोर समझते हैं, परन्तु वास्तव में यह ऐसे नहीं होते । अपने कार्य की पूर्णता की ओर इनका विशेष ध्यान रहता है और यदि ऐसा करने में इन्हें किसी से शत्रुता भी उत्पन्न करनी पड़े तो उसकी परवाह नहीं करते । यह लोग उच्च महत्वाकांक्षी होते हैं और उच्च सरकारी नौकरी या अन्य महत्वपूर्ण पद प्राप्त करने में यदि कष्ट उठाना पड़े या अन्य बलिदान करना पड़े तो उसके लिए भी उद्यत रहते हैं ।

८ मूल अंक वालों की जीवन में प्रायः वहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ती है—इस कारण ८ को अच्छा अंक नहीं मानते हैं ।

इस अंक वाले व्यक्तियों का सबसे मुख्य दिन शनिवार होता है, परन्तु रविवार और सोमवार भी शुभ जाना चाहिये । इन लोगों को अपना नवीन या अन्य कोई महत्वपूर्ण कार्य ८, १७ या २६ ता० को प्रारंभ करना चाहिये । यदि साथ ही उस दिन शनिवार पड़े तो और भी अच्छा है ।

एक मत यह भी है कि ४, १३, २२ तथा ३१ ता० भी ८ मूल अंक वालों को शुभ होती हैं । कीरो३ के मतानुसार प्रत्येक वर्ष

में २१ दिसम्बर से २२ फरवरी तक शनि का विशेष प्रभाव रहता है। इस कारण यदि द मूल अंक वाले इन दो महीनों में किसी ऐसे दिन कायं प्रारम्भ करे जिस दिन तारीख भी ८, १७ या २६ हो और वार भी शनि पड़े तो विशेष इष्टकर होगा। किन्तु एक दूसरा मत यह भी है कि द अंक वालों को ४ तथा द के अतिरिक्त नं० की संख्या (तारीख, मकान आदि) विशेष काम के लिये चुनना चाहिए।

द मूल अंक वालों को गहरा भूरा, काला, गहरा नीला, ककरेजी आदि गहरे रग शुभ होते हैं। हल्के रंग शुभ नहीं हैं।

द का मूल अंक सब से पृथक् है। इस मूल अंक वाले को किन तारीखों में पैदा हुए व्यक्तियों से मिश्रता होगी, यह कहना भी बहुत कठिन है। अपने जीवन को गत घटनाओं से ही द मूल अंक वाले यह सही नसोजा निकाल सकते हैं कि कौन सा अंक उन्हें कंसा गया। अगर उनके मिश्रों में से अधिकांश वह मूल अंक ४ है, और मूल अंक द वाले व्यक्ति के जीवन में ४ था, १३ वाँ, २२ वाँ आदि ४ मूल अंक वाले वर्ष विशेष महत्वपूर्ण गये तो भविष्य में ३१ वाँ, ४० वाँ, ४६ वाँ, ५८ वाँ, ६७ वाँ वर्ष जीवन में महत्वपूर्ण जावेगा। यह तो निश्चय है कि द मूल अंक वाले व्यक्ति वो द, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० आदि वर्ष महत्वपूर्ण जाते हैं।

किन्तु 'द' के अतिरिक्त अन्य कौन से अंक महत्वपूर्ण हैं, यह केवल जीवन की गत घटनाओं से ही जाना जा सकता है।

वहूत से लोग द के अंक को शनि का अंक होने के कारण अशुभ मानते हैं। परन्तु यास्तव में सब के लिए कोई अंक शुभ ना

अंगुभ नहीं होता । अपनी-अपनी जन्म तारीख तथा ग्रह स्थिति वश भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न अंक शुभ या अशुभ होते हैं ।

अंक ६

इस अंक का अधिष्ठाता मंगल है । निम्नलिखित किसी भी अंगरेजी तारीख को पैदा होने वाले व्यक्ति का मूल अंक ६ होगा ।

६=६

१८=१+८=६

२७=२+७=६

‘कोरो’^१ के मतानुसार प्रतिवर्ष २१ मार्च से २७ अप्रैल तक और २१ अक्टूबर से २७ नवम्बर तक मंगल का विशेष प्रभाव रहता है । इसलिये इस काल में जो व्यक्ति पैदा होते हैं, उनकी जन्म तारीख भी ६, १८ या २७ हो तो उन पर मंगल का प्रभाव विशेष मात्रा में होगा ।—

“मंगल करावे दंगल” यह प्रचलित सोकोवित है । इस कारण ६ मूल अंक वाले व्यक्ति साहसी तथा संघर्षशील होते हैं और कठिनाइयों से जूझ कर सफलता प्राप्त करते हैं । परन्तु उनके स्वभाव में उग्रता तथा जल्दबाजी होती है । यदि उन्हे ६ मूल अंक वाली तारीखें, या ६ मूल अंक वाले जीवन के वर्ष (६, १८, २७ आदि) विशेष महत्वपूर्ण जावें तो समझिये कि उनका जीवन काफ़ी संघर्ष-मय रहेगा और उनके आवश्यकता से अधिक शत्रु रहेगे । ऐसे व्यक्ति पुलिस, फौज आदि साहस के कार्य में विशेष सफल होते हैं । इन्हे सब प्रकार की दुर्घटनाओं (सवारी से टक्कर लगना

1 You & Your Birth Star by Cheiro

अंद्रेयों को यह पुस्तक बहुत विरत और पढ़ने योग्य है ।

जाना, घोट लगना आदि) से विशेष सतकं रहना चाहिये । अपने घर में तथा बाहर भी भगड़े से बचना चाहिये—क्योंकि ६ मूल अंक वाले को शीघ्र क्रोध आजाने से वह भगड़ा करने पर आमादा हो जाता है । यह लोग असहिष्णु होते हैं और अपनी आलोचना वर्दीक्षण नहीं कर सकते ।

इन लोगों में प्रबन्ध शक्ति अच्छी होती है । प्रेम-पात्र के लिये यह राव कुद्ध बलिदान कर सकते हैं । यदि कोई स्त्री इनसे प्रेम का अभिनय करे तो इन्हें काफी वेवकूफ बना सकती है—इस कारण इन्हें इस ओर से सावधान रहना चाहिये ।

'६' मूल अंक वाले व्यक्ति यदि अपने स्वभाव पर संयम रखते तो काफी भाग्यशाली हो सकते हैं । इन्हें ६ के अतिरिक्त ३ तथा ६ का अंक भी शुभ होता है । और मंगल, वृहस्पतिवार तथा शुक्रवार शुभ होते हैं । इसलिये सर्वप्रथम तो इन्हें किसी भी महीने की ६ या १८ या २७ वीं तारीख महत्वपूर्ण कार्य के लिये चुननी चाहिये । यदि उस दिन मंगलवार का दिन पड़े तो और भी अच्छा है । विशेष कर यदि २१ मार्च से २७ अप्रैल तक या २१ अक्टूबर से २७ नवम्बर तक—इस वीच में ६, १८, या २७ ता० और मंगलवार का योग हो तो विशेष श्रेयस्कर है ।

६ मूल अंक के अतिरिक्त, इन्हें ३ तथा ६ के अंक भी शुभ जाते हैं—इस कारण किसी भी महीने की ३, १२, २१, ३० तथा ६, १५ एवं २४ तारीखों की भी परीक्षा करनी चाहिये कि कौनसी जाती है । ३ या ६ के अंकों में जो (दोनों) अच्छे जावे उन्हें विशेष व्यवहार में लाना चाहिये । गुलाबी तथा गहरे लाल रंग इन्हें विशेष शुभ होंगे ।

जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष

६ मूल अंक वाले व्यक्तियों के जीवन में ६ वाँ, १८ वाँ, २७ वाँ, ३६ वाँ, ४५ वाँ, ५४ वाँ, ६३ वाँ तथा ७२ वाँ वर्ष अवश्य महत्वपूर्ण जावेगा। इसके अतिरिक्त जिनको ३ की संख्या अनुभव से शुभ हो उन्हें ३ रा, १२ वाँ, २१ वाँ, ३० वाँ ३६ वाँ ४८ वाँ, ५७ वाँ तथा ६६ वाँ वर्ष भी महत्वपूर्ण होगा। तथा जिनको ६ का अंक शुभ जाता हो, उन्हें जीवन का ६ ठा, १५ वाँ, २४ वाँ, ३३ वाँ, ४२ वाँ ५१ वाँ ६० वाँ तथा ६६ वाँ वर्ष भी शुभ जावेगा।^१

१. २४ वें, ३६ वें, ४२ वें एवं ४८ वें वर्ष पर फलाः चन्द्र, राति, राहु एवं केतु का विद्योप प्रभाव रहता है। यतः जिनको जग्म शुभतियों में इन चारों में से जो प्रह प्रस्तुते पड़े हैं उन्हें वह वर्ष प्रस्तुत जावेगा—तथा जिनको जग्म शुभतियों में पह प्रह भनिष्ट राति या भाष्म में है उन्हें पह वर्ष प्रस्तुत जावेगे। यह भारतीय व्योतिय का यत है।

४ था प्रकरण

संयुक्त-अंक

पिछले प्रकरण में जन्म तारीख से मूल-अंक निकालने की विधि बताई गई है—और इस प्रकार जन्म की अंग्रेजी तारीख के आधार पर, शुभ वर्ष, शुभ दिन, शुभ मास, शुभ तारीखे तथा किन तारीखों को उत्पन्न मनुष्यों से विशेष मैत्री या सद्भाव होगा, इसका निर्णय करना बताया गया है।

अब एक कदम आगे चलिये। कुछ प्रसिद्ध अंग्रेज ज्योतिषियों का यह निकर्प है कि केवल जन्म की तारीख से जो मूल अंक बनाया जाता है उससे उतना सही पता नहीं लगता जितना संयुक्त 'अंक' से। संयुक्त का अर्थ होता है संयोग करना, जोड़ना—प्रथम् जन्म की अंग्रेजी ता० अंग्रेजी महीना तथा अंग्रेजी सन् तीनों की विविध संख्याओं को जोड़ कर 'संयुक्त' अंक बनाया जाता है।

इसको डा० यूनाइट कॉस द्वारा दिये हुए उदाहरण से स्पष्ट किया जाता है:—

मान लीजिये कोई व्यक्ति २६ दिसम्बर सन् १८८८ को पैदा हुआ।

इनकी 'Number तथा Please 'The Payohology of Fate' दोनों पुस्तकों पढ़ने योग्य हैं। दोनों में अंक ज्योतिष से सम्बन्धित अनेक विषय हैं।

$$\begin{array}{rcl}
 \text{तारीख} & २६=२+६ & =११=१+१=२ \\
 \text{महीना} & १२=१+२ & = ३ = ३ \\
 \text{सन्} & १९६६=१+९+६+६ & = २५=२+५=७ \\
 & & \hline
 & & १२=१+२=३
 \end{array}$$

तारीख, महीने तथा सन् की संख्याओं को जोड़ने से १२ की संख्या आई। इसकी दोनों संख्याओं को जोड़ने से ३ की संख्या आई।

डॉ यूनाइट कॉर्स के मतानुसार इस संयुक्त अंक का बहुत महत्व है। वह तो इसको इतना अधिक महत्व देते हैं कि उन्होंने इस अंक का नाम 'भार्या का चामत्कारिक अंक' रखा है। उनके अनुसार इस अंक का जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। उन्हीं के शब्दों में सुनिये : "एक युवती का जन्म २० मई १९६० को हुआ। २०+५-१९६० के अंकों को जोड़ने से २+०+५+१+६+६+०=२५=२+५=७ भार्यांक आया। वचपन में 'प्रायः जीवन सम्बन्धी विशेष घटनाएँ नहीं घटित होतीं—इस कारण स्कूल में अध्ययन पूरा करने के बाद की घटनाओं का सिंहावलोकन किया जाता है :

भार्यांक ७

| | |
|------------------------------------------------------|---|
| स्कूल छोड़ा १६०६ (७) — जब उम्र थी १६ (७) | ७ |
| उसी वर्ष अपने भाई के साथ जुलाई (७) में | — |
| आस्ट्रेलिया गई | ७ |
| उसका भाई सिडनी में, सड़क पर, दुर्घटना घट्ट हुआ | — |
| २५-५-१६०६ (२+५+५+१+६+०+६)=७ | ७ |

आग लगने से २२-१२-१६०८ को सम्पत्ति नष्ट हुई
 $(2+2+1+2+1+6+0+8=25=2+5=7)$ ७
 १७-४-१६१२ को विवाह हुआ
 $(1+7+4+1+6+1+2=25=2+5=7)$ ७
 ताहे ७-४-१६१३ को पुत्र उत्पन्न हुआ
 $(7+4+1+6+1+3=25=2+5=7)$ ७
 पति १०-८-१६१५ को फौज के हवाई बैडे में मारा गया
 $(1+0+8+1+6+1+5=25=2+5=7)$ ७
 उसी वर्ष की जुलाई (७) में चाचा
 के मरने पर बहुत धन प्राप्त हुआ
 जुलाई (७) १६२४ (७) को ३४ (७)
 वर्ष की उम्र में इंगलैण्ड वापिस आई ७

भार्याके का उदाहरण

स्वर्गीय डब्ल्यू० ई० ग्लेडस्टन (जो इंगलैण्ड के प्रधान मंत्री थे) का
 जन्म दिन २६-१२-१८०६
 $(2+6+1+2+1+8+0+6=32=3+2=5)$ ५
 १८३२ में प्रथमवार पालियामेंट में चुने गये
 $(1+8+3+2=14=1+4=5)$ ५
 उनकी उम्र उस समय २३ साल की थी
 $(2+3=5)$ ५
 प्रथमवार ५० मिनिट तक भाषण दिया
 $(5+0=5)$ ५

८८७ वीट प्राप्त हुए (८+८+७=२३=२+३=५)
..... ५

मा की मृत्यु २३ ता० को हुई
(२+३=५) ५

२३ वीं तारीख को चांसलर आवृ दि एक्सचेकर हुए
२३ 'वीं' तारीख को उपनिवेश-संचिव हुए

फ्रीडम आवृ ग्लासगो १-११-१८६५ को प्राप्त हुई
(१+१+१+१+८+६+५=२३=२+३=५) ५

फ्रीडम आवृ हब्लिन ७-११-१८७७ को प्राप्त हुई
(७+१+१+१+१+८+७+७)=३२
=३+२=५ ५

१८६८ में इंग्लैण्ड के प्रधान मन्त्री हुए
(१+८+६+८+८=२३=२+३=५) ५

उनकी आयु उम्र समय ५६ थी
(५+६=११=१+४=५) ५

२-७-१८८६ को मिडलोयिन-तया लीय को वापिस आये
(२+७+१+८+५+६=३२=३+२=५) ५

२०-७-१८८६ को त्याग पत्र दिया
(२+०+७+१+८+८+६=३२=३+२=५) ५

१६ - ५ - १८६८ को मृत्यु हुई
(१+६+५+१+८+६+८=४१=४+१=५) ५

२८ - ५ - १८६८ को दफनाये गये
(२+८+५+१+८+६+८=४१=४+१=५) ५

मूरोप के मध्ययुगीय इतिहास में भी इस प्रकार के उदाहरण उपलब्ध होते हैं। जिन्हें अभिरुचि हो वे कृपया निम्नलिखित पुस्तकों का अवलोकन करें^१ :

प्रोफेसर केल्सैरड ने अपनी पुस्तक^२ में सर एडवर्ड क्लाकं के जीवन की घटनाओं से एक अन्य उदाहरण संकलित किया है। इसमें बारंबार '४' तथा '८' की संख्याएं आती हैं।

भाग्यांक ४

जन्म की तारीख १५-२-१८४१

(१+५+२+१+८+४+१=२२=२+२=४) ४

१३ वर्ष की उम्र में स्कूल छोड़ा (१+३=४) ४

अपने पिता के पास ४ वर्ष काम किया ४

स्वयं अपना काम स्वतन्त्र रूप से सन् १८५८ में प्रारम्भ ४

किया (१+८+५+८=२२=२+२=४) ४

१७ वर्ष की उम्र में (१+७=८) ८

प्रारम्भिक वेतन हुआ ८० पौंड (८+०=८) ८

जब १७-११-१८६४ को वह वैरिस्टर हुए तो उनकी ४

चिरकांशित इच्छा की पूर्ति हुई (१+७+१+१+ ४

१+८+६+४=२६=२+६=११=१+१)=२ २

1. "Research in the Efficiency of Dates and Names in the Annals of Nations" तथा Curious Myths of Middle Ages.

2. Harmony in Number, Name and Colour.

विवाह २६-१२-१८६६ को हुआ

$$(2+6+1+2+1+6+6+6=35 \\ = 3+5=8)$$

जब उनको अवस्था २६ साल की थी।

३१:वर्ष की अवस्था में वे मेसन हुए

केलिडोनिया लौज नं० १३४ में प्रविष्ट हुए

$$(1+3+4=8)$$

साउथवर्क थोश से पार्लिमेण्ट का 'चुनाव' लड़ने के लिये

टिकट मिला १३-२-१८७६।

$$(1+3+2+1+5+7+6=31=3+1=4)$$

सन् १८८० में चुने गये

$$(1+6+6+0=17=1+7=8)$$

पॉलियामेण्ट में शार्पथ ग्रहण की

$$\text{ता० } 16-2-1880 = (1+6+2+1+6+6+0 \\ = 26=2+6=8)$$

ता० २-११-१८०८ को प्रिवोकांसिल के सम्बर बनाये गए

$$(2+1+1+1+6+0+6=23=2+2=4)$$

इनके दो बच्चे थे

इनके दो पत्नियाँ थीं

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होगा कि सर-एडवर्ड ब्लार्क के जीवन में उनका भार्यांक (संयुक्त-अंक) ४ 'वारंवीर' अपना 'प्रभाव' दिखाता था किन्तु '२' तथा '८' की संख्या भी 'उनके जीवन से सम्बद्ध थीं। डॉ० 'यूनाइट क्रीस के मैत्रानुसार अंक' ४ की २ तथा

८ से सहानुभूति है - Richard Wagner नामक एक अन्य व्यक्ति ने जीवन से सम्बन्धित '१३' एवं '४' के अंक की प्रधानता निम्नलिखित विवरण से स्पष्ट होगी : -

नाम के अंग्रेजी अक्षरों की संख्या = १३, ११ + १०, ११ = ३४

$$23 = 2 + 3 = 8$$

सन् १८१३ में पैदा हुआ = १८१३ में पैदा हुआ =

$$(1+5+1+3=9; 1+3=4) \quad \therefore \quad = 8$$

१३ वर्ष की अवस्था में स्कूल छोड़ा = १३

१३ दुःखान्त संगीतमय नाटक लिखे = १३ : १००० रुपये = ४

१३ स्त्रियों से अपने जीवन में प्रेम किया = १३ = ४

इसका टाइटल Kapellmeister था जिसमें १३ अक्षर हैं = १३ = ४

१३ फरवरी १८८३ को मृत्यु हुई।

$$(2+3+3+2+5+5+3)=23+23=46$$

उसकी पली की १६३० में मृत्यु हुई

$$(2+6+3+9=20) \quad \text{and} \quad 20 = 2 \times 10$$

उसके इवसूर का नाम था।

Franz Von Liszt (१३ अक्टूबर) = १३ = ४

उसके दो नाटक १३ को प्रारम्भ हुए

$$\text{और } 13 \text{ को ही समाप्त हुए} \quad = 13 \quad = 8$$

तीन नाटकों का प्रथम अभिनय

१३ तारीख को प्रारम्भ हुमान :] : : = १३.८.१९८२ =
— ते — ते — अधिकारी संस्कार (१९८२) वा वार्षिक

उसके ग्रन्थों का साम्मानित संस्करण (१९१२) ।

$$\therefore (1+6+1+2=13) \therefore 1+6+1+2=13 \therefore = 8$$

प्रन्थों का सम्मिलित संस्करण

प्रकाशित होना १६३० में समाप्त हुआ

11

11

माता का नाम Johanna Wagner

था, इसमें १३ अक्षर हैं)

二〇

≡χ

डा० यूनाइट क्रोस के मतानुसार निम्नलिखित भाग्यांकों (संयुक्त-अंकों) की सहानुभूति उनके सामने लिखे अंकों से है :—

भारत्यांक

सहानुभूतिवाले अंक

३, ५ तथा ७

४ तथा ५

१, ५, प्रौर ७, ६ तया ६

२५८

१, ३ तथा ७ (अमीर १०)

३ तथा ६

३. तथा ५

२० तथा ४

३ तथा ६

डॉ. यूनाइट कौस के भत्तानुसार भिन्न-भिन्न भागों (या संपुक्त-ग्रंथ) वाले व्यक्तियों को निम्नलिखित ईसवी वर्ष महत्वपूर्ण गए होंगे या जावेंगे :—

भाग्य वर्ष

भाग्यांक १ को

भाग्यांक २ को

भाग्यांक ३ को

१६०६

१६१०

१६११

१६१८

१६१६

१६२०

१६२७

१६२८

१६२६

१६३६

१६३७

१६३८

१६४५

१६४६

१६४७

१६५४

१६५५

१६५६

१६६३

१६६४

१६६५

१६७२

१६७३

१६७४

१६८१

१६८२

१६८३

भाग्य वर्ष

भाग्यांक ४ को

भाग्यांक ५ को

भाग्यांक ६ को

१६१२

१६१३

१६१४

१६२१

१६२२

१६२३

१६३०

१६३१

१६३२

१६३६

१६४०

१६४१

१६४८

१६४६

१६५०

१६५७

१६५८

१६५६

१६६६

१६६७

१६६८

१६७५

१६७६

१६७७

१६८४

१६८५

१६८६

पुस्तक

भाग्य वर्ष

| भाग्यांक उक्तो | भाग्यांक द वर्षों | भाग्यांक ६ की |
|----------------|-------------------|---------------|
| १६०६ | १६०७ | १६०८ |
| १६१५ | १६१६ | १६१७ |
| १६२४ | १६२५ | १६२६ |
| १६३३ | १६३४ | १६३५ |
| १६४२ | १६४३ | १६४४ |
| १६५१ | १६५२ | १६५३ |
| १६६० | १६६१ | १६६२ |
| १६६९ | १६७० | १६७१ |
| १६७८ | १६७६ | १६८० |

यह स्मरण रखना, चाहिए इस परिच्छेद में जिस भाग्यांक के अनुसार शुभाशुभ के लिए उपयुक्त वर्ष महत्वपूर्ण बताए हैं वह "भाग्यांक" — जन्म तारीख, महीना तथा सन् की संख्या के सब अंकों को जोड़ कर निकाला जाता है।

उदाहरण के लिये महात्मा गांधी का जन्म २-१०-१८६६ को हुआ था।

जन्म तारीख = २

जन्म मास अक्टूबर = १० = १ + ० = १

जन्म वर्ष १८६६

$(1+8+6+6=24=2+4=6) = 6$

योग

इस पद्धति से महात्मा गांधी जी का संयुक्त अंक ६ प्राप्त। इसी प्रकार अन्य व्यक्तियों की जन्म तारीख, जन्म मास तथा इसी वर्ष की संख्या जोड़कर संयुक्त अंक बनाया जा सकता है।

तथा यून तारोकों का फोल्ड विष

| भाग्यांक | यून वार | यून वार | यून वार | यून तारोक |
|----------|----------------------|-------------------------|-------------------------------------|-----------|
| १ | राववार, यूहस्तित्वार | जनवरो, याचे, महे, | ११, १०, ११, २८ | यून तारोक |
| २ | सोमवार, यूप्तवार | जूताई, धोर इत्युवार | — | — |
| ३ | मंगलवार, यूक्षवार | फरवरो, ध्रुवेत, यात्ता, | २, ४, ८, ११, १६, २०, २१, २५, ३८, ३९ | — |
| ४ | मंगलवार, यूक्षवार | याचे, मई, जूताई, जूत, | ३, ६, ८, १०, १५, १८, २१, २४, ३७, ३९ | — |
| ५ | मंगलवार, सोमवार | ध्रुवेत, फरवरो धोर | २, ४, ८, ११, १६, २०, २१, २६, ३१ | — |
| ६ | मंहस्तित्वार, शनिवार | महे, जनवरो, याचे, जूताई | ५, १०, १५, १६, २३, २५, २८ | — |
| ७ | मंगलवार, यात्तवार | जून, सितम्बर | ६, ८, १५, १८, २४ | — |
| ८ | शनिवार, यूहस्तित्वार | जूताई, जनवरो, माहे | ७, १५, १६, २५, २८ | — |
| ९ | सोमवार, यूप्तवार | मार्गल, फरवरो, ध्रुवेत, | ४, ८, ११, १५, २८ | — |
| १० | मंगलवार, यूक्षवार | तित्पंचद, याचे, जून | ६, १५, १८, २५, २७ | — |

पृष्ठ ६६ पर कोष्ठचित्र अंगरेजी^३ की पुस्तक से दिया गया है। जो तारीखें रेखांकित हैं उन्हें विशेषतया अनुकूल समझना चाहिये। इसके अतिरिक्त किस भाग्यांक की किस अंक से सहानुभूति है यह पहिले बताया जा चुका है (देखिये पृष्ठ ६३), उसके अनुसार भी गत जीवन की घटनाओं से अनुमान लगाना चाहिये कि कौन सा अंक विशेष शुभ जाता है।

श्री हेलिन हिचकौक ने भाग्यांक से शुभाशुभ वर्ष, मास तथा दिन निकालने का, तथा कौन सा दिन किस कार्य के लिये विशेष उपयुक्त होगा इसका विशद वर्णन किया है। इस विषय में विशेष अभिरुचि रखने वाले उनकी पुस्तक^२ के पृष्ठ ६६ से १२१ पहें तो जानवृद्धि होगी। किन्तु इन पैकितायों के लेखक के मतानुसार अंक ज्योतिष-विद्या के मूल सिद्धान्तों को इतनी सरल रीति से कार्य में लाना चाहिये कि हम लोग उसका दैनिक ध्यवहार में उपयोग लाकर लाभ उठा सकें। इसलिये हमारे मतानुसार सर्व प्रथम जन्म की तारीख के अनुसार तृतीय प्रकरण में जो नियम बताये गये हैं, उनका अनुशीलन और ध्यवहार विशेष उपयोगी होगा।

अंक विद्या और यंत्र

यह बात नहीं है कि केवल पास्चात्य ज्योतिषियों ने ही अंकों को शुभ या अशुभ माना है। कुछ अंकों को यां अंकों के सम्बों को

1. "Psychology of Fate" Published by Herbert Jenkins Ltd. 3 York Street, St. James. London S. W. 1.

2. "Your Number, Please" by Helynn Hitchcock 'A.' B. Published by W. H. Allen & Co : Ltd. 43 East Street Strand London W.C. 2.

अनादि काल से शुभ मानने की परम्परा भारतवर्ष में भी चली आई है। 'सेफ़ेरियल नामक अंगरेज ज्योतिषी^१ ने लिखा है कि ६ वर्गों को ६ कोण्ठों में निम्नलिखित प्रकार से लिखना 'पूर्णता' का प्रतीक है देखिये (क) तथा (ख) :—

(क)

(ख)

(ग)

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ६ | २ | ३ | १ | ६ | ८ | १ | ६ |
| ३ | ५ | ७ | ६ | ७ | ५ | ३ | ५ | ७ |
| ८ | १ | ६ | २ | ८ | ४ | ४ | ६ | २ |

उनके विचार से यह 'पूर्णता अथवा ईश्वर' का प्रतीक है। परन्तु हम भारतीय इसे—देखिये (ग)—इस प्रकार लिखने के सदैव से अभ्यासी रहे हैं और प्रायः इस प्रकार का अंक-कोण्ठ चित्र दुकानों के मुख्यद्वार के पास भी ऋद्धि, सिद्धि, तथा धन की पूर्णता के लिये बना दिया जाता है। यद्यपि अंगरेज ज्योतिषी इसे 'शनि' से सम्बन्धित मानते हैं किन्तु भारतीय ज्योतिष के अनुसार यह १५ का यंत्र, (इसकी संख्याओं को किसी ओर से जोड़िये योग १५ ही होगा) ग्रहराज 'सूर्य' का प्रतीक है। भारतीय ज्योतिष तथा मंत्रशास्त्र में इन 'यंत्रों' का उपयोग अनेक काम्य तथा आपृति-निवारक प्रयोगों में किया जाता है और विधि पूर्वक केसर आदि सुगंधित द्रव्यों से भोज पत्र पर लिखकर—सोने, चांदी या ताँबे के ताबीज में बन्द कर शरीर पर धारण करने से शुभ प्रभाव दिखाता

है। इसके विस्तृत विवरण के लिये ‘यंत्र चिन्तामणि’ तथा अन्य मंत्रशास्त्र के ग्रन्थ देखने चाहियें। पीछे (क) या (ख) में जो यंत्र दिया गया है, उससे भिन्न भारतीय शास्त्रानुसार १५ का यंत्र होता है। ३ नीचे नवों ग्रहों के यंत्र दिये जाते हैं:—

सूर्य का यन्त्र चन्द्र का यन्त्र मंगल का यन्त्र

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|----|---|---|----|----|
| ६ | १ | ८ | ७ | २ | ६ | ८ | ३ | १० |
| ७ | ५ | ३ | ८ | ६ | ४ | ६ | ७ | ५ |
| ८ | ६ | ४ | ३ | १० | ५ | ४ | ११ | ६ |

शास्त्रकार इन्हे बनाने वी पढ़ति—किस अंक को कही लिखना यह बताकर लिखते हैं “रसेन्दुनार्गा”... विलिख्य धार्य गदभाशनाय वदन्ति गर्गादि महामुनीन्द्राः”। अर्थात् इसको धारण करने से रोगादि उत्पात शांत होते हैं, ऐसा गर्ग आदि महा मुनीन्द्रों का कथन है। ‘नगद्विनन्दा’... चन्द्रकृतारिष्ट विनाशनाय धार्य मनुप्यः शशियंत्रभीरितम्’ अर्थात् चन्द्रमा जनित पीड़ा को दूर करने के लिये इस चन्द्रमा के यंत्र को धारण करना चाहिये। ‘गजाग्निदिश्याय’... भीमस्य यंत्रं क्रमतो विधायं मनिष्टनाशं प्रवदन्ति गर्गः।। अर्थात् जब गोचर से या अनिष्ट राशि या स्थान में होने से मंगल अपनी दशा, अन्तर्दशा में पीड़ा करे या सन्तानकष्ट, रक्त विकार आदि मंगल जनित दुष्प्रभाव हो तो इस यंत्र के धारण से लाभ होता है।

बुध का यंत्र

बृहस्पति का यंत्र

शुक्र का यंत्र

| | | |
|----|----|----|
| ६ | ४ | ११ |
| १० | ८ | ६ |
| ५ | १२ | ७ |

| | | |
|----|----|----|
| १० | ५ | १२ |
| ११ | ६ | ७ |
| ६ | १३ | ८ |

| | | |
|----|----|----|
| ११ | ६ | १३ |
| १२ | १० | ८ |
| ७ | १४ | ६ |

‘नवाब्दिं रुद्रा विलिख्य धार्य गदनाशहेतवे वदन्ति यंत्रं। शशिजस्य धीराः ।’ यदि बुध जनित—रोग, पित्त प्रकोप, चर्मरोग, व्यापार में हानि, मित्रों से विरोध आदि दुष्ट फल घटित हो रहे हों। और उनका कारण बुध ग्रह का अनिष्ट प्रभाव हो तो इस यंत्र को धारणे करे। “दिंवाणसूर्यं शिवं विलिख्य धार्यं गुरुर्यन्त्रमीरिनं रुद्रं विनाशाय वदन्ति तद्बुधाः ।” अर्थात् गुरु गोचरवशं यां महादशावंशं रोग आदि कष्ट कर रहे हों तो इस यंत्र को धारणे करने से शांति होती है। “गुरुं बृहस्पति को कहते हैं।” “रुद्रांगं विश्वेषं भूगोः कृतारि विनाशनाय धार्यं” हि यंत्र मुनिना प्रकीर्तिं अर्थात् शुक्र जनित पीड़ा (विशेषकर बीमं सम्बन्धी रोग, लक्ष्मी को हानि, स्त्रो सुखं होनि) को दूर करने के लिये यह यंत्र बहुत उपकारी है। “गनि का यंत्र” “राहु का यंत्र” “केतु का यंत्र”

| | | |
|----|----|----|
| १२ | ७ | १४ |
| १३ | ११ | ६ |
| ८ | १५ | १० |

| | | |
|----|----|----|
| १३ | ८ | १५ |
| १४ | १२ | १० |
| ६ | १६ | ११ |

| | | |
|----|----|----|
| १४ | ६ | १६ |
| १५ | १३ | ११ |
| १० | १७ | १२ |

“अर्काद्वि……विलिख्य भूजोनरिद्धार्य विद्वत् शने: कृतारिष्ट-निवारणाय”। भोज पत्र पर लिखकर इसे धारण करना चाहिये। शनि के महाप्रकोप से कौन ब्रह्मत नहीं होता ? ‘सादेसाती शनि’ किसे परेशान नहीं करती ? अनिष्ट शनि की दर्शा, “अन्तर्दंशा तो मानहानि, द्रव्यहानि, शारीरिक बलेश, मानसिक श्रास, अनेक व्याधि उत्पन्न करती है। उसको शान्त करने के लिये अंक-विद्या, यंत्र विद्या का आश्रय लेना उचित है। राहु के लिये लिखते हैं ‘विश्वाष्ट तिथ्या……विलिख्य यंत्रे सततं विधार्य’ राहोः कृतारिष्ट निवारणाय।” राहुजनित पीड़ा को दूर करने के लिये इसे सदैव धारण करना चाहिये। ‘मनुखेचर भूपा……दुखनाशकरा:’ यह केतु का यंत्र बनाने और धारण करने का विधान बनाया है।

उधर अंगरेज ज्योतिषी जिस यंत्र को बहुत धोड़े से शब्दों में बताते हैं—‘वही वात हमारे आपेक्षन्यों में सुर्पष्ट और विस्तृत रूप से मिलती है। हमारे प्राचीन क्रृष्णियों ने कहे ‘यह जाति किया कि इन अंकों को इस क्रम से लिखने से विशेष शक्ति या प्रभाव उत्पन्न होता है इसका रहस्य हमारी समझ से बाहर है। उनको योगिक शक्ति और कृतभरा प्रकार से इस प्रकार का जान समव था। हम तो केवल उनके चरण चिह्नों का अनुसंरण कर सकते हैं और अंक-विद्या से लाभ उठा सकते हैं।

५८० प्रकरण

‘नाम’ और अंक विद्या का सम्बन्ध

सभी देशों में मनुष्य के नाम का विशेष महत्व माना गया है। कुछ देशों में सम्राट् या राजा के नाम के लिये कुछ नाम विशेष निर्धारित कर दिये जाते हैं और वारंवार उन्हीं नामों की पुनरावृत्ति होती रहती है। यथा जार्ज प्रथम, जार्ज द्वितीय आदि। जयपुर राज्य में भी यही क्रम था; माधव सिंह जी प्रथम, माधव सिंह जी द्वितीय आदि। दक्षिणी भारत में कुछ कुटुम्बों में प्रथा है कि जो नाम बाबा का होता है वही ज्येष्ठ पोता का। भारत के कुछ भागों में यह प्रथा प्रचलित है कि विवाह के उपरान्त कन्या के वैयक्तिक नाम का भी परिवर्तन कर दिया जाता है। पत्नी का कीटुम्बिक नाम (सरनेम) तो पादचात्य देशों तथा पूर्वी देशों में बदला ही जाता है किन्तु जैसा ऊपर बताया गया है कुछ प्रान्तों में कन्या का पितृ गृह का नाम सर्वथा परिवर्तित कर उसका नवीन नाम रख दिया जाता है। इस नवीन नाम की योजना का अन्तर्गत भाव यह होता है कि नवीन नाम, पति के नाम के अनुकूल हो। इस कारण यदि पति का नाम हुआ हर्ष, सिंह तो पत्नी का नाम करण किया जायेगा हर्षप्रिया, हर्षलता या अन्य इसी प्रकार का नाम।

भारतीय पढ़ति के अनुमार नाम के प्रथम अक्षर का विशेष महत्व है। इससे राशि तथा नक्षत्र का निर्णय किया जाता है। नाम का प्रथम अक्षर ही “वर्ण स्वर” मादि का आधार है। इस

कारण पली के नवीन नाम का प्रथम शब्द भी—यदि वही हो जो पति के नाम में प्रथम शब्द है—तो दोनों में प्रेम रहेगा । पली के नवीन-नाम-करण का यही सिद्धान्त है ।

यहूदियों में प्रथा है कि जब मनुष्य मरने लगता है तो उसके सम्बन्धी दोड़कर मन्दिर में जाते हैं और रोगी के नाम का परिवर्तन कर दिया जाता है—इस आशा से कि शायद नाम बदलने से—प्राचीन नामजनित दुष्प्रभावों का अन्त हो जावे और बीमार बच जावे ।

संभवतः सन्यास लेते समय जो नाम बदलने की प्रथा है उसमें भी यह सिद्धान्त निहित है कि गार्हस्थ्य जीवन के नाम से संदिलष्ट सब संस्कार और वासनाएँ सदा के लिये छूट जावें । भारत में दो नामों की प्रधानता है । एक राशि नाम की; दूसरे प्रचलित नाम की । राशि का नाम जन्म नक्षत्र के चरण के अनुसार रखता जाता है और प्रचलित नाम वह है जो लोकव्यवहार में प्रचलित रहता है । इस पुस्तक में वारंवार जहाँ 'नाम' की चर्चा आती है वहाँ कौन सा नाम समझा जावे यह शंका होना स्वभाविक है । इस सम्बन्ध में शास्त्रीय मत निम्नलिखित है^१ :—

विवाहे सर्वमाज्जल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे

जन्मराशोः प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत् ।

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके

नामराशोः प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत् ।

अर्थात् सर्व मंगलकार्यों में, यात्रा में, ग्रहगोचर दिवार में जन्म

१. ज्योतिर्निबन्ध (प्रानन्दाधम पूना से प्रकाशित) पृ० १६

राशि की प्रधानता है 'नाम' की राशि का विचार न करे । देश, ग्राम, गृह, युद्ध, सेवा (नौकरी), व्यवहार ('मुकदमा या व्यापार') में प्रचलित नाम से ही राशि का विचार करे—जन्म 'राशि' का विचार न करे । "राजमार्तंण्ड" के अनुसार—जिसकी जन्म राशि मालूम न हो उसके सब विचार में प्रचलित नाम से ही राशि का विचार करे । "दीपिका" का भी यही भत है । "जन्म न जायते येषां तेषां नाम्नो गवेष्यते ।" १

सिद्धान्त यह है कि जहाँ 'जन्मनाम', यह विशेष निर्देश किया हो वहाँ जन्म कुंडली का 'नाम' समझना चाहिये अन्यथा प्रसिद्ध नाम ग्रहण करना चाहिये । किसी भनुष्य के कई प्रसिद्ध नाम हों तो किसका ग्रहण करना—इसके सम्बन्ध में शास्त्रीय व्यवस्था यह है कि सोता हुआ भनुष्य जिस नाम से जग जावे वह प्रधान है ।

प्रसुप्तो येन जागति, येनागच्छति । शब्दितः ।
तन्माम्नश्चादिमो वर्णो ग्राह्यस्तस्माद् भ निर्णयः ॥ २ ॥

राशि, वर्ण स्वर आदि में नाम का प्रथम भक्तर ही लिया जाता है (जैसे किसी का नाम है "राम कृष्ण" तो 'नाम का प्रथम अक्षर 'रा' होने से उसकी राशि तुला, वर्ण स्वर 'ए', आदि) किन्तु अब नीचे पाश्चात्य श्रांक-विद्या के जिस सिद्धान्त ३ से परिचय कराया जाता है उसके अनुसार सम्पूर्ण नाम की संख्या बना कर शुभाशुभ

१. देतिए नरपति जयचर्या द्वार्पाल २ (पृ० १५) ।

२. देतिये Your Number, Please by Helyn Hitchcock A.B.
पृ० ११ तथा Numerology for Every body by Moutrose पृ० ४

विचार किया जाता है। अंगरेजी वर्णमाला में २६ वर्ण हैं। नीचे प्रत्येक वर्ण तथा उसका “अंक” (संख्या में मान) दिया जाता है:—

कोरो का मत

| | | |
|-------|-------|-------|
| A = १ | J = १ | S = ३ |
| B = २ | K = २ | T = ४ |
| C = ३ | L = ३ | U = ६ |
| D = ४ | M = ४ | V = ६ |
| E = ५ | N = ५ | W = ६ |
| F = ६ | O = ७ | X = ५ |
| G = ३ | P = ८ | Y = १ |
| H = ५ | Q = १ | Z = ७ |
| I = १ | R = २ | |

कुछ अंग्रेजी, अंक-विद्या के विद्वानों को ऊपर जो ‘कोरो’^१ का मत दिया गया है वह मान्य नहीं है। उनके मत उपर्युक्त मत से भिन्न हैं। जिन्हें इस विषय में विशेष गवेषणा की इच्छा हो वे कृपया टिप्पणी में दिये गये मतों का अवलोकन करें।^२

उदाहरण

मान लीजिये हमें ‘जवाहर लाल नेहरू’ इस नाम की पाश्चात्य अंक-विद्या के अनुसार संयुक्त संख्या बनानी है, तो इस प्रकार बनाइये: —

१. Cheiro's Book of Numbers पृ० १०५

२. देखिये “Your Number Please” पृ० १६,

The Kabala of Numbers पृ० ७७ तथा द३,

| | |
|-------|-------|
| J = १ | N = ५ |
| A = १ | E = ५ |
| W = ६ | H = ५ |
| A = १ | R = २ |
| H = ५ | U = ६ |
| A = १ | |
| R = २ | |
| L = ३ | |
| A = १ | |
| L = ३ | |
| | २४ |

“जवाहरलाल” इस नाम का अंक हुमा “२४” तथा “नेहरू” इस नाम का “२३”। दोनों मिल कर “४७” हुए। इस प्रकार हम प्रत्येक नाम को संख्या (संयुक्तांक) में परिवर्तित कर सकते हैं। इसके अन्य उदाहरण आगे दिये जावेंगे। किन्तु उदाहरण देने के पहिले यह बताना आवश्यक है कि ‘नाम’ को ‘संख्या’ (संयुक्तांक) में ‘परिवर्तन’ करने की उपयोगिता क्या है। अर्थात् इस पढ़ति से क्या-क्या विचार किया जाता है।

प्रयोजन :

नाम की ‘संख्या’ निम्नलिखित विचारों में आवश्यक होती है :

- (१) नाम शुभ है या नहीं ? क्या ‘नाम’ बदलने की आवश्यकता है ?
- (२) नाम जन्म तारीख के अनुकूल है या नहीं ?

(३) नाम के संयुक्तांक के अनुसार, कौन सी तारीख महत्वपूर्ण कार्य के लिये उपयुक्त होगी ?

इन तीनों विषयों पर आगे कमशः विचार किया जावेगा । किन्तु उसके पूर्व यह बताना आवश्यक है कि पाश्चात्य अंक-विद्या-विद्यारादों ने किस 'संख्या' का क्या लक्षण और प्रभाव माना है । १ से लेकर ६ तक के अंकों के लक्षण और प्रभाव पहिले बताये जा चुके हैं । अब, आगे १० से ७० तक की प्रत्येक संख्या के लक्षण और प्रभाव बताये जाते हैं ।

इन 'अंकों से (१० से सेकर ७० तक) 'प्रश्न' विचार भी किया जाता है । इस विषय का विवेचन आगे प्रश्न लंड में किया जावेगा । '१०' से '७०' तक संख्या का गृण तथा प्रभाव :

पाश्चात्य अंक विद्यावेताहारों ने '१०' से लेकर '७०' तक संयुक्त नामाधारों के 'अंक' का फल निर्देश किया है । वह संक्षेप में निम्न लिखित है :

१०. यह प्रतिष्ठा तथा आत्म विश्वास का अंक है । इस अंक वाला व्यक्ति, अपनी इच्छानुसार-तुराई या भलाई के लिये सुविध्यात होगा । इस व्यक्ति के इरादे पूरे होते हैं ।

११. यह अंक शुभ नहीं । ऐसे व्यक्ति को अन्य लोगों से भय, दगावाजी आदि की आशंका होती है । असंभावित स्थानों से भी अचानक धोखा होता है ।

१२. यह अंक मानसिक नित्ता तथा कष्ट का दोतक है और अन्य लोग अपनी कार्य साधना के लिये—प्रपनी स्वार्थ की वेदी पर १२ अंक वाले व्यक्ति के हिरों की बलि चढ़ाते हैं ।

१३. यह अंक इस बात का दोतक है कि इरादों और कार्य

क्रमों में सदैव परिवर्तन होता रहेगा । स्थान-परिवर्तन भी द्योतित होता है । बहुत से लोगों की यह धारणा है कि यह अशुभ अंक है, किन्तु वास्तव में यह अशुभ है नहीं । १३ ऐसी शक्ति का प्रतीक है—जो उचित रूप से प्रयुक्त न होने पर ध्वंसकारी होती है ।

१४. इस अंक से गति, तथा जन एवं वस्तु की संमुदायात्मक प्रवृत्ति प्रकट होती है । आंधी, पानी, तूफान, अग्नि, भूकंप आदि भय की आशंका होती है । कार्य-परिवर्तन, धन अथवा सट्टे के लिये यह अंक शुभ है । किन्तु जातक के अतिरिक्त अन्य मनुष्यों की गलती से कुछ भय की आशंका रहती है ।

१५. यह मन्त्र-शास्त्र किंवा रहस्य में सम्बन्धित अंक है । यदि किसी के नाम के एक शब्द (जिससे वह पुकारा जाता है) अंकों का योग '१५' आवे तो भाग्य का द्योतक है । किन्तु यदि ४ अथवा ८ का अंक-नाम के अन्य शब्दों का योग हो तो यह शुभ नहीं होता ।

दूसरों से धन की प्राप्ति के लिये यह अंक शुभ है । इस अंक वाले व्यक्ति संगीत तथा कला के प्रेमी और अच्छे वक्तां होते हैं ।

१६. इस अंक से यह प्रकट होता है कि मनुष्य बहुत ऊँचा उठेगा किन्तु बाद में उसका अधःपतन होगा । भ्रतः इस अंक वालों को दुष्टना से बचना चाहिये । यदि किसी के नाम के संयुक्ताक्षरों का अंक १६ हो तो समझिये कि उसकी महत्वाकांक्षाओं के चूर्ण होने का भय है ।

१७. यह अंक आत्मिक शक्ति से विद्येय सम्बन्ध रखता है । ऐसा व्यक्ति कठिनाइयों तथा विपत्तियों को पार कर, नाम कमाने में समर्य होता है और उसके जीवन के बाद भी उसकी कीर्ति रहती है । यह शुभ अंक है ।

१८. इस अंक से कलह और शत्रुता प्रकट होती है। अर्थात् जिसके नाम के संयुक्ताक्षरों का योगांक १८ हो वह कोटुम्बिक कलह तथा अन्य जनों की शत्रुता से पीड़ित रहता है। प्रायः ऐसे व्यक्ति शत्रुता किंवा ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों द्वारा भी धन संग्रह करने में प्रवृत्त होते हैं। यदि किसी तारीख का संयुक्तांक १८ हो तो उसे भी सहसा किसी शुभ कार्य के लिये नहीं चुनना चाहिये; यथा १ जनवरी $1660 = 1 + 1 + 1 + 6 + 6 + 0 = 18$

१९. यह शुभ अंक है। यह सूर्य का प्रतीक है। इससे हृषि, सफलता, प्रतिष्ठा तथा मानवृद्धि प्रकट होती है।

२०. इस अंक को भी शुभ माना गया है। “जागृति” तथा ‘न्याय’ का प्रतीक यह अंक है। इससे नवीन योजना व नई महत्वाकांक्षाएँ प्रकट होती हैं। किन्तु निश्चय ही सांसारिक सफलता होगी, यह इस अंक से नहीं कहा जा सकता। यदि भविष्य विषयक प्रश्न में यह अंक प्रयुक्त किया जावे तो इससे विलम्ब तथा कार्य में कठिनाइयाँ या अड़चने प्रकट होती हैं।

२१. इससे उन्नति, प्रतिष्ठा, पद वृद्धि आदि प्रकट होती है। प्रश्न में यदि यह अंक प्रयुक्त हो तो कार्य की सफलता प्रकट होती है।

२२. यह इस वात का प्रतीक है कि व्यक्ति तो अच्छा है किन्तु वह अपने स्वप्न की दुनिया में रहता है—मिथ्या आशा में अपना समय व्यतीत करता रहता है और जब विपत्ति बिल्कुल सिर पर आ जाती है तब चौकन्ना होता है। इससे यह भी प्रकट होता है जो धारणा वना रक्खी है वह मिथ्या है। प्रश्न में यह अंक हो तो गी यही अर्थ लगाना चाहिए।

२३. उच्चाधिकारियों की कृपा किंवा अपने से श्रेष्ठ जनों की सहायता द्वारा सफलता एवं उच्चपद प्राप्ति होती है। प्रश्न में भी यही समझना।

२४. यह भी शुभ अंक है। अपने कार्य में उच्च पदाधिकारियों के संयोग तथा उनकी सहायता व्यक्त होती है। किसी पुरुष को, किसी स्त्री के प्रेम तथा सहायता से (और स्त्री को, किसी पुरुष—पति, पिता, भाई या अन्य व्यक्ति के स्नेह और सहायता से) लाभ होता है। प्रश्न में भी फल शुभ है।

२५. इससे प्रकट होता है कि अनुभव द्वारा शक्ति सम्पादित होगी और दूसरों की गति-विधि अवलोकन करने से लाभ होगा। एक प्रकार से इसे सर्वथा शुभ नहीं कह सकते क्योंकि प्रारम्भिक जीवन में बहुत संघर्ष और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तब कहीं जाकर सफलता प्राप्त होती है। भविष्य विषयक प्रश्न में इसका परिणाम शुभ है।

२६. दूसरों के संयोग किंवा सहयोग से भारी आशंका तथा विपत्ति प्रकट होती है। दूसरों की सलाह, संयोग (सामेदारी, विवाह) तथा सट्टे आदि से धाटा या भारी तुकसान होने का अन्देशा जाहिर होता है।

२७. इससे हृकूमत तथा उच्चाधिकारिता प्रकट होती है। युद्ध के फलस्वरूप सुपरिणाम निकलेगा। ऐसे व्यक्तियों को अपने स्वयं के विवारों को कार्यान्वित करना चाहिए। भविष्य प्रश्न में भी यह सत्या बहुत शुभफल सूचित करती है।

२८. इस संस्था से दो विश्व दिवायों में जाने वाली शक्तियाँ सूचित होती हैं—ऐसे व्यक्तियों को अपने कार्य स्वरूप बहुत प्राप्ति

तथा सफलता की आशा होगी किन्तु, यदि वह सावधानी न बरतै तो-उसके पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा। दूसरों में अन्धविश्वास रखने किंवा व्यापार में प्रतिक्रिया विरोध, या प्रतियोगिता के कारण किंवा अदालत, मुकद्दमे या कानूनी कार्रवाई के कारण घाटे की संभावना प्रकट होती है। भविष्य विषयक प्रश्न में भी इस संख्या से शुभ परिणाम प्रकट नहीं होता।

२६. इस अंक से अस्थिरता, या अनिश्चित स्थिति प्रकट होती है। ऐसे व्यक्ति के मिश्र विश्वास के योग्य न होंगे और उनके कारण उसे धोखा, अचानक भय, कष्ट हानि आदि की संभावना रहेगी। जिन पुरुषों के नाम का संयुक्तांक २६ हो, उन्हें स्त्रियों तथा जिन स्त्रियों का संयुक्तांक २६ हो उनको पुरुषों से धोखा या कष्ट उठाना पड़ेगा। प्रश्न में भी यदि यह संख्या आवेदी तो शुभ नहीं।

३०. ऐसे व्यक्ति अत्यन्त दुष्कृति तथा प्रतिभासम्पन्न होते हैं और आर्थिक संचय की ओर विशेष ध्यान न देकर विद्या संचय की ओर चित्तवृत्ति तथा दुष्कृति को लगाते हैं। इस कारण न इसे शुभ कह सकते हैं न अशुभ।

३१. इस संख्या का भी प्रायः वही फल है जो ऊपर ३० का दिया गया है। बहिक इस संख्या वाला व्यक्ति और भी एकाकी, अन्तमुखी वृत्ति वाला, सबसे दूर और अलग रहने की प्रवृत्ति के कारण सांसारिक सफलता से हीन रहता है—इस कारण यह संख्या शुभ नहीं।

३२. इस अंक में भी वही चमत्कार है जो ५ या १४ की संख्या में। इससे बहुत व्यक्ति या राष्ट्रों का समुच्चय या समुदाय इंगित

होता है। इस संख्या वाला व्यक्ति यदि स्वयं अपने इरादों को कार्यान्वित करे तो उसे सफलता होगी। किन्तु यदि वह अन्य व्यक्तियों की जिद या मूर्खता से पूर्ण सलाह को मान्यता देगा तो सफलता प्राप्त नहीं होगी। भविष्य विषयक प्रश्न में भी यह संख्या शुभ है।

३३. इस संख्या की अपनी कोई विशेष शक्ति नहीं है, इस कारण इसका भी वही प्रभाव समझना चाहिए जो २४ का बताया गया है।

३४. इस का भी वही प्रभाव है, जो २५ का ऊपर बताया गया है।

३५. इसका प्रभाव २६ के सहश है।

३६. इसका प्रभाव २७ के सहश है।

३७. यह विशेष शक्ति सम्पन्न संख्या है। ऐसे व्यक्ति को प्रेम (स्त्री-पुरुष प्रेम) तथा मिथता—दोनों में सफलता तथा भाग्योदय प्राप्ति होगी। ऐसे व्यक्ति किसी की सामेदारी में कार्य करें तो उन्हें उसमें भी लाभ होगा।

३८. इस संख्या का भी वही प्रभाव है जो २६ का।

३९. इसका प्रभाव ३० के सहश है।

४०. यह ३१ के सहश है।

४१. इसका प्रभाव ३२ के सहश है।

४२. ऊपर २४ संख्या का ज्ञान प्रभाव बताया गया है वही ४२ का भी है।

४३. यह अशुभ संख्या है। इससे असफलता, वाधा, लड़ाई-भगड़ा, गड़वड़, क्रान्ति आदि अशुभ परिणाम सूचित होते हैं।

४४. इसका प्रभाव २६ के सहश है।

४५. इसका प्रभाव २७ के सदृश है ।

४६. इसका प्रभाव ३७ के सदृश है ।

४७. इसका प्रभाव २६ के सदृश है ।

४८. इसका प्रभाव ३० के सदृश है ।

४९. इसका प्रभाव ३१ के सदृश है ।

५०. इसका प्रभाव ३२ के सदृश है ।

५१. इस संख्या में बहुत व्यक्ति है । इससे ‘योद्धा’ अथवा ‘विजयी’ इंगित होता है । ऐसा व्यक्ति जो भी कार्य करे उसे सफलता प्राप्त होगी । संनिकों के लिए यह विशेष शुभ है । नेताओं के लिए भी सफलता मूचक है । किन्तु इस संख्या वाले व्यक्ति के बहुत से शत्रु भी होंगे — उनसे भय तथा उनके द्वारा कत्ल किए जाने की आशंका भी रहेगी ।

५२. इसका भी ४३ के सदृश प्रभाव है ।

५३. इस संयुक्तांक वाला व्यक्ति गुप्तचर का कार्य अच्छा कर सकता है । संतिक नेतृत्व में सफलता प्राप्त हो सकती है । यह अंक उन्नतिसूचक है ।

५४. इस अंक वाले व्यक्ति की लोग प्रतिष्ठा करते हैं । वह वाग्मी, विद्वान् तथा धनिक होता है, परन्तु लंगड़े होने का डर रहता है ।

५५. यह नेतृत्व का अंक है । ऐसा मनुष्य प्रखर दुर्द्वं का तथा धार्मिक विचार का होता है और अन्य जनों का नेतृत्व करता है ।

५६. यह अंक शुभ तथा अशुभ दोनों है । ऐसा व्यक्ति सौभाग्य-युक्त होता है तथा दूसरों पर नेतृत्व करने की चेष्टाकरता है परन्तु कई बार उसकी आकंक्षाएँ निकृष्ट प्रकार की होती हैं । ऐसा

व्यक्ति ध्वराया हुआ, वेचैन सा रहता है। आत्मसंयम का उद्योग करना चाहिए।

५७. यह अंक कार्य या व्यवसाय में सफलता का धोतक है। ऐसा व्यक्ति खुश मिजाज तथा क्रियाशील होता है।

५८. इस संख्या वाले अच्छे चिकित्सक हो सकते हैं। ऐसे व्यक्ति स्पष्ट व्यवहार वाले होते हैं तथा दूसरों से स्नेह करते हैं।

५९. इस अंक वाले व्यक्ति की भय और विपत्तियों से सदैव रक्षा होती है। ऐसा व्यक्ति बहुत प्रकार के कारबार करता है और यात्रा भी बहुत करता है। जलयात्रा विशेष सफलताधोतक है। यदि वेंक या दलाली का कार्य करे तो पूर्ण सफलता हो किन्तु बैई-मानी की प्रवृत्ति भी होगी। ऐसा व्यक्ति प्रायः विजय प्राप्त करता है और दीर्घजीवी होता है। केवल दोप यही है कि ऐसे मनुष्य की सट्टे तथा बैईमानी की ओर प्रवृत्ति होती है।

६०. इस अंक वाला व्यक्ति खुशमिजाज होता है और उसे डाक्टर, नर्स, आदि के कार्य में सफलता प्राप्त हो सकती है।

६१. इस अंक वाला व्यक्ति यात्रा का शोकीन, शान्तिप्रिय तथा आत्म संयमी होता है।

६२. इसका प्रभाव वही है जो ५३ का है।

६३. इस अंक वाले व्यक्ति स्वस्य, और दूसरों की उन्नति तथा उपकार के लिए कार्य करने वाले होते हैं। प्राचीन सामाजिक प्रथाओं के संशोधन की ओर उनका विशेष ध्यान रहता है। व्यापार में भी सफल होते हैं किन्तु अपव्यय की ओर भी प्रवृत्त होते हैं। हानि या लाभ के विषय में निरायिकता से कुछ नहीं कहा जा सकता।

६४. इस अंक वाले व्यक्ति को व्यापार की अपेक्षा नौकरी या

अपना पेशा (डाक्टरी, वकालत आदि) विशेष लाभ प्रद होगा। साहित्यिक प्रवृत्ति होती है। देवाहिक जीवन के वन्धन से अरुचि रहती है।

६५. इस अंक वाले व्यक्ति को बड़ों का आश्रय प्राप्त होता है वैवाहिक जीवन भी सुखमय रहता है किन्तु चोट लगने या दुर्घटना का भय रहता है ।

६६. इसका वही प्रभाव है जो ५७ का है।

६७. इसका वही प्रभाव है जो ५८ का है ।

६८. इसका वही प्रभाव है जो ५६ का है ।

६६. इस अंक से सम्मान, प्रतिष्ठा, सौभाग्य तथा कीर्ति सूचित होते हैं।

७०. यह सौभाग्यसूचक अंक है किन्तु उतना शक्तिशाली नहीं।

अब नाम का संयुक्त ब्राह्मणकर किस प्रकार विचार करना यह बताया जाता है:—

नाम शुभ है या नहीं

किसी नाम की शुभता या अशुभता इस बात पर निर्भर है कि
 (१) उस नाम का 'संयुक्तांक' क्या बनता है ? इस संख्या का क्या
 गुण और प्रभाव पिछले पृष्ठों पर दिया गया है ।
 (२) नाम का 'संयुक्तांक' जन्म तारीख के मूल अंक से 'सहानुभूति'
 रखता है या विरोध ।

ऊपर श्री जवाहरलाल नेहरू जी के नाम का 'संयुक्तांक' बना कर बताया गया है कि अंगरेजी वर्णमाला के अनुसार "जवाहर लाल" का संयुक्तांक '२४', 'नेहरू' का २३ तथा दोनों नामों का ('... तथा कुल-नाम) सम्मिलित—संयुक्तांक ४७ बनता है। अब

पिछले पृष्ठों में देखिए कि २४ का श्या प्रभाव है; '२३' का क्या तथा '४७' का क्या ? यदि नाम के 'संयुक्तांक' का शुभ प्रभाव दिया है तो नाम को शुभ समझना चाहिए । बहुत से विज्ञ पाठकों को यहाँ यह शंकाहोना स्वाभाविक है कि नाम के 'संयुक्तांक', पर विचार करते समय 'जवाहरलाल' इस पद पर विचार किया जाये या 'नेहरू' या 'जवाहर लाल नेहरू' पर । इस सम्बन्ध में यह निरण्य है कि जिसके जिस नाम से वह अधिक विस्त्रित हो वही नाम उसका—उपर्युक्त विचार में, ग्रहण करना चाहिए । हमारे ख्याल से माननीय पंडित जी का 'नेहरू' नाम विश्व विस्त्रित है । भारतीय तो 'पंडित जी' या 'जवाहर लाल जी' इन नामों का भी—आपस की बातचीत में प्रयोग करते हैं । परन्तु विश्व में 'नेहरू' नाम हो विशेष प्रसिद्ध है । अतः कुछ गुण तो '२४' (जवाहर लाल) का और कुछ '४७' का (जवाहरलाल नेहरू) भी मिलेगा । परन्तु मुख्य प्रभाव '२३' (नेहरू) का माना जावेगा ।

अब एक दूसरे नाम का उदाहरण दिया जाता है :—

महात्मा गांधी का नाम यद्यपि मोहनदास या तथोपि इस नाम का प्रयोग जनता ने नहीं किया । उनका 'गांधी' नाम ही विश्व-विस्त्रित हुआ ।

G=३

A=१

N=५

D=४

H=५

I=१

देखिए इस '१६' अंक का प्रभाव बहुत उत्तम दिया गया है । कहते हैं कि 'नेपोलियन' जब तक अपना नाम Napolean Bonaparte लिखता रहा तब तक उसके नाम के 'संयुक्तांक' का शुभ प्रभाव रहा । किन्तु दैव दुविपाक से उसने अपने नाम की हिज्जे बदल लिये और नवीन हिज्जे (अंगरेजी वर्णभासा के प्रयुक्त अक्षरों) Bonaparte का प्रभाव बड़ा अशुभ रहा ।^१

हमें कई भुक्तभोगी सज्जनों ने बताया कि जब तक वह अपना नाम प्राचीन प्रकार से लिखते रहे तब तक उनको उन्नति या भाग्य दृढ़ नहीं हुई । किन्तु जब उन्होंने नाम की हिज्जे बदललिये तो संयुक्तांक भिन्न हो जाने से, जो नयी संख्या वही उसका शुभ प्रभाव होने के कारण भाग्यदृढ़ि हुई ।

प्रायः 'नाम' बदलना, आसान नहीं है । परन्तु नाम की हिज्जे बदलना सुगम है । उदाहरण के लिए किसी सज्जन का नाम "कैलास चन्द्र" गोपल है ।

| | | |
|-------------------------|-----|-----|
| K=२ | C=३ | G=३ |
| A=१ | H=५ | O=७ |
| I=१ | A=१ | Y=१ |
| L=३ | N=५ | A=१ |
| A=१ | D=४ | L=३ |
| S=३ | R=२ | |
| <hr/> <u>A=१२</u> <hr/> | | |
| १२ | १२ | १२ |

१. देखिये Cheiros Book of Numbers पृष्ठ १४६ तथा Numerology for Every Body पृष्ठ ५६, ५७ ।

अंगरेजी वर्णमाला के प्रतिवर्ण के योग के अनुसार कैलास चन्द्र गोयल नाम का संयुक्तांक ४७ हुआ । '४७' का वही प्रभाव होता है जो '२६' का (देखिए पृष्ठ ८१ तथा ८३) । '२६' का शुभ प्रभाव नहीं है । इसलिए यदि यह सज्जन अपना नाम नहीं बदलें (क्योंकि नाम बदलने में अनेकानेक झंझट हैं) किन्तु अपना नाम 'कैलास चन्द्र गोयल' के स्थान में केवल "कैलासचन्द्र" लिखें तो भाग्योदय कारक होगा क्योंकि इस नाम का संयुक्तांक ३२ होगा जो बहुत शुभ है ।

'नाम' और जन्म तारीख का सामर्ज्जस्य

यह एक विचार है । दूसरा यह भी विचार है कि नाम का संयुक्तांक 'जन्म तारीख' के अनुकूल पड़ता है या नहीं । उदाहरण के लिए 'कैलासचन्द्र' इस नाम का संयुक्तांक '३२' हुआ यदि 'Kailas Chandra' के स्थान में 'Kailash Chandra' लिखा जाये ('s' के बाद एक 'h' और जोड़ दिया जावे-क्योंकि 'कैलास' और 'कैलाश' दोनों रूप भाषा की हस्ति से शुद्ध हैं) तो 'h' का अंक ५ और सम्मिलित हो जाने से,

| | |
|-------|-------|
| $K=2$ | $C=3$ |
| $A=1$ | $H=5$ |
| $I=1$ | $A=1$ |
| $L=3$ | $N=5$ |
| $A=1$ | $D=4$ |
| $S=3$ | $R=2$ |
| $H=5$ | $A=1$ |
| | 21 |
| 16 | |

संयुक्तांक '३७' हुया। इस अंक का भी शुभ फल है। (देखिए पृष्ठ ८२)। अब केलासचन्द्र को '३२' तथा '३७' में से उस अंक को प्रसन्न करना चाहिए जो उनकी जन्म तारीख के अनुकूल हो :—

$$32 = 3 + 2 = 5$$

$$37 = 3 + 7 = 10 = 1 + 0 = 1.$$

यदि इनकी जन्म तारीख ५, १४ या २३ हो तो इन्हें ३२ की संख्या विशेष शुभ होगी। यदि इनकी जन्म तारीख १, १०, १६, २८ या ४, १३, २२, ३१ हो तो इन्हें '३७' की संख्या शुभ होगी। यदि २, ११, २०, २६ अथवा ७, १६, २५ तारीख को जन्म हुआ हो तो भी '३७' की संख्या शुभ होगी।

इम सम्बन्ध में एक बात और उल्लेखनीय है।

(i) यदि जन्म-तारीख का मूल अंक '४' हो और नाम का संयुक्तांक '८' आता हो तो नाम के अक्षरों को इस प्रकार बदलिए कि नाम के संयुक्तांक ३, ६ या ९ बन जावे।

(ii) इसी प्रकार यदि जन्म-तारीख का मूल अंक ८ हो और नाम का संयुक्तांक '४' आवे तो नाम के अक्षरों को इस प्रकार बदलिए कि नाम का संयुक्तांक ३, ६ या ९ बन जावे।

कहने का तात्पर्य यह है कि जन्म-तारीख का मूल अंक तथा नाम का 'संयुक्तांक'—इन दोनों में से एक ४ और दूसरा ८ होना शुभ नहीं।

जिस प्रकार हमने पिछले पृष्ठों में यह विचार किया है कि जन्म-तारीख के 'मूल अंक' और नाम के संयुक्तांक में सामन्जस्य होना शुभ है, उसी प्रकार यदि भगवान् के जन्म-तारीख के मूल अंक, नामांक तथा जिस शहर में वह कारवार करता है उस शहर के

नामांक में भी सामज्जस्य हो तो, उस दाहर में उस मनुष्य की विशेष श्री-वृद्धि होगी। उदाहरण के लिए कोई सज्जन पूछते हैं कि "मैं नई दिल्ली में कारवार कर रहा हूँ, यदि इलाहाबाद में दूकान खोलूँ तो कैसा रहेगा?"

पिछली प्रक्रिया के अनुसार नई दिल्ली तथा इलाहाबाद दोनों नामों के संयुक्तांक पृथक्-पृथक् बनाइये :—

| | |
|---------|---------|
| $N = 5$ | $A = 1$ |
| $E = 5$ | $L = 3$ |
| $W = 6$ | $L = 3$ |
| $D = 4$ | $A = 1$ |
| $E = 5$ | $H = 5$ |
| $L = 3$ | $A = 1$ |
| $H = 5$ | $B = 2$ |
| $I = 1$ | $A = 1$ |
| | $D = 4$ |

$$\overline{34} = 3 + 4 = 7 \qquad \overline{21} = 2 + 1 = 3$$

अब यदि उनके जन्म-तारीख के मूल अंक तथा नाम के 'संयुक्तांक' इन दोनों अंकों की '७' से विशेष सहानुभूति है तो नई दिल्ली ही उनके लिए विशेष शुभ रहेगी। यदि '३' से विशेष सहानुभूति है तो इलाहाबाद विशेष उपयुक्त होगा।^१ इसी प्रकार मोहल्ले आदि का विचार किया जा सकता है।

इसी प्रकार किये का मकान लेते समय या अन्य शब्दसरों पर

यह निर्णय करने में कि कौनसा मकान विदेष शुभ होगा, अंक-विद्या से लाभ उठाया जा सकता है। अथवा हम अपने मकान का ऐसा नाम रख सकते हैं जिसका 'संयुक्तांक' हमारे लिए अनुकूल हो। कीरो का मत है कि जिसका मूल अंक ४ या ८ हो उसे नवीन नाम रखते समय या मकान चुनते समय ४ या ८ वाला मकान नहीं चुनना चाहिए।

नाम के संयुक्तांक के अनुसार कौन सी तारीख महत्वपूर्ण कार्य के लिए उपयुक्त होगी?

ऊपर जो नाम के संयुक्तांक बनाने के उपयोग दिये गये हैं, उनके अतिरिक्त 'संयुक्तांक' की एक उपयोगिता और है।

उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति को यह देखना है कि वह वेतन-वृद्धि के लिए प्रार्थना पढ़ किस दिन भेजे या अपने अफसर से किस दिन मिले। मान लीजिए उसकी जन्म-तारीख ११ अप्रैल है। जैसा कि तृतीय प्रकरण में बताया जा चुका है किसी भी महीने की तारीख २, ११, २०, २६ तथा ७, १६, २५ उसके लिए अनुकूल होंगी। इसके अतिरिक्त अंक १, १०, १६, २८ तथा ४, १३, २२, ३१ की भी मूल अंक '२' से सहानुभूति है। इस कारण ये तारीखें भी अनुकूल होंगी। किन्तु इस विचार में 'रामलाल', 'श्यामलाल', 'गोविन्द शरण', 'यज्ञदत्त' या 'देवदत्त'—सभी के लिए एक समान नियम लागू किया है; नाम के अलग-अलग होने पर भी यहां सब को एक ही तारीख समानरूप से अनुकूल होगी यह दांका हीना स्वाभाविक है।

इस कारण निम्नलिखित पद्धति से यह निश्चित किया जाता है कि रामलाल को कौनसी तारीख वेतन-वृद्धि के लिए प्रार्थना पढ़

भेजने के लिए अनुकूल होगी ।

(क) रामलाल नाम का संयुक्तांक बनाइये :—

$$R = २$$

$$A = १$$

$$M = ४$$

$$L = ३$$

$$A = १$$

$$L = ३$$

$$\underline{18}$$

18

(ख) जन्म की तारीख का अंक $11 = 1 + 1 = 2$

(ग) मान लीजिए वह २१ जुलाई को प्रार्थनापत्र भेजना चाहते हैं तो, $21 = 2 + 1 = 3$ ।

यद्य १४, २ तथा ३ को जोड़ने से योग हुआ १६ । इस '१६' 'संयुक्तांक' का फल विद्युते पृष्ठों में देखने से पता चलता है कि 'यह शुभ अंक है । यह मूर्यं का प्रतीक है । इससे हृष्ट, सफलता, प्रतिष्ठा तथा मानवृद्धि प्रकाट होती है । (देखिये पृष्ठ ७६)

इस कारण 'रामलाल' को (जिसकी जन्म-तारीख ११ है) तारीख २१ शुभ होगी ।

इन प्रकार नाम के 'संयुक्तांक' और जन्म-तारीख के मूल अंक के महयोग से निर्दिष्ट तारीख चुनने में भी 'नाम' का गहन्य है ।

६३ प्रकरण ८

मास, वार तथा घराणे का महत्व

इंग्लैण्ड के सप्ताह घराने का ज्योतिषियो और ज्योतिष सम्बन्धी फलादेशों से बहुत सम्बन्ध रहा है। इंग्लैण्ड के बादशाह जार्ज प्रथम का डचेज़ आफ जैल से प्रेमसम्बन्ध हो गया और बादशाह ने उससे विवाह कर लिया। किन्तु बाद में इस महाराजी का योरुप के काउन्ट कोनिंग्समार्क से अनुचित सम्बन्ध हो गया और वह चाहती थी कि काउन्ट के साथ भाग जावे, किन्तु बादशाह ने महाराजी को 'अहूले' के किले में घन्दी कर दिया और उससे अपना विवाह-विच्छेद कर लिया। तलाक दी हुई, इस डचेज़ ने बहुत उद्योग किया कि भाग निकले विन्तु वह असफल रही। अंत में उसने 'पार्ड जेप्स' नामक एक अंगरेज ज्यीतिषी की सहायता ली। इस ज्योतिषी ने जार्ज प्रथम की जन्म-कुण्डली बनाई—जो इंग्लैण्ड के राजकीय पत्रों में सुरक्षित रखी गई। इस जन्म-कुण्डली में उसने फलादेश किया था कि जिस दिन 'डचेज़' की मृत्यु होगी उसके टीक एक वर्ष और एक दिन बाद बादशाह की मृत्यु होगी। हुआ भी-ऐमा ही। 'डचेज़' की मृत्यु १० जून १७२६ को हुई और बादशाह की ११ जून सन् १७२७ को।

उपर्युक्त घटना का उल्लेख इसलिए किया गया है कि बहुत से लोग विशेष घटनाओं को केवल आकस्मिक संयोग कह कर टान देते हैं। वास्तव में ऐसी घटनाएँ ज्योतिष के गंभीर सिद्धान्तों पर

अबलंबित हैं। कोई कोई महीने किसी देश, व्यक्ति या घराने के लिए बहुत महत्व पूर्ण होते हैं। नीचे जो ऐतिहासिक तिथियाँ दी गई हैं इनसे स्पष्ट होगा कि अप्रैल से लेकर जुलाई तक के मास इंग्लैण्ड के राज घराने के लिये बहुत महत्वपूर्ण हुए हैं।

| | |
|------------------------------------------|---------|
| “जार्ज प्रथम की मृत्यु | ११ जून |
| जार्ज द्वितीय का जन्म-दिन | ४ जून |
| साम्राज्ञी विक्टोरिया का जन्मदिन | २४ मई |
| इयूक आफ यॉक का जन्मदिन | ३ जून |
| प्रिसेज मेरी आफ तैक का जन्म दिन | २६ मई |
| एडवर्ड अष्टम (इयूक आफ विंडसर का जन्मदिन) | २३ जून |
| साम्राज्ञी विक्टोरिया मिहासनाहृड हुई | २० जून |
| वाटरलू की प्रसिद्ध लड़ाई | १८ जून |
| जार्ज द्वितीय सिहासन पर बैठे | ११ जून |
| विलियम चतुर्थ गट्टी पर बैठे | २६ जून |
| सम्राट् सप्तम एडवर्ड की मृत्यु | ६ मई |
| सम्राट् जार्ज पंचम की गट्टी नशीमी | ६ मई |
| सम्राट् पंचमजार्ज की ताजपोशी | २२ जून |
| सम्राट् पंचम जार्ज का विवाह | ६ जुलाई |

वीरो ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि उसने यह सब विस्तार से अध्ययन किया था और इंग्लैण्ड के राजघराने के सम्बन्ध में जो उसने ‘अक’ विषयक या ‘मास’ विषयक निष्पत्ति निकाले थे वह उसने एटनर्ड सप्तम को स्वयं बताए थे।^१

‘अनुभव से यह विदित होता है कि कोई कोई मास किसी किसी व्यक्ति को विशेष शुभ या अशुभ जाता है; किस तारीख में उत्पन्न व्यक्ति को कौन सा मास शुभ जावेगा? इस सम्बन्ध में पाइचात्य मत वृतीय प्रकरण में बताया जा चुका है।

भारतीय मत—अब भारतीय मत दिया जाता है। भारतीय गतानुसार ज्योतिष के सिद्धान्तों से यह निकाला जा सकता है कि अमुक सौर मास (संक्रान्ति से संक्रान्ति तक) अमुक व्यक्ति को कौन सा जावेगा। केवल अंक ज्योतिष से भारतीय मतानुसार शुभाशुभ मास निर्णय करना कठिन है। ज्योतिष प्रेमियों की सुलभता के लिए नीचे की पंक्तियों में कुछ भिन्नेश मात्र किया जा रहा है:—

सर्वतोभद्र का विचार बहुत गहन, विस्तृत और सूक्ष्म ज्योतिष तथा नक्षत्र विद्या से सम्बन्ध रखता है; इस कारण इस छोटीसी अंक-विद्या में उसका परिचय देना सम्भव नहीं है। परन्तु पाठकों के लाभार्थ्य यह लिख देना आवश्यक है कि जब सूर्य राशि विशेष में रहता है तब कुछ दिया ‘अस्तमित’ मानी जाती हैं। तीन-तीन मास तक-एक एक दिशा ‘अस्त’ रहती है:—

“नक्षत्राणि स्वरा वर्णां राशयस्तिथयो दिशः।

- ते सर्वेऽस्तंगता ज्ञेया यत्र भानुस्त्रिमासिकः ॥१॥

जिस मनुष्य के जन्म का नक्षत्र अस्त हो उसे रोग होता है, ‘वर्ण’ अस्त ही तो हानि होती है, ‘स्वर’ अस्त हो तो शोक होता है, राशि अस्त हो तो विघ्न होते हैं तथा जन्म-तिथि अस्त हो तो

१. विशेष विश्वरूप के तिए देखिए ‘नररतिनयचर्या’ पृष्ठ १००; फल-दीपिका पृष्ठ ३०३-३१५; जातक-नारदीप पृष्ठ ६०४ जातकादेशमार्ग ध० ६ श्लोक १३।

भय होता है। 'पंचास्ते मरणं ध्रुवम्'। क्रूर दशा अन्तर्दण्डा के साथ पांचों (नक्षत्र, वर्ण, स्वर, राशि तथा तिथि) अस्त हों तो निश्चय मरण होता है। प्रायः एक, दो या तीन के अस्त होने से भी काम-काज में उल्लभन और अडचन पैदा हो जाती हैं। किसी किसी व्यवित के जन्म-नाम के प्रथम अधार, वर्ण, स्वर आदि सर्वतोभद्र चक्र की विविध दिशाओं में आ जाते हैं; इस कारण केवल अधार या स्वर आदि किसी एक के अस्त होने से उन्हें कोई सास महीना अशुभ नहीं प्रतीत होता। किन्तु जिनके नाम के अधार, नक्षत्र, तिथि आदि कई, एक दिशा में पड़ जाते हैं—उनके यह सब एक साथ अस्त होने से विशेष कष्ट उत्पन्न करते हैं। इसलिए या तो सर्वतोभद्रचक्र सम्बन्धी पूर्व पृष्ठ में उल्लिखित पुस्तकों के आधार पर या अपने अपने गत जीवन के अनुभव से अपने लिए जो अशुभ मास हों उनमें विशेष सतर्क रहना चाहिए। भारतीय ज्योतिष के मतानुसार सूर्यास्तक वर्ग में जिस राशि में अधिक रेखा हों उस सौर मास में सब शुभ कर्म करने चाहिए और जिसमें कम रेखा हों उसमें यात्रा या अन्य महत्वपूर्ण कार्य न करे।

इस सम्बन्ध में पाइचात्य मत तो पहले ही दिया जा चुका है कि कोरो के मतानुसार कौनसा मास किस अंक वाले को शुभ होगा।

बार का महत्व—मास के बाद मुख्यता होती है बार की। जिस प्रकार किसी तारीख या मूल अंक का किसी के जीवन में विशेष महत्व रहता है उसी प्रकार किसी बार की भी प्रधानता या महत्व किसी व्यक्ति या राष्ट्र के जीवन में देखा गया है।

प्रसिद्ध अन्वेषक कोलम्बस शुकवार में बहुत श्रद्धा रखता था। इसका कारण यह था कि उसके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ

शुक्रवार को ही हुई । और जब वारम्बार उसने अपने को शुक्रवार से प्रभावित पाया तो इस वार में उसकी श्रद्धा होना स्वाभाविक था । वह शुक्रवार ३ अगस्त १४६२ को अपनी लम्बी यात्रा के लिए रवाना हुआ । कोलम्बस ने शुक्रवार को ही एक द्वीप के आस-पास पक्षियों को देखा जिससे उसने अनुमान किया कि पास में कोई आवादी है । समुद्र में यात्रा करते बरते जब भूमि का लक्षण दिखाई देता है तो कितना अपार हृष्ट होता है यह केवल भुक्तभोगी ही अनुभव कर सकता है । ७० दिन लगातार चलने के बाद शुक्रवार को यह एक धोटे से अमेरिकन द्वीप पर उतरा । तदनन्तर शुक्रवार (१७ मई) को उसने वारसेलोना में विजय यात्रा की । शुक्रवार (३० नवम्बर) ही को उसने पियोरतोसान्तो में क्रास की स्थापना की और शुक्रवार (४ जनवरी) को ही वह स्पेन के लिए रवाना हुआ । वह जब विजयोल्लास के साथ पेलोस में प्रविष्ट हुआ तब शुक्रवार ही था । इस प्रकार हम देखते हैं कि कोई कोई वार भी किसी के जीवन में वहुत महत्वपूर्ण होता है ।

पादचात्य मत पहले दिया जा चुका है कि किस तारीख में उत्पन्न व्यक्ति को कौनसा वार विशेष शुभ होगा । भारतीय मतानुमार जिसकी जन्म कुण्डली में जो ग्रह बनवान् होगा तथा लग्नेश और चन्द्रराशीश का मित्र होगा वह शुभ होगा । किन्तु उपर्युक्त निरांय के लिए जन्म कुण्डली की आवश्यकता होती है । इस कारण अपने अनुभव के आधार पर यह निश्चय करना चाहिए कि कौनसा वार शुभ तथा कौनसा अशुभ जाता है । जो वार शुभ जाते हों उन्हें महत्वपूर्ण कार्यों के लिए चुनना चाहिए—जो अनिष्ट जाते हों उन कारों में कोई बड़ा कार्य न करे । बहुत से अनुभवशील पाठकों

ने यह भी देगा होगा कि गुण्ड वर्त्तों तक कोई बार घटुभ गया—सेविन बार में उमने घटुभना दिग्गाना धोड़ दिगा। इसका कारण यह है कि यदि जन्म-दुरुष्टनी के अनुमार जिनी प्रनिष्ठ यह की दशा रहती है तो यह घटुभ प्रभाव दिग्गाना है। उसकी दशा समाप्त हो जाने पर या गोचरवश उसकी घटुभन्धिति न रहने पर वह घटुभता नहीं दिग्गाना।

यहुत री लोग प्रायः मंगल या शनि को—कूर बार समझते के कारण—घटुभ नमन्ते हैं। परन्तु सर्वत्र ऐसा नहीं होता। यदि कोई बार घटुभ जाता हो तो उग दिन नमक नहीं खाना चाहिए। नमक नहीं जाने से शरीर में रक्तचाप कम रहता है। इस कारण मनुष्य के मस्तिष्क को यिशेन उत्तेजित नहीं करता।

दिन का कौन सा पंडा अनुकूल (माफिक) रहेगा ?

पिछले प्रकारणों में यह बताया जा चुका है कि कौनसी तारीख किस व्यक्ति के लिए विशेष अनुकूल होगी। घव इस प्रकारण में यह विचार विषय जाता है कि—विस दिन, कौनसा घण्टा विशेष माफिक रहेगा। इस विषय में पहिने भारतीय मत और उसके बाद पाश्चात्य मत बताया जावेगा।

घण्टे का विचार, एक बजे से दो बजे तक, दो बजे से तीन बजे तक, इस प्रकार घड़ी के घण्टों से नहीं करना चाहिए—ब्रह्मक मूर्योदय से प्रारम्भ करना चाहिए। जिस दिन जिस स्थान पर विशेष कार्य करना हो उस दिन उस स्थान का सूर्योदय काल निवालना चाहिए। उदाहरण के लिए ३ घून सन् १६५७ को कोई महत्व का कार्य दिल्ली में करना है। इस दिन दिल्ली में सूर्योदय हुआ ५ बजे कर २३ मिनट पर, तो प्रथम घण्टा हुआ ५-२३

से ६-२३ तक, द्वितीय घण्टा हुआ ६-२३ से ७-२३ तक। इस प्रकार सूर्योदय से प्रति घण्टा संस्कृन में "होरा" कहलाता है।

ग्रहों में सबसे अधिक दूर गनि है, फिर वृहस्पति, उसके बाद मंगल, फिर सूर्य, उसके बाद शुक्र, उसके बाद बुध, और सबसे समीप चन्द्र। इसलिए शनिवार की प्रव्रत्ति 'होरा' (सूर्योदय से प्रथम घण्टा) शनि की, दूसरी 'होरा' (घण्टा) वृहस्पति की। तीसरी होरा मंगल की, चौथी सूर्य की, पाँचवीं शुक्र की, ६ठी बुध की, सातवीं चन्द्र की होरा होगी। सात होरा पूरी हो जाने पर द से १४ तक फिर गनि, वृहस्पति, मंगल, सूर्य आदि यही क्रम चलेगा। १५ से २१ होरा तक फिर यही क्रम रहेगा। २२वीं होरा फिर गनि की होगी २३वीं वृहस्पति को, २४वीं होरा (घण्टा) मंगल की, २५वीं होरा सूर्य की त्रयोंकि २४ घण्टे पूरे हो जाने पर दूसरा दिन प्रारम्भ हो गया और दूसरे दिन प्रारंभ की अर्थात् पहली होरा (जो पहले दिन की २५वीं हुई) सूर्य की है—इस कारण शनिवार के दूसरे दिन का नाम 'रविवार' हुआ। रविवार को पहली होरा 'सूर्य' की दूसरी शुक्र की इस क्रम से २२वीं होरा सूर्य की, २३वीं शुक्र की, २४वीं बुध की, २५वीं चन्द्रमा की हुई। यह २५वीं होरा दूसरे दिन की पहली होरा हुई। इस प्रकार रविवार के दूसरे दिन की होरा चन्द्र की होने के कारण इसका नाम चन्द्रवार या सोमवार (या Moon-day जिसे संक्षेप में Monday कहते हैं) रखा गया। इसी प्रकार होरा के विचार से रातों दिन के सात नाम रखे गये हैं।

आगे प्रतिदिन की कीनसी होरा किसकी होगी इसका चक्र दिया जाता है :—

| होता | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
|------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| द | ८ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | |
| १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | |
| २२ | २३ | २४ | | | | | |
| रविवार | मू. | मू. | मू. | म. | म. | म. | म. |
| सोमवार | म. | म. | मू. | म. | मू. | मू. | मू. |
| मंगल वार | म. | मू. | मू. | मू. | म. | म. | मू. |
| बुधवार | मू. | म. | म. | मू. | म. | मू. | मू. |
| युहस्तियार | मू. | म. | मू. | मू. | मू. | म. | म. |
| शुक्रवार | मू. | मू. | म. | म. | मू. | म. | मू. |
| शनिवार | म. | मू. | म. | मू. | मू. | मू. | म. |

उदाहरण के लिये ३ जून नम् १६५७ को सोमवार था। इस दिन गूर्योदय प्रातः ५ बजकर २३ मिनट पर हुआ तो दोपहर की १-२३ से लेकर २-२३ तक इसां पट्टा हुआ। यद्यों पंचिं में सोमवार के गामने प्रीत रही पन्नि में ६ के नीचे 'म' है। इसनिम्न दिन के १-२३ गे एक पट्टे तक २-२३ तक पन्नि की होग हुई।

होरा निशासने के निए गूर्योदय का ठीक-ठीक भासून होना परमायश्यक है। गूर्योदय निशासने की सारिग्गी छपी हुई से लेगी

चाहिए या शुद्ध पचांग में देख लेना चाहिए। यह रमरण रहे कि 'अक्षांश' तथा 'देशांतर' दोनों के कारण—सूर्योदय काल भिन्न-भिन्न स्थानों का अलग-अलग होता है।

कौनसी होरा शुभकूल होगी ?

जिनको अपनी जन्म राशि मालूम हो उन्हें तो अपनी जन्म राशि से विचार करना चाहिए अन्यथा नीचे लिखे चक्र से—अपने नाम के प्रथम अक्षर से राशि निर्णय कर—यह विचार करना चाहिए कि कौनसे ग्रह की होरा शुभ होगी कौनसी साधारण और कौनसी अशुभ।

| नाम का प्रथम अक्षर | राशि | शुभ होरा (शुभकूल) | साधारण होरा | भावुक (प्रतिकूल) |
|-----------------------------------------|-------|----------------------------------|------------------------------|---------------------|
| १. धू, चै, चो, ल, ती ती, ली, भ | तेष | सूर्य, चान्द्र मंगल, बृहस्पति | शुक्र, शनि | बृथ |
| २. ई, उ, ए, ओ, व, वी, वू, वे, वो | पृथ | बृथ, शुक्र शनि | बृहस्पति मंगल | सूर्य, चान्द्र |
| ३. फा, की, कू, घ, ड, घ, के, को, हा | मियून | सूर्य, बृथ, शुक्र | मंगल बृहस्पति शनि | चन्द्रग्रा |
| ४. ही, हू, हे, हो, डा, डी हू, डे, डा | कर्ण | सूर्य, बृथ, चन्द्र | मंगल, बृहस्पति शुक्र, शनि | × |
| ५. मा, मी, मू, मे, मो, टा टी, टू, टे | सिंह | सूर्य, चान्द्र मंगल, बृहस्पति | बृथ | शुक्र, शनि |

| नाम का प्रयग अक्षर | राशि | शुभ होरा (अनुकूल) | साधारण होरा | अशुभ (प्रतिकूल) |
|-------------------------------------------|-----------|-----------------------------------|-------------------------|-----------------------|
| ६. दी, पा, पी, पू, प, ण, ठ, पे, पो | कन्या | सूर्य, वृष्टि शुक्र | मंगल शनि बृहस्पति | चन्द्रमा |
| ७. रा, रो, रु, रे, री, ता, ती, तू, ते | तुला | वृष्टि, शुक्र शनि | मंगल बृहस्पति | चन्द्र, सूर्य |
| ८. ती, ना, नी, नू, ने, नी या, यी, शू | यूर्ध्विक | सूर्य, चन्द्र मंगल बृहस्पति | शुक्र, शनि | वृष्टि |
| ९. ये, यी, भा, भी, भू, पा का, ढा, भे | वनु | सूर्य, चन्द्र मंगल बृहस्पति | शनि | वृष्टि, शुक्र |
| १०. भो, जा, जो, खो, खु, दो, दो, गा, गी | मकर | वृष्टि, शुक्र शनि | बृहस्पति | सूर्य, चन्द्र मंगल |
| ११. गू, गे, गी, सा, सी, सू, से, सी, द | कुम्भ | वृष्टि, शुक्र शनि | बृहस्पति | सूर्य, चन्द्र मंगल |
| १२. दो, दू, य, भू, अ, दे दो, चा, ची | मोन | सूर्य, चन्द्र मंगल बृहस्पति | शनि | वृष्टि शुक्र |

टिप्पणी—किसी के नाम के प्रथम अक्षर में हस्य मात्रा हो—तो भी दीर्घ मात्रा की जो राशि वर्ताई गई है वही हस्य मात्रा धाले की भी होगी। उदाहरण के लिए किसी का नाम 'दिनेश' है। उपर 'दी' की राशि मीन वर्ताई गई है तो 'दिनेश' की भी मीन राशि होगी।

अब प्रश्न यह है कि मीन राशि वाले व्यक्ति को मंगल को कोई कार्य करना है तो वह क्या करे ?

मंगलवार को जव सूर्य, चन्द्र, मंगल या वृहस्पति की होरा हो तो उसे विशेष अनुकूल होगा । यह प्राचीन आर्य सिद्धान्त पर अवलम्बित है । विशेष विवरण के लिए 'समर सार' नामक संस्कृत ग्रन्थ का वह प्रकरण देखना चाहिए जिसमें युद्धकाल में वर्जित होराओं का विवेचन किया गया है ।

शुभ कार्य करने के लिए ऊपर जो चक्र दिये गए हैं कि किस व्यक्ति के लिए कौनसे पट्टे अनुकूल होंगे—उनके साथ यदि 'अमृत पट्टे' का योग भी कर लिया जावे तो सोने में सुगम्भ हो जावे । अमृत घटी के चक्र प्रायः पचासों में दिए रहते हैं—यहाँ भी पृष्ठ १०५ दिये गये हैं ।

नवीनमत—बहुत से विद्वान् घण्टे की संख्या को भुल्य भानते हैं । उनके मतानुसार सर्वत्र सब स्थानों के लिए १२ से एक तक एक घण्टा, १ बजे से दो बजे तक दूसरा घण्टा—इस आधार पर जो संख्या किसी व्यक्ति को अनुकूल हो उसी संख्या का घण्टा अनुकूल होगा । उनके हिसाब से जो सप्ताह का दिन हो उसकी संख्या (रवि की १ तथा ४, सोम की २ तथा ७, मंगल की ६, मुख की ५, वृहस्पति की ३, शुक्र की ८, शनि की ८) तथा घण्टे की संख्या, दोनों यदि किसी व्यक्ति के अनुकूल हों तो वह धंटा उस व्यक्ति के लिए अच्छा रहेगा ।

वेदांके प्रसिद्ध विद्वान् श्री धी० जी० रेले द्वारा लिखित एक

पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसके विद्वान् लेखक के अनुसार सूर्योदय से पहला धंटा, फिर दूसरा धंटा, फिर तीसरा धंटा—इस प्रकार धंटा लेने से प्रत्येक स्थान का सूर्योदय भिन्न होने के कारण और जिसी एक स्थान में भी सूर्योदय में निरन्तर अंतर पड़ते रहने के कारण 'होरा' के अनुसार अनुकूल या प्रतिकूल धंटा चुनने में बहुत असुविधा होगी। इस कारण प्रतिदिन मध्याह्न से—१२ बजे मध्याह्न में एक बजे तक—सोमवार को चन्द्रमा का धंटा, दूसरा धंटा मंगल का, तीसरा धटा बुध का इस क्रम से मानना चाहिए। मंगलवार मध्याह्न को प्रथम धंटा मंगल का, द्वितीय धंटा बुध का इत्यादि। और जो ग्रह जिस कार्य के लिए अनुकूल हो, उसे उस कार्य के लिए चुनना चाहिए—यथा मंगल का धटा कूर कर्म के लिए, शुक्र का धंटा आमोद-प्रमोद के लिए इस प्रकार से मध्याह्न से घण्टा गिनने की शैली 'ग्रोकेन्यिल' नामक अगरेज़ ज्योतिषी ने भी अपनाई है। परन्तु हमारे विचार से इस प्रकार-मध्याह्न में घण्टों का आरम्भ करना अवैश्वानिक और अशास्त्रीय है। इसलिए हमारे विचार में जो 'होरा' विचार हमने इस प्रकारण के प्रारंभ में दिया है वही शास्त्र सम्मत पद्धति है। उसमें यही सिदान्त खला गया है कि अपने राशि के स्वामी की या उसके मित्र की होरा अनुकूल, अपनी राशि के स्वामी के समग्रह (न शत्रु, न मित्र) की साधारण और अपनी राशि के स्वामी के शत्रुग्रह की होरा प्रतिकूल पड़ेगो। इस का प्राचीन शास्त्रीय आधार यही वचन है कि ".....अरिग्रगस्य सा वर्ज्या।"^१

१. देविल कलिल of Numbers पृष्ठ १६६।

२. सप्तरत्न पृ० ५१ इतोह ३०।

इसके अतिरिक्त किसी शुभ कार्य के लिए अनुकूल समय चुनने का एक सहज तरीका है। पाठकों के लाभार्थ चौघड़िया चक नीचे दिया जा रहा है। दिन को ८ भागों में विभक्त कीजिए। इसी प्रकार रात्रि को ८ भागों में विभक्त कीजिए। इन अष्टमांशों के नाम शुभ, अमृत, चर, (चंचल) रोग, काल, लाभ, उत्पात हैं जो नीचे के चक्र से स्पष्ट होगा।

प्रत्येक कार्य के लिए 'शुभ', 'लाभ' तथा 'अमृत' श्रेष्ठ हैं। अमृत धंटी सर्वथेष्ठ है।

एक एक भाग करीब पीने वार घड़ी का होता है। इस कारण इसे चौघड़िया कहते हैं परन्तु वास्तव में दिन मान का अष्टमांश दिन में एक भाग होता है और रात्रि मानका अष्टमांश रात्रि का एक भाग होता है। जाड़े और गर्भी में दिन मान के अनुराश प्रत्येक भाग के मान में अंतर हो जाता है।

दिन का चौघड़िया

| | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|
| र | च | म | ब | ग | शु | ज |
| उ | अ | रो | ला | शु | चं | का |
| चं | ला | उ | अ | रो | ला | शु |
| ला | शु | चं | का | उ | अ | रो |
| अ | रो | ला | शु | चं | का | उ |
| का | उ | अ | रो | ला | शु | चं |
| शु | चं | का | उ | अ | रो | ला |
| रो | ला | शु | चं | का | उ | अ |
| उ | अ | रो | ला | शु | चं | का |

रात्रि का चौघड़िया

| | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|
| र | च | म | ब | ग | शु | ज |
| शु | चं | का | उ | अ | रो | ला |
| अ | रो | ला | शु | चं | का | उ |
| चं | का | उ | अ | रो | ला | शु |
| का | उ | अ | रो | ला | शु | चं |
| रो | ला | शु | चं | का | उ | अ |
| ला | शु | चं | का | उ | अ | रो |
| शु | चं | का | उ | अ | रो | ला |
| उ | अ | रो | ला | शु | चं | का |
| अ | रो | ला | शु | चं | का | उ |

७वाँ प्रकरण

जन्म-मास के अनुसार फलादेश

जन्म की तारीख से इस बात का अन्दाज लगाना कि कौन-कौन सा वर्ष अच्छा और महत्वपूर्ण जायगा पिछले पृष्ठों में बताया जा चुका है। किन्तु कुछ फल ऐसे होते हैं जो सूर्य जिस राशि में जन्म के समय हो उसके अनुसार पटित होते हैं। एक वर्ष के अन्दर सूर्य बारह (१२) राशियों में भ्रमण कर लेता है। और एक वर्ष के बाद वारहों राशियों में घूमकर फिर पहली राशि में आ जाता है। इसका कारण यह है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। और जैसे गोल चक्कर में घूमता हुआ मनुष्य फिर चक्कर पूरा होने पर अपने स्थान पर आ जाता है उसी प्रकार पृथ्वी भी ३६५ दिन ६ घन्टा १ मिनट १२ सेकंड में घूम कर वही आ जाती है। वास्तव में चक्कर तो लगती है पृथ्वी किन्तु लगता ऐसा है कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगा रहा है। इस एक साल के समय को १२ हिस्सों में बांटा गया है। प्राचीन बंगाल में वैशाखी या प्रथम वैशाख से वर्ष का प्रारम्भ मानते हैं। इस दिन सूर्य पहली राशि (विभाग) के प्रारम्भ विन्दु पर होता है। फिर करीब एक-एक महीने, एक-एक हिस्से या राशि में रहता है। किन्तु ३६५ दिन ६ घन्टे १ मिनट १२ सेकंड को १२ से भाग दिया जावे तो प्रत्येक राशि या हिस्से में ३० दिन से अधिक समय आवेगा। यास्तव में ही ऐसा ही। पहला, दूसरा, तीसरा, दसवाँ, ग्यारहवाँ, बारहवाँ—सूर्य

के ये ६ महीने कुछ छोटे होते हैं—प्रत्येक करीब ३० दिन का। बाकी के ६ महीने कुछ बड़े होते हैं। इस सम्बन्ध में विष्णु-पुराण तथा श्रीमद्भागवत में द्वादश सूर्य के नाम तथा अधिकारियों का वर्णन किया गया है।^१

पार्श्वात्य ज्योतिष में जन्म मास का बहुत विस्तृत विचार है। अमुक मास में पैदा होने वाले व्यक्तियों का गुण-कर्म स्वभाव, ऐसा होगा—अमुक वर्ष, जीवन का अच्छा जावेगा, अमुक वर्ष कष्टप्रद होगा; इस सब का बहुत अधिक विचार अंग्रेजी ज्योतिषियों ने किया है। पिछले ३२ वर्षों में हमने इस विषय की अनेक पुस्तकों का अवलोकन कर जब फलादेश मिलाया तो देखा कि कोई-कोई वात तो विलक्षण रूप से ठीक बंधती है—परन्तु कोई-कोई नहीं मिलती। इसका कारण यह है कि, इन सब पुस्तकों में सूर्य किस राशि में है इस आधार पर फल दिया हुआ रहता है। किन्तु सूर्य के अतिरिक्त चन्द्रमा, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु, हृषील, नेपच्यून—जन्म लगन आदि के अनुसार भी गुण-कर्म स्वभाव, भाग्योदय आदि में परिवर्तन होता है। पार्श्वात्य ज्योतिष तथा भारतीय ज्योतिष में एक और अन्तर है। सूर्य करीब-करीब एक महीना प्रत्येक राशि में रहता है यह मत तो दोनों में समान है—किन्तु किस तारीख से किस तारीख तक किस राशि में रहता है—इस सम्बन्ध में दोनों के पृष्ठक-पृष्ठक भत हैं—जो अगले पृष्ठ पर दिये जाते हैं।^२

१. विष्णुपुराण दशम भव्याय तथा श्रीमद्भागवत स्कन्ध १२ अ० ११

२. देखिए You and Your Star by Cheiro तथा

Be Your Own Astrologer by Iris Vorel.

पाश्चात्य मतानुसार

१. २१ मार्च से २० अप्रैल तक
२. २१ अप्रैल से २१ मई तक
३. २२ मई से २१ जून तक
४. २२ जून से २३ जुलाई तक
५. २४ जुलाई से २३ अगस्त तक
६. २४ अगस्त से २३ सितम्बर तक
७. २४ सितम्बर से २३ अक्टूबर तक
८. २४ अक्टूबर से २१ नवम्बर तक
९. २२ नवम्बर से २२ दिसम्बर तक
१०. २३ दिसम्बर से २० जनवरी तक
११. २१ जनवरी से १६ फरवरी तक
१२. २० फरवरी से २० मार्च तक

भारतीय ज्योतिष के अनुसार

१३. अप्रैल से १२ मई तक
- १३ मई से १४ जून तक
- १५ जून से १५ जुलाई
- १६ जुलाई से १६ अगस्त
- १७ अगस्त से १६ सितम्बर
- १७ सितम्बर से १६ अक्टूबर
- १७ अक्टूबर से १३ नवम्बर
- १४ नवम्बर से १४ दिसम्बर

पाश्चात्य तथा भारतीय ज्योतिष में भिन्नता सायन तथा निर्यन गणना के कारण इस छोटी सी पुस्तक में इसकी वृहद् आलोचना सम्भव नहीं है। आगे के पृष्ठों में हमने भारतीय ज्योतिष के आधार पर फल दिया है। भारतीय ज्योतिष के अनुसार सूर्य के प्रथम राशि में होने का जो फल, १३ अप्रैल से १२ मई तक जन्म लेने वालों का दिया गया है, वही पाश्चात्य मत के अनुसार उन सोगों पर लागू होना चाहिये जिनका जन्म २१ मार्च से २० अप्रैल तक हुआ हो। इसी प्रकार भारतीय तथा पाश्चात्य ज्योतिष की तारीखों का अन्तर आगे की राशियों में भी पड़ जाता है जो ऊपर दिये गये विवरण से स्पष्ट हो गया होगा।

इस सम्बन्ध में एक बात की भी ओर और ध्यान दिलाया जाता है।

वह यह है कि ऊपर जो तारीखें दी गई हैं वे करीब-करीब ठीक हैं । किन्तु कभी तो १३. तारीख को संक्रान्ति होती है कभी १४ तारीख को । इस कारण एक दिन का अन्तर कभी-कभी पहले जाता है । इस लिये जिनकी जन्म तारीख विलकूल संक्रान्ति (जिस दिन सूर्य बदलता है) के दिन पड़े—उन्हे उस साल के पंचांग से निश्चय करना चाहिये कि सूर्य किस राशि में है ।

अंग्रेज ज्योतिषियों ने मास के अनुसार भी शुभ अक्ष आदि दिये हैं वे आगे के प्रकरण में मास फलानुसार दे दिये गये हैं किन्तु हमारे विचार से तृतीय प्रकरण में जन्म-तारीख के अनुसार जो शुभ अक्ष, आदि दिये गये हैं वे अधिक ठीक बँठते हैं ।

यदि आप का जन्म १३ अप्रैल और १२ मई के बीच हुआ है^१

पंजाब तथा बंगाल में जन्म की तारीख एक बैसाख से लेकर ३० बैसाख तक हो तो यह फल मिलेगा । यदि आपको अंग्रेजी जन्म की तारीख मालूम नहीं है तो जिस साल आपका जन्म हुआ है उस साल की जन्त्री लेकर देखिए ।

ऐसे व्यक्ति मे अभिमान, उदारता, साहस आदि गुण विशेष पाये जाते हैं । धार्मिक भावनाओं के साथ-साथ कलात्मक प्रवृत्तियाँ, (सुन्दरता की वस्तुओं की परेश, सिनेमा, राग-रंग, चित्रकारी आदि से प्रेम) भी होती हैं । चतुरता और व्यापारिक कुशलता के साथ-साथ दृढ़ता और दूसरे से मुकाबला करने का होसला भी होता है । साहस के कामों में (यथा संनिक या पुलिस विभाग में) ऐसे व्यक्ति बहुत शीघ्र उच्च पद प्राप्त करते हैं और खेल-कूद तथा शिकार के शौकीन होते हैं । किसी भी स्थान पर जहाँ हुक्मत करने का काम

^१. अंग्रेजी ज्योतिष के अनुसार २१ मार्च से २० अप्रैल तक

हो या मशीन, अग्नि, भट्टी, (लोहा या अन्य धातुओं का ढालना या तपाना आदि) मे उन्हे विशेष सफलता मिलती है।

इन व्यक्तियों को बहुत शीघ्र क्रोध आ जाता है और फिर शीघ्र ही शान्त हो जाता है। इन व्यक्तियों का सहसा प्रे-मन्त्रवन्ध हो जाता है परन्तु वहुत स्थायी नहीं रहता। इनके धार्मिक किंवा राजनीतिक विचार बड़े आवेश-पुक्क होते हैं परन्तु स्थायी नहीं होते। किसी कार्य को प्रारम्भ करते समय तो यह लोग वहुत ध्यान देते हैं, परन्तु कार्य की समाप्ति तक ध्यान में कभी हो जाती है। इन लोगों की आर्थिक स्थिति परिवर्तनशील होती है (कभी द्रव्य काफी मात्रा मे रहा तो कभी तंगी का सामना करना पड़ा)। जमीन-जायदाद का योग भी होता है। और कभी-कभी जायदाद (मकानादि) विवाह से (पति या पत्नी द्वारा) प्राप्त होती है। स्त्रियों के कृपा-पात्र होने के कारण काफ़ी लाभ होता है। और व्यापार में भी, साभेदारी के कार्यों में भाग्योदय होता है। भाई-बहनों का सुख कम होता है : वाल्यावस्था में कुटुम्ब में कुछ ऐसी कठिनाइयाँ हों जिनके कारण मार्ग में रुकावट पड़े। आधी रात के बाद और दोपहर के पहले इन १२ घण्टों में जिसका जन्म हो उसको पिता का सुख मध्यम रहे।

ऐसे जातकों को भ्रमण (संर-सपाटे; दूसरे स्थानों पर घूमने जाना) बहुत प्रिय होता है और कभी-कभी कौटुम्बिक परिस्थितियों के कारण या शत्रुओं से बचने के लिए बाहर जाना पड़ता है। पहाड़ पर चढ़ने या हवाई-जहाज द्वारा यात्रा के भी अवसर हों। ७ (सात) १६ (उन्नीस), ३० (तीस), ४४-इन वर्षों में जातक के कुटुम्ब में या स्वयं को बलेश का अवसर हो। अपनी अदूरदर्दिता के कारण जातक अपनी आयु को अल्प करता है। अपने पति या अपनी पत्नी के साथ

भगड़े के काफ़ी अवसर आते हैं। और अपने स्वभाव की गर्मी के कारण नाइतकाकी (असीमनस्य) हो जाती है। विवाह प्रायः कम अवस्था में होता है और सन्तानसुख साधारण होता है। ऐसे व्यक्ति उच्च पद पर पहुँचते हैं परन्तु बहुत संघर्ष का सामना करना पड़ता है। सेना विभाग, वकालत, खान (खनिज-पदार्थ), इंजीनियरिंग आदि के कामों में विशेष सफलता मिलती है। ऐसे व्यक्तियों के मित्र भी बहुत होते हैं और यदि जन्म दोपहर के बाद तथा आधी रात के पहले हुआ हो तो मित्रों की सहायता द्वारा जातक उच्च पद पर पहुँचता है। ईर्ष्या के कारण ऐसे जातक के शत्रु अवश्य उत्पन्न होगे परन्तु विशेष हानि करने में असफल होगे। ऐसे व्यक्तियों को सिर-दंद, ज्वर या सिर में चोट लगने की आशंका रहती है। पेट का विकार तथा अधिक अवस्था में गुरदे की धीमारी और अधिक रक्त-चाप (डलड-प्रैशर) की आशंका होगी। वराह मिहिर के मता-युसार इस समय सूर्य-भेष राशि में होने से जातक चतुर, अल्पवित्त, और साहसी (अस्त्र, शस्त्र धारण करने वाला) होता है, यदि २३ अप्रैल को जन्म ही तो बहुत उच्च पदबी पर पहुँचता है। सारावली के अनुसार जातक शास्त्र द्वारा, कलापटुता से किंवा अन्य उत्कृष्ट कार्यों से प्रसिद्धि प्राप्त करता है; पुद्ध का शीकीन और प्रचंड स्वभाव का होता है। उसकी हड्डियों की काठी मजबूत होती है और भ्रमण (धूमने फिरने) का शीकीन होता है। वह थेप्टा को प्राप्त होता है।^१ अंग्रेज ज्यातिपियों के अनुसार लाल रंग, मंगलवार तथा ६ की

१.

संख्या इनके लिये शुभ है। किन्तु प्रतिवर्ष जब सूर्य मेषराशि में रहता है तब अन्य ग्रहों की युति तथा हृष्टि से उपर्युक्त फलादेश में तारतम्य होना स्वाभाविक है।

यदि आपका जन्म १३ मई और १४ जून के बीच हुआ है।^१

इस समय सूर्य वृषभ राशि में होता है और वृषभ (वैल) के गुण और अवगुण इन लोगों में पाये जाते हैं। ऐसे व्यक्ति परिश्रमी और काम में लगे रहने वाले होते हैं। बहुत धैर्य-पूर्वक लम्बे समय तक काम करने से यह लोग नहीं घबराते और ऐसे कार्यों में इन्हें प्रायः सफलता मिलती है। इन्हें क्रोध जल्दी नहीं आता, पर एक बार क्रोधित हो जाने पर महीनों और वर्षों तक क्रोध की भावना मन से नहीं जाती। ऐसे व्यक्तियों की इच्छा-शक्ति दृढ़ होती है परन्तु वह अपने मन की बात को दूसरे पर प्रकट नहीं करते और जब तक अपने लक्ष्य पर नहीं पहुँच जाते तब तक परिश्रम-पूर्वक उसमें लगे रहते हैं। इसलिए ऐसे व्यक्ति शासन में सफल होते हैं। बहुत से जातकों को कृपिकार्य में भी रुचि होती है। और यह लोग उत्तम भोजन करने के बहुत शोकीन होते हैं। धैर्य-पूर्वक कार्य में लगे रहते हैं परन्तु फिर आराम भी मुभीते के साथ करते हैं।

इनके प्रेरणा सम्बन्ध में हृदता नहीं होती और बहुत अधिक ईर्ष्या की मात्रा होती है। अत्यन्त परिश्रम या अनियमित आहार-व्यवहार के कारण रोग का ढर रहता है।

स्वयं जायदाद प्राप्त करने का सुयोग होता है परन्तु मुकदमे या पड्यन्त्र के कारण हानि होने की सम्भावना रहती है और यह भी सम्भव है कि वहुमूल्य जायदाद आकस्मिक रूप से औरों द्वारा

१. शंकेवी ज्योतिष के मनुसार २१ मंग्से से २१ मई तक

प्राप्त हो। मित्रों और सम्बन्धियों के स्नेह से ऐसे व्यक्तियों की प्रायिक उन्नति में वृद्धि होती है।

यदि मध्य-रात्रि के बाद और मध्याह्न के पूर्व जन्म हो तो ऐसे जातक का पिता अपने समाज में प्रतिष्ठित और उत्तराधिकारी होता है। भाई-बहनों में से किसी एक से कष्ट को सम्भावना हो और सम्भवतः किसी सम्बन्धी के कारण लम्बी यात्रा करनी पड़े। यदि मध्यरात्रि के बाद और मध्याह्न से पहले जन्म हो तो बहुत यात्राओं का योग है और किसी एक यात्रा में सांघातिक रोग का भी भय है।

सन्तान की ओर से विशेष सावधानी की आवश्यकता है। विशेषकर प्रथम सन्तान यदि लड़का हो तो बचपन में उसको काफी भय है। इसके अतिरिक्त सन्तान उन्नति करेगी और उनके द्वारा सन्तोष प्राप्त होगा। ऐसे व्यक्तियों का जीवन शान्तिमय होता है। कोई विशेष बड़ी घटनाएँ नहीं होतीं परन्तु ऐसे व्यक्ति अपनी जिद के कारण स्वयं कठिनाइयाँ पैदा कर लेते हैं।

ऐसे व्यक्ति प्रायः तिल्ली, जिगर या वायु की बीमारियों से पीड़ित होते हैं। गुरदे भी जैसे मजबूत होने चाहिए वैसे नहीं होते। ११, २३, ३५वें वर्ष में रोग की सम्भावना होती है। चौपायों से या तेज श्रीजारों से जख्म होने का डर रहता है। किसी एक प्रेम-सम्बन्ध में धोर दुःख या निराशा का सामना करना पड़ेगा या वैवाहिक जीवन में। अन्त में अपने प्रिय (पति-पत्नी) का अन्त अपने जीवन-काल में ही होने के कारण ज्ञोक होगा।

जीवन के शुरू काल में आधिक हालत साधारण रहती है परन्तु अपने परिश्रम द्वारा ऐसे मनुष्य अपना भाग्योदय करते हैं।

मिथ बहुत होंगे परन्तु उनसे निराशा होगी । ऐसे मनुष्य दीर्घायु होते हैं परन्तु आहार और विहार को नियमित रखना चाहिए क्योंकि ऐसे जातक मात्रा से अधिक भोजन करने के इच्छुक रहते हैं ।

'वराह-मिहिर' के भतानुसार यदि ऐसा मनुष्य वस्त्र, सुगन्धित वस्तु का व्यापार या दुकान करे तो जीविका उपार्जन करने में सफल हो । ऐसा व्यक्ति गाने वजाने में कुशल, विलासी किन्तु किसी स्त्री से शत्रुता रखने वाला भी होता है या कोई स्त्री या स्त्रियाँ भी ऐसे व्यक्ति से शत्रुता रखते । 'सारावली' के अनुसार ऐसे व्यक्ति से कोई बाख स्त्री शत्रुता करती है । ऐसा व्यक्ति परिव्रमी होता है, और उसको मुख तथा नेत्र का रोग होता है । उत्तम भोजन, कपड़े और खुशबूदार वस्तुओं का शौकीन परन्तु पानी से डरता है । ऐसा व्यक्ति व्यवहार-प्रवीण, क्रिया-कुशल होता है ।

अंगरेजी ज्योतिष के भतानुसार इन्हें ६ की संख्या, शुक्रवार तथा सफेद या हल्का पीला रंग शुभ होगा ।^२

यदि आपका जन्म १५ जून तथा १५ जुलाई के बीच में हुआ है ।^३

पंजाब तथा बंगाल में इस महीने को आपाढ़ या असाढ़ कहते हैं । आपाढ़ की १ तारीख से ३० तारीख तक जिन लोगों का जन्म हुआ है उनको यह फलादेश लाया होगा । ऐसे व्यक्ति मिलनसार

१. विशेष विवरण के लिये देखिये

| | | |
|-----------------------------|-------|----|
| The Principles of Astrology | E. O. | पा |
| Zodiacal Influences | F. | B. |
| Harte | | |

२. अंगरेजी ज्योतिष के अनुसार

और दूसरों के साथ मिल कर काम करने वाले होते हैं। यदि कोधित हो जाएं तो कोध शान्त होने पर फिर पश्चात्ताप प्रकट करते हैं। विद्या-प्रेम तथा अध्ययनशीलता ऐसे व्यक्तियों में पाई जाती है और व्यापारिक बुद्धि भी होती है। अपने पसन्द के विषय पर ऐसे व्यक्ति प्रायः बहुत अधिक वातचीत करते हैं अन्यथा उनकी बुद्धि अन्तर्मुखी होती है। गान-वाद्य आदि भी इन व्यक्तियों को प्रिय होते हैं।

शार्थिक स्थिति में बहुत परिवर्तन होता रहता है। कभी बहुत सम्पन्न तो कभी द्रव्य-हीनता। इनके पद में भी इसी प्रकार परिवर्तन होते रहते हैं। इनके जीवन में कोटुम्बिक रहस्य तथा अन्तर्दृढ़ि का एक विशेष भाग होता है और पिता के निमित्त से कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। इनके सन्तान कई होंगी परन्तु उनमें आपस में या माता-पिता के प्रति विट्ठेप की भावना हो जायगी। कुटुम्ब के व्यक्तियों का मातहतों तथा भूत्यों के साथ मनोमालिन्य रहेगा। निम्नलिखित रोगों से पीड़ा की सम्भावना रहेगी—जहरीले जन्तु, चौपाये या चौपायों द्वारा आधात, मलेरिया, खसरा, मोतीभरा आदि तथा भस्तानों की कमजोरी।

प्रेम सम्बन्ध के परिणामस्वरूप बहुत दुख, कष्ट और निराशा होगी। सम्भव है एक से अधिक विवाह हों या विवाह के अतिरिक्त किसी से स्थायी प्रेम हो। अनेक प्रकार के तथा अनेक स्थिति के लोगों से मिश्रता होगी। इनमें से कई जातक के शत्रु हो जावेंगे।

जीवन के मध्य काल में अभ्युदय के मार्ग में बहुत बाधाएं होंगी। इसमें मुख्य कारण शत्रुघ्नी का प्रतिबन्ध होगा और इन शत्रुताओं के लिए जातक स्वयं उत्तरदायी होगा। जातक दो प्रकार

के काम करता रहेगा । एक मुख्य और एक गोण । एक मित्र से विश्वास-धात की आशंका है । सहयोगी, पड़ोसी तथा ससुराल पक्ष में ऐसे जातक के विरुद्ध काफ़ी पद्यन्त्र चलते रहेगे ।

इन लोगों का शुभ रत्न पन्ना है । श्वास के रोग तथा ठंड से बचना चाहिए ।

‘वराह मिहिर’ के मतानुसार जिनका जन्म इन तारीखों के बीच में हो वह विद्वान्, ज्योतिष-शास्त्र में प्रेम रखने वाला तथा धनवान् होता है । ‘सारावली’ के मतानुसार ऐसा व्यक्ति मेधावी, मधुरवाणी वाला, उदार प्रकृति का, बच्चों से बहुत प्रेम करने वाला, बहुत धनी और निपुण होता है । ऐसा पुरुष विनीत तथा बोलने में चतुर भीर बहुत मित्र वाला होता है । सम्भव है अपनी माता के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री ने भी इसके लालन-पालन में विशेष योग दिया हो ।^१

अंग्रेजी ज्योतिष के अनुसार इहे हरा या हलका पीला रंग, बुधवार तथा ५ की संस्था शुभ है ।

यदि आपका जन्म १६ जुलाई और १६ अगस्त के बीच में हुआ है^२

ऐसे व्यक्तियों का चित्त चलायमान भीर उद्धिन रहते हुए भी निरन्तर क्रियाशील रहता है । ऐसे व्यक्ति हृदय की बात को सहसा प्रकट नहीं करते और पवित्र आदर्शों पर कायम रहने की चेष्टा करते हैं, परन्तु उनके विचारों में हवाई किले वर्धने

१. विशेष विवरण के लिये देखें

Elementary Astrology by Sepharial तथा Star Dust by G. Hilda Fagan

२. अंग्रेजी ज्योतिष के अनुमार २२ जून से २३ जुलाई तक

की प्रवृत्ति बहुत होती है। उनको प्रकृति और मानसिक अवस्था में इतनी चंचलता रहती है कि दूसरे के साथ एकरस व्यवहार नहीं रख सकते। एक वात को छोड़कर नई के पीछे लग जाना और उसमें सहानुभूति तथा सफलता फी आशा करने का, इनका स्वभाव है। ऐसे व्यक्ति विवेकशील, स्वतन्त्र प्रकृति के तथा अनेक कार्यों में दश होते हैं। ऐसे जातक व्यापार में कुशल होते हैं और धन तथा सम्मान के लिए समृद्धि रहते हैं। इन व्यक्तियों में धार्मिक वृत्ति भी पाई जाती है। ऐसी स्थिर्यां परिश्रम करने वाली तथा हृदयमत करने की इच्छा करने वाली होती हैं। चन्द्रमा की राशि में सूर्य होने के कारण इनकी चित्त-वृत्ति इतनी बदलती रहती है कि कभी एक स्वभाव की ओर तो कभी दूसरे स्वभाव की ओर हो जाती हैं। और इस कारण ऐसी स्थिर्यां आवेश में था जाती है, परन्तु योद्धा देर में दान्त हो जाती है।

धनसंग्रह योद्धा कठिनता से होगा और जो होगा उसको सन्तान या सम्बन्धी वंशवाद करते रहेंगे। ताश, धुड़दोड़, सट्टे या चोरी द्वारा धन हानि की काफी आशंका है परन्तु जीवन के उत्तराद्ध में धनी होने की सम्भावना है। युवावस्था में अपनी पसन्द के मुताबिक व्यवसाय करने के मार्ग में काफी रोड़े अटकाये जायेंगे। भाई या भाइयों से भगड़ा हो या मृत्यु हो। अपने कुदम्ब के अलावा दूसरे कुदम्ब से विशेष सम्बन्ध रहेगा। सन्तान काफी चिन्ता उत्पन्न करती रहेगी। उनको अच्छी प्रकार कारोबार में लंगाने में कठिनता होगी, परन्तु सेवसे बड़ी सन्तान चच्च पद पर पहुँचेगी। ऐसे व्यक्ति प्रायः विवाह करना नहीं चाहते और विवाह हो जाने पर भी पति-पत्नी सम्बन्ध प्रेम मय रहीं रहता। और पति या पत्नी को जायंदाद

मिलने की सम्भावना है परन्तु मुकदमे के बाद इसमें सफलता मिल सकेगी ।

यात्राएँ काफी लम्बी होंगी और उनसे लाभ भी होगा और एक बड़ी यात्रा के बाद उसको प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी । स्थान परिवर्तन से घन तथा व्यवसाय दोनों को हानि होगी क्योंकि ऐसे मनुष्यों के सम्पर्क में आना होगा जिनसे १४, २६ और ३० वर्ष की आयु में क्षति की सम्भावना हैं ।

३५वें वर्ष के करोब जातक के जीवनक्रम में एक परिवर्तन आएगा, अच्छे से बुरा या बुरे से अच्छा । उसके बाद एक सा क्रम चलता रहेगा । जातक के बहुत से मित्र और सहायक होंगे । और इस समय में उत्तम स्त्रियों को सम्बन्धी पुरुषों द्वारा, तथा ऐसे पुरुषों का उच्च श्रेणी की स्त्रियों द्वारा लाभ की सम्भावना है परन्तु किसी देंसे सहायक की सहसा आर्थिक क्षति हो जाने के कारण जातक के भाग्य पर नाशकारी प्रभाव पड़ेगा ।

२०, ३२ तथा ४०वें वर्ष में मित्र रूप में जात होते हुए परन्तु वास्तव में गुप्त या प्रकट शम्भुओं के एड्यन्स से या विश्वासघात से क्षति की सम्भावना है । साधारणतया स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु फेफड़ों तथा पेट को विशेष मुरक्कित रखना चाहिए । शस्त्रों के आघात की भी आशंका है । इन जातकों पर चन्द्रमा का विशेष प्रभाव रहने के कारण जल मार्ग से, समुद्र पार की वस्तुओं से तथा साहित्य आदि से इन्हें विशेष लाभ हो सकता है । इन्हें निष्कारण चिन्ता होती है इसलिए चित में हड्डता रहनी चाहिए । भोती, ओपल (Opal) तथा Moonstone (मून स्टोन) पहनना लाभदायक है ।

'वराह मिहिर' के मतानुसार ऐसे व्यक्ति तीक्षण, शीघ्र कार्य करने वाले तथा दूसरों के अधीन काम करते हैं। इन्हें काफ़ी क्लेश प्रौर्धविकास उठाना पड़ता है। 'सारावली' के मतानुसार ऐसा व्यक्ति कर्म करने में चपल, विल्ल्यात, अपने पक्ष से भी द्वेष करने वाला, पिता आदि की आज्ञा न मानने वाला, दूसरों के कथन तथा देश के विषय में जानकारी रखने वाला होता है। इसे जीवन में काफ़ी श्रम उठाना पड़ता है। कफ तथा पित कुपित होने से रोग होते हैं। जिस समाज में मध्यपान प्रचलित है उस समाज के लोग मध्य-प्रिय भी होते हैं। यह स्वयं देखने में स्वरूपवान होते हैं, परन्तु इन्हें पति या पत्नी उतने सुन्दर नहीं मिलते।^१ कभी कभी अन्य प्रहों की हास्ति के कारण उपर्युक्त फल में अन्तर हो जाता है।^२ अंगरेजी ज्योतिष के अनुसार कुछ वंगनी या हल्का जामुनी रंग, सोमवार तथा २ को संख्या द्वुभ होगी।

पद श्रापका जन्म १७ अगस्त से १६ सितम्बर के बीच में हुआ है।^३

इस समय सूर्य सिंह-रोशि में होता है। इस कारण इस समय में उत्सल होने वाले व्यक्ति सिंह के समान निर्भीक, उदार और अभिमानी होते हैं। उनके चित्त में हड्डता, साहस तथा धैर्य विशेष मात्रा में पाये जाते हैं और वह अपनी इच्छित वस्तु को प्राप्त करने

१. विशेष विवरण के लिये देखिये

'Lyndoes' Plan with the Planets.

२. देखिये Some Principles of Horoscopic Delineation by C. E. O. Carter .. .

३. अंगरेजी ज्योतिष के अनुसार २४ जुलाई से २३ अगस्त तक

में ईमानदारी और प्रकट व्यवहारी काम में लाते हैं। ऐसे आदमी अभिमानी होने के कारण बहुत जल्दी नाराज़ हो जाते हैं परन्तु उनमें न्याय-प्रियता की भावा इतनी अधिक होती है कि उनके क्रोध से लोगों को अवारण हानि नहीं होती और बुराई का बदला भी भलाई से देते हैं। इनका प्रेम भी दृढ़ होता है। सिंह राशि में सूर्य अपनी राशि का होता है इसलिए इस राशि में सूर्य तथा सिंह दोनों की प्रकृति विशेष पाई जाती है। वीरता सम्पन्न होने के कारण ऐसे व्यक्ति सैनिक विभाग में शीघ्र उन्नति प्राप्त करते हैं और शासन सम्बन्धी कार्यों में विशेष सफल होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने परिथम से सम्पत्ति उपार्जित करते हैं परन्तु जुधा, सद्गु तथा उधार देने के कारण द्रव्य की हानि की भी सम्भावना है। द्रव्य के विषय में भाई-बहनों की ओर से उचित व्यवहार नहीं प्राप्त होगा। किसी एक निकट-सम्बन्धी की मृत्यु के कारण इनकी आधिक स्थिति को धक्का लगने की सम्भावना है। किसी एक यात्रा में कुछ विपद् की सम्भावना होगी। ज्ञायदाद के बैंटवारे के कारण सम्भवतः सम्बन्धियों से मन-मुटाव हो। किसी एक यात्रा के समय पिता को भी विपद् की सम्भावना होगी। ऐसी स्थियों को कभी कभी जुड़ले बच्चे होते हैं अथवा प्रसव के समय या उसके बाद विशेष कप्ट होता है। पति या पत्नी के विचारों से संवर्प के कारण सुख का अभाव होता है। चसीयत के द्वारा धन-ज्ञायदाद पाने की सम्भावना है जिसमें सम्बन्धियों द्वारा रोड़े अटकाये जायेंगे। यात्राएं काफी करनी पड़ेंगी। और एक विशेष यात्रा के बाद भाग्योदय होगा। ऐसे व्यक्तियों की प्रायः ऐसे पद मिलते हैं जिनमें सम्मान द्यादा होता है परन्तु ध्रुव कम। मित्रों की संस्था

चाहे अधिक हो परन्तु उनसे लाभ की सम्भावना कम और हानि की अधिक । परन्तु शावु ऐसे जातक से दबे हुए रहेंगे ।

निमोनिया, वातज-व्याधि तथा तिल्ली, हृदय और मसाने की बीमारियों से बचना चाहिए ।

पारचात्य ज्योतिषियों के मतानुसार इस समय पैदा हुए व्यक्ति बहुत खुशामदपसन्द होते हैं और यदि उनकी आवश्यकता से अधिक भी चापलूसो की जाय तो भी प्रसन्न ही होते हैं । एक फ्रांगरेज ज्योतिरी के मतानुसार ये प्रेम करने के शौकीन और स्त्रीमाव से बहुत जल्दवाज्ज होते हैं ।

'बराह मिहिर' के मतानुसार यदि सिंह राशि में सूर्य हो तो इस समय में उत्पन्न हुए मनुष्य को बन, पहाड़ और गायों में विशेष प्रीति होती है और मनुष्य वीर्यान्वित और बुद्धिमान् होता है ।

'सारावली' के मतानुसार जिसके जन्म के समय सिंह का सूर्य होता है वह व्यक्ति स्थिरसत्त्व, गम्भीर, विस्त्रित, दिति-पालक तथा धन-सम्पन्न होता है किन्तु वृद्धावस्था में ऊंचा सुनने लगता है । ऐसा व्यक्ति उत्साही, शूर, क्रोधी और तेजस्वी होता है । और उपरे शब्दों का नाश करने में समर्थ होता है ।^१ रविवार, १ राशा ४ दशी संख्या तथा पीला, सुनहरा और नारंगी का रंग इनके लिए धूम है । यदि ग्रापका जन्म १७ सितम्बर से १६ अगस्त तक हो तो^२

कन्या का सूर्य प्रायः १७ सितम्बर से १६ अगस्त तक रहता

१. विशेष विवरण के लिये देतिये

Practical Astrology by Salim Germanin तथा Astrology
Aspects by C. E. O. Carter.

२. अप्रैलो ज्योतिष के अनुसार १४ राशि से

है। पंजाब और बंगाल में प्रायः १ भाश्विन से ३० भाश्विन तक जा देशी तारीखें प्रयुक्त होती हैं उनमें से किसी दिन यदि जन्म हो तो यह विवरण विशेष मिलेगा।

इस समय जो जातक पंदा होते हैं वह स्वयं अपनी योग्यता से उच्च पदों पर पहुँचते हैं। इनकी प्रकृति में न्याय-प्रियता तथा दयाशीलता रहती है और यह प्रत्येक कार्य पर ठड़े दिमाग से विचार करते हैं। इसका अधिष्ठाता दुध है इस कारण दुध के अच्छे गुण, विचारशीलता, बुद्धिमत्ता आदि इन जातकों में विशेष मात्रा में पाए जाते हैं। परन्तु जैसा इस राशि का नाम है भर्यात् कन्या, उस राशि के अनुरूप गुण भर्यात् नन्दता तथा लज्जा का स्वभाव भी बहुत अधिक प्रभाव रखता है। शिक्षा की उन्नति तथा समाज में विशेष सम्पर्क में आने से अधिक अवस्था में लज्जीलेपन में कमी आ जाती है परन्तु यह इन का प्राकृतिक गुण है। इन जातकों को सहसा क्रोध नहीं आता परन्तु क्रोधित होने पर शान्त भी बहुत समय बाद होते हैं। अच्छा यह है कि इनके क्रोध से किसी को हानि नहीं होती और इनको अनुचित क्रोध पर पश्चात्ताप भी होता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः वामी होते हैं और चित्र तथा कलाओं में विशेष प्रेम होता है और पसन्द की छोटी-छोटी चीजों के संग्रह में विशेष रुचि होती है। अधिक शिक्षित लोगों में दार्शनिक तथा वैज्ञानिक अध्ययन में रुचि तथा तत्परता पाई जाती है।

बचपन में शारीरिक चोट लगने का विशेष अन्देशा होता है। प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक सफलता भी नहीं मिलती, बहुत परिश्रम और व्यक्तिगत योग्यता के कारण जो द्रव्य या उच्च पद प्राप्त करते हैं उसकी सहसा हानि की सम्भावना रहती है।

यात्राएँ भाग्योदय में सहायक होती हैं। सम्बन्धियों से कोई विशेष सहायता की अपेक्षा नहीं। भाई-बहन बहुत से होंगे परन्तु उनसे मुख नहीं होगा। वैवाहिक जीवन में भी अन्य प्रेमों के कारण वाधा की सम्भावना है। ऐसे जातकों को चाहिये कि अपनी सन्तान की रक्षा में विशेष प्रयत्न-शील हों क्योंकि इन (सन्तानों) का ऊँची जगह से गिर कर या फूँकने से या चौपायों द्वारा हानि की सम्भावना रहती है।

इन जातकों के प्रेम-सम्बन्ध में बहुत वाधाएँ होती हैं और इन वातों को लेकर सम्बन्धी तथा मित्रों में या पति-पत्नी के बीच भगड़े हो जाते हैं। यह व्यक्ति धार्मिक विचार के होते हैं। सम्भवतः ऐसा मनुष्य दूसरी शादी करे। दूसरे विवाह से इसके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आ जायगा। विरासत में कोई विशेष सम्पत्ति नहीं प्राप्त होगी और जो मिलेगा भी वह मुकदमेवाजी के बाद। यात्राएँ विशेष करनी, होंगी और शायद विदेश भी जाना पड़े। इन यात्राओं का सम्बन्ध या तो अपने धनोपार्जन से होगा या किसी उच्च-पदाधिकारी की आज्ञा से। ऐसे व्यक्ति बहुत परिश्रम के बाद धन-उपार्जन करते हैं और जिस कार्य को करते हैं, उसमें शारीरिक भय की भी सम्भावना रहती है। मित्र योद्धे होते हैं और उनसे कोई विशेष लाभ की सम्भावना नहीं होगी। कला जगत् तथा व्यापारिक जगत् के कुछ लोग ऐसे जातक से शत्रुता का भाव रखेंगे और नुकसान के कामों में रुप्या लगवा कर आर्थिक स्थिति करवायेंगे। पेट, जिगर तथा पैरों की विशेष रक्षा करनी चाहिये।

पाश्चात्य ज्योतिषियों के अनुसार ऐसे पुरुष अन्य स्त्रियों को और इस समय पैदा होने वाली स्त्रियाँ अन्य पुरुषों को

पित करने का विशेष गुण रखती हैं और इनके स्वभाव में स्थिरता नहीं होती। पेट की खराबी या स्नायु जाल की कमजोरी के कारण इन्हें रोग होते हैं।

“वराह मिहिर” के भतानुसार जिनका जन्म इस समय होता है उन पुरुषों का शरीर स्त्री के शरीर की भाँति कोमल व स्निग्ध होता है और ऐसे व्यक्ति चित्रकारी, काव्य तथा गणित में विशेष चतुर होते हैं।

‘सारावली’ के भतानुसार ऐसे व्यक्ति लज्जालु, मेधावी, गणेवजाने में निपुण, मृदु तथा दीन वचन बोलने वाले होते हैं। बहुत बार स्थिर-नक्षत्रों से संयोगवश, एक राशि के अन्तर्गत सूर्य-चार के फलादेश में बहुत भिन्नता हो जाती है।^१ परन्तु ऊपर सामान्य फल दिया गया है। अंग्रेजी ज्योतिष के अनुसार बुधवार, ५ की संख्या तथा अंगूरी या काफूरी रंग इन्हें शुभ होता है।

यदि आपका जन्म १७ अक्टूबर से १३ नवम्बर के बीच में हुआ है^२

इस महोने में सूर्य नीच का होता है परन्तु तुला का स्वाभाविक गुण है समता इसलिए ऐसे जातक दयालु, प्रेम करने वाले तथा शुद्ध विचार के होते हैं। क्रोध जल्दी आता है परन्तु जल्दी ही शान्त भी हो जाता है। सूर्य प्राणी की आत्मा है इस कारण आत्मिक शक्ति

१. प्रहों के प्रभाव के विशेष संदानिक प्रतिपादन के लिये देखिए :—

The Modern Text book of Astrology by Margaret E. Hone. तथा The Fixed Stars & Constellations in Astrology by V. E. Robson.

२. अंग्रेजी ज्योतिष के अनुसार २४ सितम्बर से २३ अक्टूबर

निवंल होती है। सूर्य ग्रहराज है; इसके चारों ओर अन्य ग्रह परिवर्तित होते रहते हैं। हमारी पृथ्वी सूर्य-मंडल का एक भाग है। इस कारण तुला में सूर्य के नीचस्थ होने के कारण बहुत से राजयोग अपना प्रभाव नहीं दिखा सकते हैं। तुला के सूर्य से राजयोग में इतनी कमी आ जाती है कि वराह मिहिर के पुत्र पृथुयशस ने तो यहाँ तक लिख दिया है कि यदि परम नीच सूर्य हो (करीब २७ अक्तूबर को जन्म हो) तो राजा का पुत्र भी हो तब भी भीख मांगेगा। इसलिए जिन कुराडिलियों में अच्छे ग्रह पढ़े हों परन्तु जन्म १८-२० अक्तूबर या २८ अक्तूबर को हो, अच्छे ग्रह अपना प्रभाव नहीं दिखा रहे हों, तो यह समझना चाहिये कि यह अच्छे प्रभाव को रोकने वाला ग्रह तुला का सूर्य है और सूर्य की आराधना करनी चाहिए।

ऐसे व्यक्तियों के विचार में और कार्यों में अनिश्चितता रहती है परन्तु ऐसे व्यक्तियों के दिमांग में उपज बहुत होती है और कला, विज्ञान तथा मशीनरी के कार्यों में प्रवृत्ति होती है परन्तु आत्मा में इतना बल नहीं होता कि इन सब बातों को अच्छी तरह पूरा करके जाभ उठा सकें। जीवन के मध्य भाग में ऐसे व्यक्ति का प्रायः

१. स्वप्रिकोणगृहं केचित् स्वोच्चं याताः स्वपन्दिरम् ।

पति नांचां रविद्वंचको न तेदा फससंभवः ॥

उच्चस्थोपि तुलाशेषा स्थितः कमलदोधनः ।

गार्यभौमस्य पुत्रोऽपि नोचत्वमधिग्लद्धति ॥

तुलापां दशामे भागे स्थितः कमलपोधनः ।

साहस्रं राजयोगाना नाशपत्याशु जन्मनि ॥

भाग्योदय होता है। जल यात्रा से सम्बन्ध या जल से चलने वाली मशीनरी से लाभ होने की सम्भावना है। धन की रक्षा के लिए अदालत में जाना होगा, जिसमें विजय होगी परन्तु स्थायी शत्रुता भी हो जायगी और अपनी पत्नी या पति से भत्तभेद भी हो सकता है। भाई-बहन बहुत हों उनमें से कुछ सम्भवतः सीतेले हों। भाई बहनों से सम्बन्ध प्रेम मय नहीं रहे। माता-पिता से भी कुछ मन-मुटाव रहेगा, विशेष कर पिता के साथ।

यदि जातक मध्याह्न के बाद और मध्यरात्रि से पहले पैदा हुआ है तो उसको पितृसुख अल्प होगा। सन्तान थोड़ी होंगी और उनमें से एक के कारण काफी चिन्ता उठानी होगी। कोटुम्बिक जीवन में समय-समय पर उथल-पुथल होती रहेगी और यह सम्भव है कि ऐसा व्यक्ति किसी को गोद ले या किसी की गोद स्वयं जाए या किसी परिवार के साथ सम्मिलित हो। मसाने तथा मलाशय कमजूर रहें। विवाह से धन की सम्भावना है और सम्भव है किसी सम्बन्धी की भूत्यु से आकर्षिक धन-लाभ हो। समुद्र-यात्रा से कोई लाभ नहीं होगा प्रत्युत् हानि की सम्भावना है। जीवन के मध्य भाग में पद-हानि की सम्भावना है और सम्भवतः साक्षात् या परोक्ष रूप से माता का इस पद-हानि से कुछ सम्बन्ध हो। ऐसे व्यक्ति के पृष्ठपोषक भी बहुत से होंगे और उनकी सहायता से अच्छी जगह विवाह तथा ऊचे स्थान की प्राप्ति भी होगी, परन्तु उन्हीं सहायकों में से एक का ऐसा जातक महा भपकार भी करेगा। कोटुम्बिक मामलों को लेकर कुछ धार्मिक दोग्र के व्यक्तियों से शत्रुता भी होगी तथा यकील और विद्वानों से भी ऐसे व्यक्ति की शत्रुता होगी।

ऐसे व्यक्ति स्वयं अपने लिए कष्ट पैदा करते हैं और एक प्रकार

से अपनी मृत्यु के कारण भी स्वयं ही होते हैं। इसमें पैदा होने वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य तो अच्छा रहता है परन्तु शारीरिक ढाँचा बहुत मजबूत न होने के कारण वह अपने स्वास्थ्य के विषय में चिन्ता करते रहते हैं।

नीला या हल्का नीला रंग ऐसे लोगों के लिए विशेष अनुकूल होता है। शुक्रवार और ६ की संस्था भी इन्हें विशेष महत्वपूर्ण होती है। 'वराह मिहिर' के मत से ऐसे समय पैदा होने वाले मनुष्य यदि मध्य (शराब), डिस्टलरी, हाथी, पान, रास्ता चलने का काम (धूम धूम कर देचना) इनसपैक्टर, स्वर्ण का काम, या धन के लोभ से किसी भी हीन काम को करें (जो अच्छा नहीं समझा जाता हो) तो इन्हें अच्छा लाभ होता है।

'साराबली' के भतानुसार ऐसा व्यक्ति बहुत व्यय करने वाला, विदेश में पूमने वाला, लोहे या दूकानदारी के कार्य से जीविका उपायें करने वाला होता है या दूसरों को नोकरी करता है।^१

यदि आपका जन्म १४ नवम्बर से १४ दिसम्बर के बीच में हुआ हो।^२

वृश्चिक का सूर्य प्रायः १४ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक रहता है। इस समय जो जातक पैदा होते हैं वह लोग तीक्षण युद्ध वाले परन्तु चंचल स्वभाव के आदर्शवादी, अपनी धून के तथा धार्मिक-विचार के होते हैं। इच्छाशक्ति दृढ़ होती है और धैर्य के साथ काम में लगते हैं। स्वभाव जोशीला और क्रोधीला होता है। भय के काम

१. विशेष विवरण के लिये देखिये:—

Astrology For Every One by Evangeline Adams, तथा
Cheiro's "When were you born?"

२. ग्रेगोरी ज्योतिष के अनुसार २४ अक्टूबर से २१ नवम्बर तक

में पढ़ने से ऐसे लोग भिजकते नहीं हैं। एक बार क्रोध आने पर ऐसे लोग क्षमा करना नहीं जानते। मन में क्रोधाग्नि भीतर ही भीतर धधकती रहती है और यद्यपि बाहर से यह मालूम होता है कि यह शान्त हो गये परन्तु प्रतिहिंसा की भावना उनके अन्दर और भी भयानक रूप धारण कर लेती है और विना परिणाम का विचार किये शीघ्रता-पूर्वक बदला लेने की भावना से ऐसे व्यक्ति अपने प्रतिद्वन्द्वी की निर्दयता से हानि पहुँचाने की चेष्टा करते हैं। जिनके शरीर में कफ प्रकृति प्रधान होती है वह केवल अपने व्यक्तित्व से अपने विरोधी को दबाते हैं। यदि शिक्षा से ऐसे व्यक्ति सुसंकृत न हों तो प्रायः भगड़ालू स्वभाव के होते हैं और अकारण ही संघर्ष में आ जाते हैं। ऐसे जातक निपुण तथा धैर्यवान् होते हैं और ग्राम-जीवन तथा खेती के कारोबार को पसन्द करते हैं। अपने विचारों में वह इतने चिह्नी होते हैं कि दूसरों के समझाने से नहीं मानते। जीवन के पूर्वाद में ऐसे व्यक्तियों का भाग्योदय नहीं होता परन्तु उत्तराधि में काफी सफलता मिलती है।

पं० जवाहरलाल नेहरू, डा० राजेन्द्र प्रसाद, श्री राजगोपाला-चार्य, और श्री मावलंकर आदि बहुत से लोगों के ऐसे उदाहरण हैं जिनका विशेष अभ्युदय जीवन के उत्तराद्वं में हुआ। बुद्धिक का अर्थ है विच्छू। इसका आगे का आधा हिस्सा मृदु तथा एक प्रकार से अप्रभावशाली है। विधि को तीव्रता उत्तराद्वं में है। इस रायि में जब सूर्य होता है, सब जो मनुष्य पैदा होते हैं उनके जीवन के पदिच्चम काल में विशेष अभ्युदय का मही हेतु है।

ऐसे आदमियों को विरासत में सम्पत्ति मिलने का भी योग होता है। भाई थोड़े होंगे और उनमें से एक को ऊंचे से गिरने पा-

झूंवने का अन्देशा होता है। यदि ऐसा जातक मध्य रात्रि के बाद और मध्याह्न के पूर्व पैदा हुआ हो तो इसके पिता का पद और भाग्य नप्ट हो जाता है। सन्तान बहुत होती हैं। ज्वर, सिर दर्द तथा स्नायु सम्बन्धी दर्द की विकायत होती हैं। इनका हेतु अत्यन्त परिश्रम या अत्यन्त भोग होता है। एक कड़ी दीमारी होगी परन्तु उससे जातक मुक्त हो जायगा। ऐसा मनुष्य अवश्य विवाह करेगा और सम्भावना यह है कि प्रथम पत्नी का सुख अधिक न हो और दूसरा विवाह करे। पत्नी को किसी चौपाए से या दुधंटना से चोट लगने का भी अन्देशा होता है।

यह भी सम्भावना है कि ३० वर्ष की अवस्था के पहिले किसी प्रेमी या मित्र की मृत्यु हो, जिससे हृदय को आघात लगे। काफी यात्राएँ करनी होंगी पर उन से कोई विशेष लाभ नहीं होगा। यद्योकि ऐसे जातकों को प्रोट्रावस्था के बाद सफलता प्राप्त होगी, जीवन का पूर्व भाग भाग्योदय के लिए संघर्ष में ही बीतेगा। मित्र, बहुत होंगे और उच्च पदस्थ व्यक्तियों की कृपा भी प्राप्त होगी, किन्तु किसी एक मित्र अथवा संरक्षक के कारण सफलता में या प्रेम-सम्बन्ध में वाधा होगी। शत्रुताएँ भी बहुत होगी और प्रायः स्थायी रहेंगी। ऐसा मनुष्य समुद्रयात्रा करेगा तो विदेश में शारीरिक आघात का भय होगा। ऐसे व्यक्ति कफ-पित्त प्रधान होते हैं। ऐसे व्यक्तियों में क्रोध और ईर्ष्या की मात्रा विशेष होती है। ऐसे जातकों को कमर से नीचे भाग में रोग होने की विशेष सम्भावना रहती है, इस कारण सब प्रकार के संक्रामक रोगों से बचना चाहिए। ठंडे पानी का एनीमा लेना विशेष लाभदायक है।

राजनीतिश, आलोचक, डॉक्टर, इन्जीनियर, मरीन के कार्य

आदि में यह लोग विशेष सफल हो जाते हैं। मंगलवार और ६ की संख्या इनके लिए महत्वपूर्ण होगी। कुछ श्यामता लिए हुए लाल रंग भी लाभप्रद होगा।

ऐसे लोग दूसरों के हृदय की बात भाँप लेते हैं परन्तु इनके पेट की थाह पाना कठिन होता है।

वराहमिहिर के मतानुसार ऐसे व्यक्ति साहसी, शास्त्र में पंडित तथा औपधि एवम् विष-चिकित्सा से विशेष धन उपार्जन कर सकते हैं।

‘सारावली’ के मतानुसार ऐसे व्यक्ति क्रोधी, सत्तम से विमुख, स्त्री-सुख से हीन, तथा कलह-प्रिय होते हैं।^१

यदि आपका जन्म १५ दिसम्बर से १३ जनवरी के बोच में हुआ हो।^२

जिन मनुष्यों का जन्म इस समय होता है उन पर वृहस्पति का शुभ-प्रभाव रहता है क्योंकि इस समय सूर्य वृहस्पति के घर में होता है। ऐसे व्यक्ति बुद्धिमान, ईमानदार तथा उदारहृदय के होते हैं और बिना प्रत्युपकार की भावना के दूसरों के साथ भलाई करते रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों को क्रोध शीघ्र आ जाता है परन्तु शीघ्र ही शान्त भी हो जाता है। छोटी-छोटी बातों पर ऐसे व्यक्ति चिन्ता करते रहते हैं और भविष्य में आशंकित विपत्ति से परेशान रहते हैं। यह लोग स्वतन्त्रता के प्रेमी होते हैं। ये व्यक्ति वाग्मी होते

१. इस सम्बन्ध में एक भव्य पुस्तक :—

“Character Reading Made Easy” by Frederic K. Meier.

२. प्रहों के प्रभाव के विशेष इध्यपन के लिये देखिये

“The Principles of Astrology” By C.E.O. Carter.

३. अगरेती ज्योतिष के अनुसार २२ नवंबर से २२ दिसम्बर तक।

हैं, और अध्ययन-प्रिय भी। विचारों में परिवर्तन होते रहते हैं। ये कारीगरी के कामों में भी निपुण होते हैं।

बचपन में इनकी आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं होती और पिता को आर्थिक-क्षति की भी सम्भावना है; परन्तु अपने उद्यम से उन्नति करेंगे। भाई-बहन कम होंगे और उनमें से एक के जीवन को कम उमर में अन्देशा होगा। माता-पिता या सास-ससुर में से एक से मतभेद हो-और अपनी सबसे बड़ी सन्तान के कारण काफ़ी चिन्ता होगी। अपनी सन्तान से भी कुछ अनदबन रहे। सम्भवतः विवाह दो हों, उनमें से एक के कारण काफ़ी क्षति उठानी पड़े। दो प्रकार के कार्य जातक एक साथ करता रहेगा, उनके कारण कार्य में बाधा भी रहेगी। ३० वर्ष की अवस्था तक ऊपर से गिरने का या ऊंचे पद पर पहुँचकर फिर नीचे आने का काफ़ी अन्देशा है। यात्राएँ काफ़ी करनी पड़ेंगी और किसी एक यात्रा के मध्य में विसी सम्बन्धी की मृत्यु का समाचार मिलेगा। मित्र बहुत होंगे परन्तु एक मित्र के विश्वासघात के बारण जातक की स्थिति को काफ़ी धक्का पहुँचेगा। व्यवसाय तथा प्रेम दोनों क्षेत्रों में शत्रुओं से संघर्ष होगा।

ऐसे व्यक्तियों को बृहस्पतिवार और ३ की संख्या शुभ होती है। गहरा नीला रंग भी इनके अनुकूल होगा।

जो व्यक्ति इस महीने में पैदा होते हैं वे खेल-बूद तथा घोड़े को सवारी के बहुत शौकीन होते हैं। यदि सेना में प्रविष्ट हों तो तीरन्दाजी अथवा गोली चलाने में बहुत निपुण होंगे। इनके शरीर में या तो स्नायु-मंडल की कमज़ोरी के कारण रोग की आशंका होगी या वायु-जनित पीड़ा।

'वराह मिहिर' के मरानुसार जो व्यक्ति इस समय पैदा होते हैं

वे सत्पूज्य, धनवान्, वैदिक कार्य में मुश्ल तथा शिल्पकला में कुशल होते हैं : किन्तु उनकी प्रकृति में तीक्ष्णता रहती है ।

‘सारावली’ के मतानुसार भी ऐसे व्यक्ति धनी, सरकार से सम्मानित, बन्धुओं के हितकारी और अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण होते हैं ।^१

यदि आपका जन्म १४ जनवरी से १३ फ़रवरी के बीच हुआ हो ।^२

मकर का सूर्य प्रायः १३-१४ जनवरी से १३ फ़रवरी तक रहता है । मकर राशि का स्वामी शनि है इसलिए जातक में बहुत से गुण शनि के पाये जाते हैं । इस समय जो पैदा होते हैं वह स्वयं अपने उद्यम से अपने भाग्य का निर्माण करते हैं और जो सम्पत्ति उपार्जित करते हैं उसको नष्ट नहीं करते । शनि परिश्रमशील ग्रह है, इस कारण ऐसे जातक भी फुर्तीले और परिश्रमशील होते हैं । मध्यरात्रि के बाद और मध्याह्न के पहले यदि जातक का जन्म हो तो उसमें यह गुण विशेष मात्रा में पाये जायेगे । परन्तु यदि इसके अतिरिक्त १२ घण्टे में जन्म हुआ तो शरीर का कोई अंग दोष-युक्त हो या आकस्मिक घटना द्वारा ऐसा दोष बाद में उत्पन्न हो जाए । स्वभाव में उत्साह के साथ-साथ भगड़ालू प्रकृति भी होती है । भीतर से भन कभी-कभी बहुत उदास हो जाता है ।

ऐसे व्यक्ति द्रव्य कम खर्च करना चाहते हैं और जोड़ कर रखना चाहते हैं । व्यापारी बुद्धि इन लोगों की अच्छी होती है और एक से अधिक वारों में समान रूप से दक्ष होते हैं । इच्छा

१. देखिये “How to Judge Nativity” तथा “Key to Your Nativity” By Alan Leo । इन्हें ज्योतिष की पह अच्छी पुस्तक हैं ।

२. अंगरेजी ज्योतिष के मनुसार २३ दिसंबर से २० जनवरी तक ।

शक्ति प्रबल होती है और इस कारण अपने ध्येय में सफल होते हैं। इनके व्यवहार में उतना इखलाक नहीं रहता, जितना कि रहना चाहिए; इसलिए कुछ उद्घड़ता का प्रभाव पड़ता है। क्रोध देर में होता है और शान्त भी देर से। बिना सोचे-विचारे, ऐसे व्यक्ति कोई काम नहीं करते। इनके कामों में फुर्ती होती है और जन्म कुण्डली के २, १२, ६, ८ में यदि क्रूर ग्रह न बैठे हों तो दृष्टि शक्ति अच्छी होती है।

अपने उद्यम से धन प्राप्त होगा। भाई-बहन कई होंगे परन्तु सहायता की अपेक्षा हानि की सम्भावना अधिक है। छोटी-छोटी यात्रायें भी बहुत सी होंगी। पिता के किन्हीं २ व्यवहारों से खिलता होगी और कोटुम्बिक परिस्थितियाँ भी असन्तोष का कारण होंगी। इनके विवाहिक सुख में भी कुटुम्बियों द्वारा अड़चन डाली जायेंगी। जीवन में पूर्वाद्दृ में चोट लगने का या अधिक बीमार होने का ढर है। बहुत बच्चे नहीं होंगे और इनके अपने व्यवहार के कारण बच्चों का जीवन उतना सक्रिय न हो सकेगा या उनके कारण इनके स्वयं के जीवन में, सफलता में बाधा होगी। यात्रा में काफी अड़चनें रहेंगी और सम्बन्धियों के कारण परेशानियाँ उठानी पड़ेंगी।

शनि की राशि होने के कारण बात-व्याधि से ऐसे जातक पीड़ित होंगे। हाथ-पैर या जोड़ों में गठिया हो या बायु के कारण पाचन-शक्ति में गड़बड़ हो। ऊंचे से गिरकर चोट लगने का भी अन्देशा है। बिना किसी विशेष बीमारी के भी ऐसे आदमियों को कभी कभी बीमारी का बहम रहता है।

विवाहित जीवन में पूर्णसुख प्राप्त नहीं हो और एक से

अधिक विवाह भी हो सकते हैं। शत्रु बहुत होंगे और कंचो स्थिति के तथा नीची श्रेणी के—दोनों ही प्रकार के लोग शत्रुता करेंगे। भाई-बहन—कम से कम उनमें से एक—इसका मित्र सावित नहीं होगा परन्तु अन्त में विजय जातक की होगी।

ऐसे अवित बहुत महत्वाकांक्षी होते हैं किन्तु परिश्रम-पूर्वक ऐसे कार्य द्वारा धन उपार्जन करते हैं जिनमें कोई धाटे की आशंका न हो।

शनिवार और द की संस्था इनके लिए विशेष महत्वपूर्ण है। हरा अथवा काला खाकी रंग इनके लिए शुभ है।

इन लोगों को रोग पाचन-शक्ति की खराबी के कारण होते हैं और वृद्धावस्था में हृदय-रोग के होने की भी सम्भावना है अथवा वायु-विकार के कारण रोगों से पीड़ा हो।

'वराह मिहिर' के मतानुसार यदि मकर में सूर्य हो तो मनुष्य अनुदार, अज्ञ, कुत्सित वाणिज्य करने वाला, अत्य धनवान होता है।

'सारावली' के मतानुसार ऐसे आदमी के बन्धु उसका साथ नहीं देते। वह भीरु, तृप्णासहित गहु कार्यरत तथा लोभी होता है।^१

बहुत बार नक्षत्र विशेष से सूर्य युति होने पर उपर्युक्त सामान्य फलादेश में अन्तर भी पड़ जाता है, जो केवल जन्म कुण्डली द्वारा जाना जा सकता है।^२

१. विशेष विवरण के लिये देतिये "You and Your Star" by Cheiro (पृष्ठ १-४०)

२. देतिये "The Fixed Stars and Your Horoscope by Dr. W. J. Tucker,

यदि प्राप्तका जन्म १४ फरवरी और १३ मार्च के बीच में हुआ हो ।^१

कुंभ का सूर्य १४ फरवरी से १३ मार्च तक रहता है। जो लोग इस समय पैदा होते हैं उनकी ललित कलाओं की ओर विशेष सूचि होती है और सफलता भी प्राप्त करते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः दीर्घजीवी होते हैं और वकृत्व तथा लेखन शक्ति अच्छी पाई जाती है। इनकी प्रकृति में सादगी, मधुरता तथा ईमानदारी होती है और कोध आने पर भी अधिक दिनों तक ईर्ष्या का भाव मन में नहीं रखते।

इनकी कार्य-प्रणाली में तर्क की अपेक्षा इच्छा शक्ति ही अधिक रहती है। यह लोग एकान्त-प्रिय, धैर्य-शोल तथा परिश्रमी होते हैं। एक बार जो राय कायम कर लेते हैं उस पर स्थिर रहते हैं। जो जायदाद ये लोग उपार्जित करेंगे वह स्थायी रूप से इनके अधिकार में नहीं रहेगी और शत्रुता का भाव रखने वाले व्यक्तियों के पड्यन्त्र के कारण जायदाद से बचित होना पड़ेगा। ऐसे शत्रुओं में वह भी होंगे जो वाहर से मिश्र मालूम होंगे।

ऐसे जातक काफी यात्राएँ करेंगे। परन्तु उनसे कोई विशेष लाभ नहीं होगा प्रत्युत् धन तथा स्वास्थ्य में हानि की सम्भावना है। भाई-बहन थोड़े होंगे परन्तु उनसे कोई प्रेमपूरण व्यवहार नहीं प्राप्त होगा। किसी यात्रा में जल, शस्त्र या चौपाएँ से चोट लगने का अन्देशा है। पिता की आकस्मिक मृत्यु हो या संहसा धन का नाश हो।

ऐसे व्यक्तियों के कभी कभी जुड़ले बच्चे होते हैं और स्त्रियों

१. ग्रंगरेखी ज्योतिष के अनुसार २१ जनवरी से १६ फरवरी तक।

को प्रसव के समय भारी कष्ट की सम्भावना रहती है। जो वस्त्रे होंगे उनका स्वास्थ्य बहुत हड़ नहीं होगा और उनके पालन-पोषण में परिश्रम उठाना होगा।

पेट और केफ़ड़ों की बीमारियों तथा सिर दर्दसम्बन्धी बीमारी होने का भय है। जिसका जन्म सूर्योदय के करीब होता है उनको प्रायः हृदय रोग की बीमारी होती है। इसके लिए सूर्य की आराधना करनी चाहिए। इसी कारण कुंभ राशि के अनेक नामों में से एक नाम “हृदय रोग” भी है।

इनके भाग्योदय में उत्तार-चढ़ाव काफी होगा और उच्च श्रेणी के व्यक्ति सहायता में तत्पर होंगे। इसी प्रकार शत्रु काफी होंगे परन्तु अन्त में सब कठिनाइयों को पार करके ऐसे व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करते हैं।

जिन व्यक्तियों का इस समय जन्म होता है उनको कंठरोग (टांसिल आदि) की शिकायत की भी सम्भावना होती है और वात-जनित पीड़ा न हो इसके लिए रक्त की शुद्ध रखना चाहिए। यदि स्वास्थ्य का ध्यान ठीक न रखा जाय तो अधिक अवस्था में रक्त-चाप (ब्लड प्रेशर) का भय रहता है।

हल्का नीला या बंगनी रंग इनके लिए शुभ होगा। कुछ पाश्चात्य ज्योतिषियों के अनुसार ४ की संख्या तथा शनिवार इनके लिए शुभ है।

‘वराह मिहिर’ के अनुसार यदि जन्म के समय कुंभ का सूर्य हो तो मनुष्य निम्न-वृत्ति का, घन-रहित, भाग्यच्युत होता है और उसे सन्तान-कष्ट सहन करना पड़ता है अर्थात् कोई सन्तान नहीं हो या सन्तान आज्ञाकारी न हो।

'सारावली' के मतानुसार जो पुरुष इस समय पैदा होते हैं वे चुगली करने वाले, व्यर्थ दात करने वाले, शठ होते हैं। उन्हें दुःख उठाना पड़ता है, किसी से स्थायी मित्रता नहीं होती और धन-संग्रह करने में सफल नहीं होते।

यह सूर्य का राशिगत सामान्य फल है। प्राचीन अंगरेज ज्योतिषियों द्वारा जो विशेष फलादेश किया गया है उसके लिये निम्न-लिखित पुस्तक देखनी चाहिए।^१

यदि आपका जन्म १४ मार्च और १२ अप्रैल के बीच में हुआ हो।^२

मीन का सूर्य १४ मार्च से १२ अप्रैल तक रहता है। मीन जल-राशि है, इसका स्वामी बृहस्पति है। इस कारण जो जातक इस समय में पैदा होते हैं उनमें जल-राशि तथा बृहस्पति से प्रभावित सूर्य के शुण आ जाते हैं।

ऐसे व्यक्ति कला-विज्ञान तथा साहित्य में विशेष निपुण होते हैं और अपने गुणों द्वारा प्रसिद्ध प्राप्त करते हैं। बिना चेष्टा किये यह लाक्षण्य हो जाते हैं। इनकी प्रकृति में बेचैनी होती है, और अपने कार्य की स्वयं आलोचना किया करते हैं। इनके विचारों में परिवर्तन होता रहता है और चाहते हैं कि शीघ्र से शीघ्र अपने उद्देश्य पर पहुँचे। इनकी प्रकृति में ईमानदारी होती है, परन्तु कल्पनाशील अधिक होते हैं।

विलास प्रिय होने पर भी स्वाभिमान के कारण नीचे गिरने की

१. देखिये Lilly's Astrology By Zadkiel, Published by G. Bell And Sons Ltd. तथा Ptolemy's Tetrabiblos (English Translation by Aslumond)

२. पंचेत्रो ज्योतिष के अनुसार २० फरवरी से २० मार्च तक

प्रवृत्ति को रोकते हैं। इनमें अधिकारी होने की भावना विशेष होती है। लोगों से मिलनसारी और मिश्रता का भाव रखते हुए भी अपने हृदय की धान नहीं बताते। ऐसे व्यक्ति परिश्रमी होते हैं और दूसरों का बहुत आतिथ्य करते हैं तथा वार्तानाप में बहुत निपुण; लिखने पढ़ने में भी बहुत प्रवीणता होती है। स्वयं अच्छा भोजन करने के शौकीन होते हैं तथा दूसरों को दावत देने का भी शौक होता है।

स्वयं अपने गुणों के कारण काफ़ी धन उपार्जन करेंगे परन्तु फजूल खर्ची, सट्टा या सम्बन्धियों द्वारा धन का अपव्यय होगा। ऐसे व्यक्ति एक से अधिक काम में समान रूप से निपुण होते हैं और दोनों काम एक साथ करते रहते हैं। भाइयों की अपेक्षा वहनें अधिक होंगी और एक की मृत्यु कम मवस्था में हो ऐसी आशंका है। वचपन में इनके पिता के भाग्य का अपकर्य हो। ऐसे लोग यात्रा भी अधिक करते हैं और साथ-न्साथ धन उपार्जन भी। सम्भवतः जायदाद सम्बन्धी मुकदमा भी करना पड़े। थोड़ी अवस्था में घर थोड़ कर जाना पड़े। विवाह भी एक से अधिक हों। इन में से एक विवाह से काफ़ी परेशानी पड़े। स्थान-परिवर्तन कई बार हो। कुदम्ब में आकस्मिक दुर्घटनाएँ भी हों।

इस समय में पैदा होने वाली स्त्रियों को गर्भाशय सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना है। पुरुषों को भी गुप्त अंगों में रोगों की सम्भावना रहती है। हृदय तथा नेत्र सम्बन्धी चीमारियों से वचते रहना चाहिए। दुर्स्वप्न आवें। असली गिर बहुत थोड़े हों। किसी एक मित्र के कारण, जो शत्रु हो जाए, बड़ा भारी आपात हो। ऐसे व्यक्ति प्रायः समाज में प्रतिष्ठा लाभ करते हैं।

इस समय जो मनुष्य पैदा होते हैं उन्हें गहरा नीला रंग और

वृहस्पतिवार शुभ होता है। ३ और ७ की संख्या भी शुभ होती है।

'बराह मिहिर' के मतानुसार जिनके जन्म के समय सूर्य मीन राशि में हो वे यदि जल रो निकली हुई वस्तु या समुद्रपार देशों से माल मेंगाने का या भेजने का (Import and Export) काम करें तो विशेष धन-लाभ हो सकता है।

'सारावली' के मतानुसार ऐसे मनुष्य मीठी वाणी बोलते हैं परन्तु उनमें ग्रसत्य की मात्रा भी होती है। स्त्रियों के सम्पर्क से इन व्यक्तियों का भाग्योदय होता है। ये लोग शत्रु पर विजय पाते हैं और इनके बहुत से पुत्र तथा भूत्य होते हैं।^१

प्रायः सूर्य के विविध राशियों में होने से प्रत्येक राशि के फलानुसार जातकों के स्वभाव, प्रभाव और भाग्योदय आदि में भी परिवर्तन होता है। इसलिए पिछले पृष्ठों में सामान्य फल दिया गया है। किन्तु अन्य ग्रह बदलते रहते हैं। और किसी एक दिन में भी बारह लग्न ही जाते हैं। इस कारण प्रत्येक मनुष्य की जन्म कुराडली भिन्न होती है और सामाजिक स्थिति, वातावरण—देश, काल, पात्र—के भेद से भिन्न-भिन्न फल दिलाइ देते हैं, किन्तु हम अपने अनुभव के आधार पर यह अवश्य कह सकते हैं कि जो सूर्य का भिन्न २ राशि के अनुसार फल दिया गया है उसकी मुख्य-मुख्य वातें अवश्य मिलती हैं।

अंग्रेजी ज्योतिष के आधार पर भिन्न-भिन्न सौर (सूर्य के) मासों में पैदा होने वाले व्यक्तियों के शुभ और अशुभ अंक भी लिख दिये हैं परन्तु हमारा अपना अनुभव यह है कि अंग्रेजी की जन्म तारीख

१. विशेष विवरण के लिये देखिए 'Your Fate by Stella Coeli तथा 'The Zodiac and the Soul' by C. E. O. Carter

का जो अंक होता है उसके अनुसार शुभ अन् अधिक मिलता है। उदाहरण के लिए ऊपर यह बताया गया है कि १४ फरवरी से १३ मार्च तक जो व्यक्ति पैदा हुए हों उनके लिए ४ का अंक शुभ है, ऐसा अनेक अंग्रेज ज्योतिषियों ने लिखा है, इस कारण इस विचार को थोड़ी सी मान्यता हमने भी अपनी पुस्तक में दे दो है परन्तु यदि कोई मनुष्य २३ फरवरी को उत्तम हुआ हो तो २३ का मूल अंक $2+3=5$ होने के कारण हमारे विचार से उसे ५ का अंक ही विशेष शुभ होगा।

मेलापक-विचार

जिस प्रकार अंक-विद्या से शुभाशुभ वर्ष, मास या दिन का विचार किया जाता है, अथवा 'प्रश्न' में अंक-ज्योतिष की उपयोगिता होती है, उसी प्रकार अमुक पुरुष का विवाह अमुक स्त्री से उपयुक्त होगा या नहीं, इस विषय में पादचात्य ज्योतिषियों ने बहुत विचार किया है। एक अंग्रेज ज्योतिषी ने तो कई सीं पूळ की—केवल इस विषय की पुस्तक^१ लिखी है कि अमुक मास में पैदा होने वाला पुरुष अमुक मास में पैदा होने वाली स्त्री से विवाह करे तो किस प्रकार की गारीरिक तथा मानसिक सुख-दुःख की उपलब्धि होगी। परन्तु इस पादचात्य दंवज्ञ ने केवल जन्मस्थ सूर्य को ही समस्त विचार का आधार रखा है। हमारे विचार से यद्यपि सूर्य ग्रहराज है तथापि केवल सूर्य-स्थिति को आधार मान कर वर-वधू मेलापक विचार करना समीचीन नहीं। भारतीय ज्योतिष के अनुसार जन्म के समय जिस नक्षत्र में चन्द्रमा था उसी के आधार पर वर-वधू के

1. *Successful Marriage by Phares* : Published by Richard Arling Ltd. 210-11 Piccadilly, London.

गुण (नाड़ी, गण, वश्य, वर्ण आदि) मिलाये जाते हैं। अंक-विद्या के पोषक अंग्रेजी की जन्म तारीख को महत्व देते हैं और यदि वर तथा वधू की जन्म की तारीखों में सहानुभूति है तो उनके विचार से वर-वधू में प्रेम रहेगा। किन-किन तारीखों के मूल अंक में सहानुभूति है यह दृतीय प्रकरण में बताया जा चुका है। नीचे सब तारीखों को ५ वर्गों में विभाजित किया गया है।

| | |
|-------------------|-------------------|
| (क) १, १०, १६, २८ | (ख) २, ११, २०, २६ |
| ४, १३, २२, ३१ | ७, १६, २५, |
| (ग) ३, १२, २१, ३० | (घ) ५, १४, २३ |
| ६, १५, २४ | |
| ८, १८, २७ | (ङ) ८, १७, २६ |

इस वर्गीकरण के अनुसार पुरुष की जन्म तारीख (क) के अन्तर्गत हो तो कन्या की जन्म तारीख (क) या (ख) के अन्तर्गत होना उत्तम है। यदि पुरुष की जन्म तारीख (ख) के अन्तर्गत हो तो कन्या की जन्म तारीख (क) या (ख) के अन्तर्गत होना उत्तम है। यदि पुरुष की जन्म तारीख (ग) के अन्तर्गत हो तो कन्या की जन्म तारीख भी (ग) में होनी चाहिये। यदि पुरुष की जन्म तारीख (घ) के अन्तर्गत हो तो कन्या की जन्म तारीख का (घ) के अन्तर्गत होना उत्तम है।

किन्तु यदि पुरुष की जन्म तारीख ८, १७ या २६ हो तो, “ऐसी कन्या से विवाह करे जिसकी जन्म तारीखका मूल अंक ८ न हो वयोंकि स्त्री तथा पुरुष दोनों का मूल अंक ८ हो यह अभिप्रेत नहीं है।

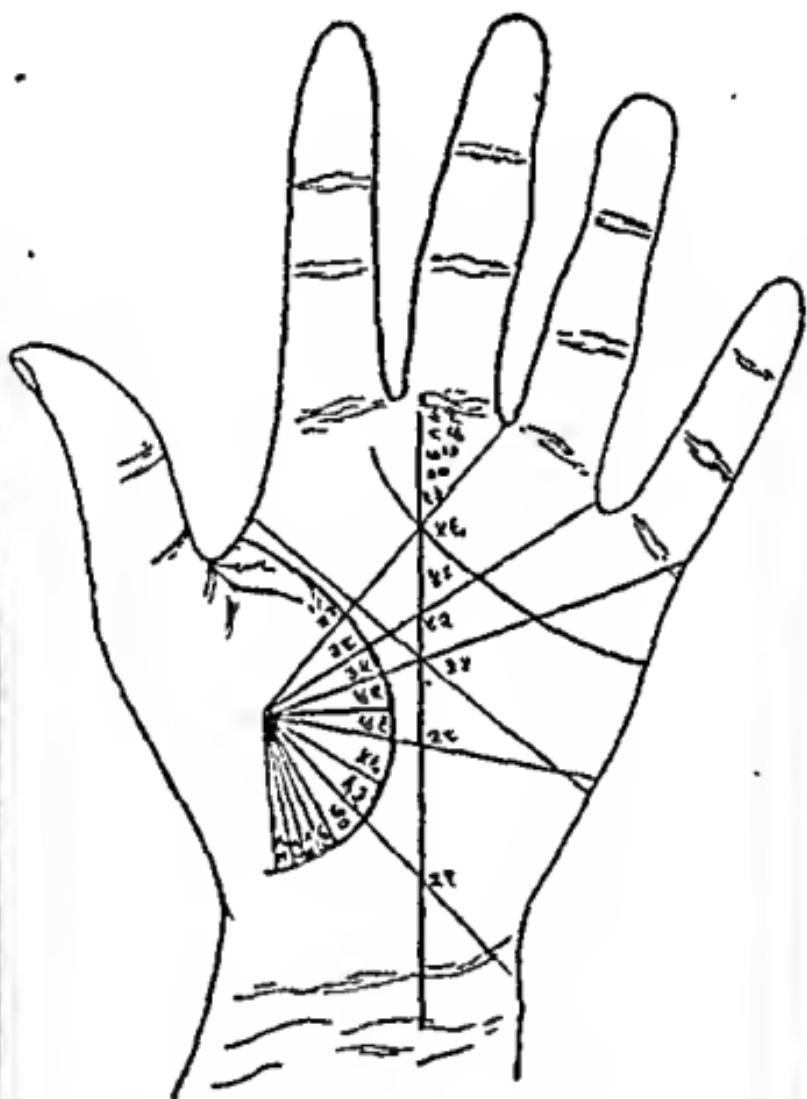
८ वाँ प्रकरण

हस्त-रेखा और अंक-ज्योतिष का सामज्जस्य

अंक-ज्योतिष के विषय में पिछले प्रकरणों में यह बताया जा चुका है कि जन्म की तारीख से यह कैसे पता लगाया जाय कि कौन-कौन से वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। अब इस प्रकरण में यह बताया जाता है कि भविष्य के निर्णय में हस्त-रेखा विज्ञान तथा अंक-विद्या ज्योतिष एक दूसरे को कहाँ तक सहायता दे सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति हमको आकर अपना हाथ दिखावे और उसकी अंगरेजी की जन्म तारीख भी हमें जात हो तो दोनों की सहायता से या हम किसी विशेष नतीजे पर पहुँच सकते हैं।^१ अंगरेजों हस्त-रेखा विशारद 'कीरो' ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि हस्त-रेखा के चिह्नों से—“किस वर्ष में यह घटना “होगो”, यह, निश्चय करने के लिये वह ग्राम वाले सात-सात वर्ष के भागों में चाँटते थे ? प्रति सातवें वर्ष में, जीवन में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है, ऐसा उनका विचार था। 'कीरो' लिखते हैं कि डॉक्टरों या वैज्ञानिक हॉप्टिकोल में विचार करने से भी ज्ञात होता है कि सात-सात वर्ष का समय विशेष परिवर्तन उत्पन्न करने वाला होता है। बालक के उत्पन्न होने के पहिले भी गर्भ-पिण्ड, एक के पश्चात् दूसरी, इस क्रम से सात व्रवस्थाओं में परिवर्तित होता है। मस्तिष्क के विकास में भी सात स्थिति होती है। मनुष्य के शरीर में प्रत्येक मात्र वर्ष के पश्चात्

नवी त्वचा, पुरानी त्वचा का स्थान ले लेती है। कीरो के मता-नुसार अनादिकाल से पृथ्वी के समस्त देशों में सात की संख्या का बहुत महत्व रहा है। पृथ्वी में सात नस्ल या जाति के लोग रहते हैं। सात ग्रह सप्ताह के सात बारों के अधिष्ठाता हैं। सात के महत्व के अन्य हृष्टान्त भी कीरो ने दिये हैं परन्तु स्थानाभाव के कारण उन्हें यहाँ स्थान नहीं दिया जा रहा है।

कीरो के मतानुसार एक सात वर्ष के जीवन के भाग के बाद, दूसरा सात वर्ष का भाग छोड़कर जी तीसरा, पाँचवा, सातवाँ, नवाँ भाग आता है, उसमें सुमानना होती है। इसी प्रकार जीवन का जी दूसरा, ७ वर्ष का भाग है, उसी के समान जीवन का चौथा, छठा, आठवाँ, दसवाँ व बारहवाँ भाग होगा। उदाहरण के लिये यदि कोई वालक अपने जीवन के सातवें वर्ष में बीमार और कमज़ोर रहा है तो वह अपने जीवन के २१ वें वर्ष में भी बीमार और कमज़ोर रहेगा। इसके विपरीत यदि कोई वालक वचपन में कमज़ोर और बीमार या लेकिन सातवें वर्ष से उसका स्वास्थ्य अच्छा रहने लगा और यदि वह आपके पास आकर बीस वर्ष की आयु में अपना हाय दिखाता है कि स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, कब से उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी तो आप उपर्युक्त सिद्धान्त के आधार पर कह सकते हैं कि २१ वें वर्ष से उसका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। शरीर में जो अन्दरूनी गांस-पेशियाँ, रुधिर या ग्रंथियाँ हैं—जिनसे सदा रक्त-स्राव रहता है—वे प्रत्येक चौदह वर्ष में अपनी पूर्व स्थिति पर उसी प्रकार आ जाती हैं जैसे वारह घंटे बाद पढ़ी भी छोटी सूई अपने स्थान पर आ जाती है। जहाँ तक शारीरिक स्वास्थ्य का सम्बन्ध है चौदह वर्ष की प्रणाली का प्रयोग बहुत अधिक मिलता है एसा कीरो का मत है।



टिप्पणी—यह पित्र “हस्तिरोपा विज्ञान” ग्रन्थ से दिया गया है। ग्रिंडर विवरण के लिये उपर्युक्त पुस्तक का अप्लाई करें।
“... १०० रुपयी, दीनांक, दिल्ली-१। ग्रन्थ माल्या ५०० मूल्य ८)

अंक-ज्योतिषविद्या का हस्त-रेखा विज्ञान से सामज्जस्य करने से हम बहुत कुछ ठीक-ठीक पता लगा सकते हैं। साथ के चित्र में यह दिखाया गया है कि जीवन-रेखा को हम सात-सात वर्षों के खण्डों में किस प्रकार विभाजित कर सकते हैं। साथ ही भाग्यरेखा को भी सात-सात वर्ष के खण्ड में बांटा गया है। यह चित्र कीरो के मतानुसार यह प्रदर्शित करता है कि युवावस्था के जीवन को यदि हम दो प्रधान भागों में बांटना चाहें तो पहला खण्ड २१ वर्ष की अवस्था से ३५ वर्ष की अवस्था तक होगा। जहाँ भाग्य-रेखा शीर्ष-रेखा को काटती है वहाँ से दूसरा खण्ड प्रारम्भ होकर ५६ वें वर्ष पर समाप्त होता है। जिस द्वन्द्व-उपाजित में मनुष्य का बहुविल पौर बुद्धिविशेष आधार होते हैं उसका समय इककीरावें वर्ष से प्रारम्भ होता है। भाग्य-रेखा को सात-सात वर्ष के खण्डों में बांट कर यह बताया गया है कि कब भाग्य की स्थिति कैसी रहेगी। इसी प्रकार जीवन रेखा को भी सात-सात वर्ष के खण्डों में बांटा गया है। हमारी “हस्त-रेखा विज्ञान” नामक पुस्तक में हमने यह अच्छी तरह समझाया है कि हाथ की रेखाओं से वर्ष कैसे निकालना चाहिये। जिनके हाथ विशेष लम्बोतरे या अधिक चौरस हों, जिनकी हृदय-रेखा या शीर्ष-रेखा अपने स्वाभाविक स्थान पर न होकर अधिक ऊची या नीची हो तो कीरो का यह प्रमाणा बिल्कुल ठीक नहीं बढ़ेगा, परन्तु हाथ की रेखाओं में कौनसी रेखा से कौनसा वर्ष समझना चाहिये, इसका अंक-ज्योतिष-विद्या से कैसे सांमज्जस्य करना चाहिये, यह नीचे बताया जा रहा है।

उदाहरण के लिये एक मनुष्य आपके पास आता है। आप उसका हाथ देखकर इस नीचे पर पढ़ूँचते हैं कि ३६ से ४१वें वर्ष के

करीब जीवन-रेखा पर अशुभ चिह्न है और भाग्य रेखा पर भी करीब-करीब इमी अवस्था पर कमजोरी आ गयी है। आप उस मनुष्य से पूछते हैं कि इस समय उसकी अवस्था क्या है और क्या वह २५-२६ वर्ष की उम्र में बीमार हुआ था? वह आपको जवाब देता है कि इस समय उसकी उम्र ३७ साल की है, वह २६ वें वर्ष में अधिक बीमार रहा था और वर्ष भर उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहा किन्तु २८ वें वर्ष से उसका स्वास्थ्य अच्छा रहने लगा। आप तुरन्त मन में विचार करते हैं जिस समय को आप ३६-४०-४१ वर्ष समझ रहे थे—उसमें से कोनसा वर्ष है यह हस्त-रेखा से निश्चय नहीं कर सके थे—वह वास्तव में ४० वाँ वर्ष होना चाहिये, क्योंकि कीरो के उपर्युक्त मतानुसार चौदहवाँ वर्ष, स्वास्थ्य के हृष्टि-कोण से एक-सा जाना चाहिये। आप ताईद के लिये (आपने निरंय की पुष्टि के लिये) उसकी हस्त-रेखा देखते हैं कि करीब आरह-आरह वर्ष की उम्र में जीवन-रेखा पर कुछ गढ़ा है। २६ वें वर्ष में वह कुछ बीमार हुआ था, यह जात होने के कारण आप उसमें से चौदह घटाकर पूछते हैं कि “आरहवें वर्ष में तो आप बीमार नहीं हुए?” वह आरहवें वर्ष में बीमार होना स्वीकार करता है। उसके जीवन में बीमारी का चौदहवें वर्ष का त्रैम ठीक बैठता है, इस नतीजे पर पहुंचते ही आप निश्चयात्मक स्वर से कहते हैं “चालीसवें वर्ष में आप बीमार होंगे किन्तु ४२ वें वर्ष में पूर्ण स्वस्थ हो जावेगे” आप से वह पुनः प्रश्न करता है कि वाद में तो कोई बीमारी नहीं है? तो आप कह सकते हैं कि ५४ वें वर्ष में पुनः बीमारी का योग है। स्मरण रहे कि भविष्य कथन इतना सरल नहीं है जितना कि बहुत से लोग समझते हैं। जैवन १४ जोड़ने में बीमार होना

अवश्यम्भावी हो तो भविष्य-कथन बहुत सरल हो जावे । जब हस्त-रेखा से हम किसी निर्णय पर पहुँचें और हमें किस वर्ष में यह घटना होगी यह निश्चय करने में कठिनाई हो तो अक ज्योतिष-विद्या का आश्रय लेना चाहिये । इस प्रकार हस्त-रेखा-विज्ञान तथा अंक-ज्योतिष का सामंजस्य विशेष सहायक हो सकता है । दूसरा हृष्टान्त लीजिये ।

प्रथम महायुद्ध के समय लार्ड किचनर भारत के प्रधान सेनापति थे । इनके हाथ को देखकर कीरो ने यह बता दिया था कि ६६ वर्ष की अवस्था में वह समुद्र में डूब कर मरेंगे । हाथ को देखकर यह पता चलता था कि ६६ वर्ष की अवस्था में यात्रा-रेखा द्वारा भाग्यरेखा और अभ्युदय-रेखा विग्रहित होती थी । लार्ड किचनर के गत जीवन की घटनाओं में निम्नलिखित वर्ष विशेष महत्व के थे ।

$$1666 = 1 + 6 + 6 + 6 = 24 = 2 + 4 = 6$$

$$1667 = 1 + 6 + 6 + 7 = 24 = 2 + 4 = 6$$

$$1668 = 1 + 6 + 6 + 6 = 24 = 2 + 4 = 6$$

$$1614 = 1 + 6 + 1 + 4 = 12 = 1 + 5 = 6$$

$$1615 = 1 + 6 + 1 + 5 = 13 = 1 + 6 = 7$$

$$1616 = 1 + 6 + 1 + 6 = 14 = 1 + 7 = 8$$

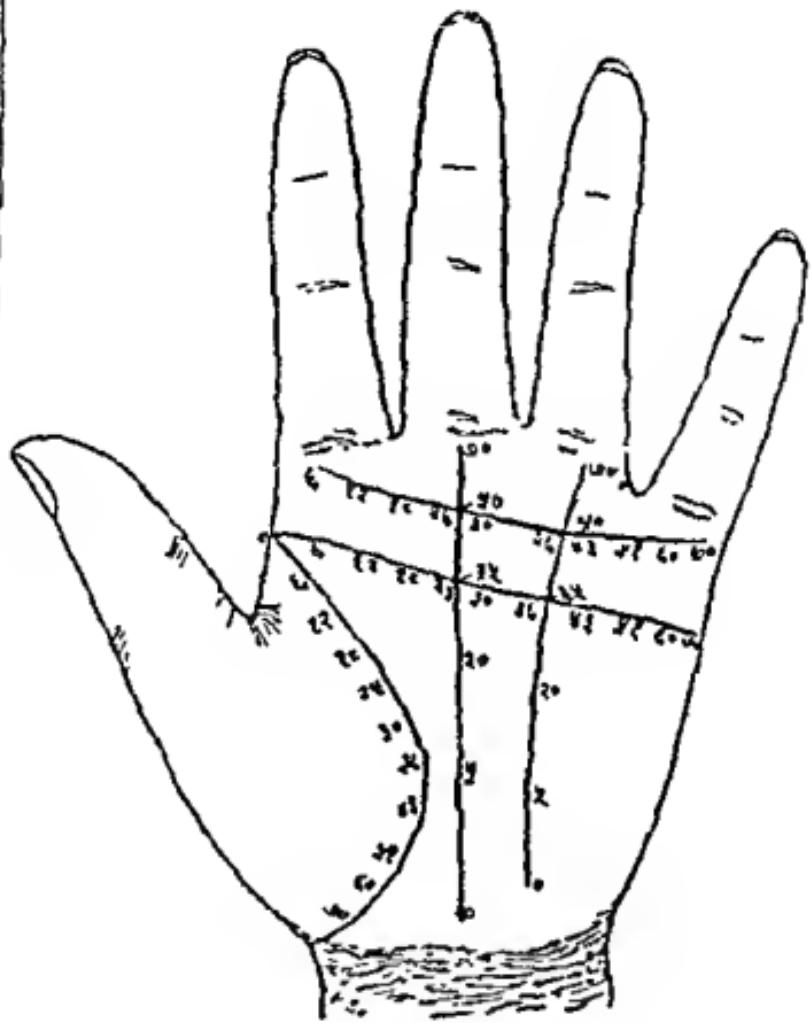
इनसे कीरो ने यह निष्कर्ष निकाला कि जिन वर्षों का जोड़ ६, ७, ८ होता है वह लार्ड किचनर के जीवन में विशेष महत्व के थे । इस कारण ६६ वर्ष की अवस्था जब वह पूरी करेगे तब दो बार ६ के अंक आने से उनके जीवन में विशेष घटना घटित होनी

चाहिए। यह सन् १६१६ में होता था और सन् १६१६ का योग $1+6+1+6=17=1+7=8$ होता था। यह आठ को संख्या भी इनके जीवन में महत्वपूर्ण थी। कीरो ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि ज्योतिष (जन्मकुण्डली) से वह इस निर्णय पर पहुँचे कि जल में हूँवकर लाड़ किचनर की मृत्यु होगी और ६६ वर्ष पूर्ण करने पर यह घटना घटित होगी। इस भविष्यवाणी का आधार अंक-ज्योतिष-विद्या थी। (६६ तथा १६१६ का महत्व ऊपर बताया जा चुका है।)

इसी प्रकार वेलजियम के वादशाह लियोपोल्ड II के विषय में कीरो ने बहुत पहले ही बता दिया था कि वादशाह की मृत्यु सन् १६०६ में होगी। हस्तरेखा तथा जन्म-दिन की ग्रह-स्थिति से कीरो जिस निश्चय पर पहुँचे थे उसकी पुष्टि अंक-ज्योतिष से होती थी। कीरो ने किस मनुष्य की जीवन घटनाओं के भविष्य कथन में, किस प्रकार अंक ज्योतिष को सहायता ली, इसका विस्तृत परिचय उनकी पुस्तकों को देखने से ही मिल सकता है। यहाँ केवल इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि कौनसी घटना किस वर्ष में होगी इसका मोटा श्रदाज हाथ की रेखाओं से लगता है। किन्तु विल्कुल ठीक वर्ष निश्चय करने में अंक-ज्योतिष सहायक होता है। उदाहरण के लिए एक स्त्री का जन्म २० अगस्त सन् १६१६ को हुआ। २० तारीख का अंक $2+0=2$ हुआ। जन्म-तारीख की संयुक्त संख्या $2+0+5+1+6+1+6=30=3+0=3$ हुई। जैसा कि हमने पिछले प्रकरणों में चताया है, बहुत से व्यक्तियों के जीवन में संयुक्त अंक की यजाय केवल जन्म की तारीख के अंक का पिशेष महत्व होता है। इस स्त्री का हाथ देखते समय प्रश्न किया कि इसका विवाह किस अवस्था में हुआ

तो उसने उत्तर दिया कि १३वें वर्ष में । इस उत्तर से पुष्टि हुई कि $1+3=4$ तथा २ की संख्याओं में सहानुभूति है । इस कारण इसके जीवन में दो वी संख्या विशेष महत्व की है । फलतः २० वर्ष में इसके पुनर होगा । यह भविष्य कथन किया जो अक्षरशः सत्य निकला और जब इसका ३८वाँ वर्ष था $3+8=11=1+1=2$ तब इसके पुनर का विशेष अभ्युदय हुआ । इसका थोड़ा थोड़ा इंगित हस्तरेखा में भी था । परन्तु जिस चिह्न को हम बोसवें वर्ष का दोतक मानते हैं उसको २१वाँ भी मान सकते हैं । जिसको ३८वाँ माना जाता है उसको ३७वाँ या ३९वाँ भी कह सकते हैं । क्योंकि जीवन-रेखा या भाग्य रेखा पर वर्ष स्थिर करना केवल हृष्टि के अन्दाज पर निर्भर रहता है । परन्तु अक्ष-विद्या के प्रभाव से जिसका जन्म २० अगस्त को हुआ है उसके लिए महत्वपूर्ण २० वाँ और ३८वाँ ही वर्ष होगा, २१वाँ या ३९वाँ नहीं । इस प्रकार अंक-ज्योतिष का सामर्ज्जस्य हस्तरेखा विज्ञान के करने से फलादेश का वर्ष निश्चित करना सुलभ हो जाता है ।

सुप्रसिद्ध हस्तरेखा-विशारद सेंट जर्मन की पुस्तक में एक चित्र दिया गया है जिससे हाथ की विविध रेखाओं से, किस वर्ष में अमुक घटना घटित होगी, इसका अनुमान किया जा सकता है । देखिए अग्रिम चित्र...इसमें सूगमता के लिए मायु के ६-६ वर्ष के खण्ड किए हैं । यदि कोई चिह्न २४ और ३० वर्ष की अवस्था के बीच में हो तो अन्दाज से यह निश्चय करना चाहिए कि बीच का यह काल २७, २८ या २९ है? बहुत बार ठीक वर्ष निश्चित करने में बहुत कठिनाई होती है । उस समय अंक-ज्योतिष से यह निश्चय करना चाहिए कि, $6(2+7=6)$, १ ($28=2+8=10=1+0=1$) या



यह चित्र “हस्तोत्तरा-विज्ञान” पृष्ठ ३०४ से दिया गया है। उपर्युक्त गुम्बत के अन्तर्गत इसमें हस्तोत्तरा सम्बन्धी ३१ अंगोंकी पुस्तकों टापा ४० संस्कृत पुस्तकों का सार दिया गया है। इस विषय के विशेष विज्ञान उपराजा अवलोकन करें। अपना देखिये The Study of Palmistry For Professional Purposes का Appendix.

२ (२६=२+६=११=१+१=२) कौनसा अंक जीवन में विशेष महत्व का है ? उसी के अनुसार २७, २८ या, २९वाँ वर्ष महत्व का होगा । यह निश्चय कर फलादेश किया जावे तो विशेष टीक होगा ।

इसी आधार पर हमने एक सज्जन के हाथ की रेखाओं से उनका फलादेश किया । उनका जन्म अंगरेजी ८ तारीख को हुआ था । ऐसे वर्ष जिनका योग ८ होता है सदैव उनके जीवन में बहुत महत्वपूर्ण हुए । आठवें वर्ष में वह बहुत रोगी रहे; यहाँ तक कि प्राण बचने की आशा नहीं थी । १७ (१+७=८) वर्ष में उन्होंने मिडिल परीक्षा पास की । उस समय सन् १९०० में मिडिल परीक्षा का भी बहुत महत्व था और अपने निवायस्थान से करीब २०० मील दूर जा कर मिडिल की परीक्षा देनी पड़ती थी । अपने जीवन के २६ (२+६=८) वर्ष में उन्होंने बो० ए० पास किया और अपने कालेज के समस्त छात्रों में प्रथम रहे । ३५वें वर्ष में (३+५=८) परम प्रिय पुत्रोत्पत्ति का हर्ष हुआ । ४४वें (४+४=८) वर्ष में उन्हें करीब साड़े चार हजार वार्षिक की आय का ग्राम पारितोपिक रूप में प्राप्त हुआ । इसी प्रकार ५३वाँ ६२वाँ, तथा ७१वाँ वर्ष भी उनके जीवन में विशेष महत्व का हुआ है । उनके हाथ की रेखाओं को देखने से इन वर्षों का विल्कुल टीक अन्दाज नहीं हो सकता था । अंक-ज्योतिष के प्रभाव से ही यह निश्चित किया कि उपर्युक्त वर्ष विशेष महत्व के थे और वास्तव में दोनों विद्याओं के सामन्जस्य से ही अनेक व्यक्तियों के जीवन की घटनाएँ बताने में बहुत सफलता मिली ।

जन्म-कुण्डली तथा अंक-ज्योतिष का सम्बन्ध

यह पुस्तक अंक-ज्योतिष से सम्बन्ध रखती है इस कारण जन्म कुण्डली सम्बन्धी उन वारीकियों का हवाला नहीं दिया जायगा जिनका ज्ञान केवल ज्योतिष के पंडितों को होता है। ऐसी कुछ स्थूल वाते नीचे बतायी जायेंगी जिनको जानने से मनुष्य ठीक ठीक फलादेश करने में सफल होता है।

हिन्दी में एक कहावत है कि “वारह वर्ष में धूरे के भी भाग फिरते हैं।” इसका अर्थ वर्षा है? “धूरा” क्लडे को कहते हैं। अर्थात् जो निकम्मी से निकम्मी वस्तु है उसका भी वारह वर्ष में मान्योदय का समय आता है। इस वारह वर्ष की अवधि का क्या तात्पर्य है? सूर्य एक वर्ष में अपना भ्रमण पूर्ण कर लेता है, वास्तव में भ्रमण तो पृथ्वी सूर्य के चारों ओर करती है किन्तु लोकब्यवहार में सूर्य का अमण कहलाता है। चन्द्रमा करीब २८ दिन में पृथ्वी के चारों ओर एक चक्कर पूरा कर लेता है। भंगल को पृथ्वी की दृक् परिक्रमा करने में औरत समय डेढ़ वर्ष का लगता है। बृहस्पति वारह वर्ष में पृथ्वी के चारों ओर धूमकर अपने पूर्व स्थान पर आ जाता है। शुक्र और बुध प्रत्येक को पृथ्वी की परिक्रमा करने में इवर्ष का समय लगता है। बुध और शुक्रसूर्य के आगे पीछे ही रहते हैं। कभी कोई आगे कभी कोई पीछे, कभी दोनों आगे, कभी दोनों पीछे। बुध सूर्य से २८ अंश से अधिक दूर कभी नहीं रहता। शुक्रसूर्य से ४८ अंश से अधिक दूर नहीं रह सकता। शनि को प्रत्येक राशि में करीब २३ वर्ष का समय लगता है और कुल वारह राशियाँ होती हैं; इस कारण $12 \times 23 = 30$ वर्ष में वह पृथ्वी के चारों ओर अपनी परिक्रमा पूरी कर लेता है। हर्षंश और नैपच्चून यह दो

नवीन ग्रह है। इनका वर्णन हमारे प्राचीन ज्योतिषशास्त्र में नहीं मिलता। पाइचात्य वैज्ञानिकों के अनुसार हृष्णल को पृथ्वी के चारों ओर एक परिक्रमा पूर्ण करने में ८४ वर्ष का समय लगता है। नैपच्छून को १६८ वर्ष का समय लगता है। राहु और केतु दो उपग्रह हैं। राहु कोई दिखाई देने वाला ग्रह नहीं है; इसीलिए इसे छाया-ग्रह कहते हैं। पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर भ्रमण का एक मार्ग है। चन्द्रमा का पृथ्वी के चारों ओर भ्रमण का एक अन्य मार्ग है। जहाँ यह दोनों मार्ग एक दूसरे को काटते हैं उस विन्दु का नाम राहु है। राहु का स्वरूप सर्प की भाँति माना गया है। राहु को सर्प का सिर और केतु को पूँछ कहते हैं। यह जो पृथ्वी के मार्ग और चन्द्रमा के मार्ग का—एक दूसरे को काटने वाला “चौराहा” या “विन्दु” है वह स्थिर नहीं है। वह सरकाता रहता है और १८ वर्ष में भरडलाकार घूमकर फिर अपने पूर्व स्थान पर आ जाता है। इसलिए लोक-व्यवहार में कहते हैं कि राहु को पृथ्वी की परिक्रमा करने में १८ वर्ष का समय लगता है।

जन्म-कुण्डली से फलादेश में मुख्य रूप से तीन सिद्धांत काम में लाये जाते हैं :—

- (क) विशोक्तरी दशा तथा अंतर्देशा के अनुसार फल-कथन।
- (ख) गोचर फल कथन—कब कौन सा ग्रह किस राशि में जा रहा है, इस प्रभाव के कारण फलादेश।
- (ग) वर्ष-कुण्डली अर्थात् जन्म के समय सूर्य जहाँ पर था, प्रतिवर्ष सूर्य जब वहाँ आवे उस समय की कुण्डली के अनुसार फलादेश।

उपर्युक्त तीनों प्रकारों के फलादेशों से अंक-ज्योतिष का सम्बन्ध है।

महादशा, अन्तर्दशा तथा अंक-ज्योतिष का सम्बन्ध

जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति से ही विशोत्तरी महादशा तथा अन्तर्दशा का क्रम प्रारम्भ किया जाता है। उदाहरण के लिए आप किसी की जन्म-कुण्डली में यह देखते हैं कि उसका वृहस्पति तथा सूर्य दोनों शुभ हैं और वृहस्पति की महादशा में सूर्य का अंतर ६ महीने १८ दिन का चल रहा है। उस मनुष्य की आयु इस समय २४ $\frac{3}{4}$ वर्ष की है और २५ वर्ष ६ महीने १८ दिन की अवस्था तक सूर्य का अंतर रहेगा। अंक-ज्योतिष से आप इस नतीजे पर पहुँचे कि २५वाँ वर्ष उसको शुभ होना चाहिए तो प्रत्यन्तरं दशा आदि लगाने की आवश्यकता नहीं, न विशेष गोचर का विचार आवश्यक है, वर्ष-कुण्डली बनाने की आवश्यकता भी नहीं, आप तुरन्त कह सकते हैं कि २५वें वर्ष में कार्य हो जावेगा। मान लीजिए कि वह किसी नौकरी के लिए उत्सुक है तो आप कह सकते हैं कि २५वें वर्ष में नौकरी लग जावेगी। यहाँ जो ६ महीने १८ दिन की सूर्य की अन्तर्दशा है उसके विचार में अंक-ज्योतिष से महायता लेने से इस नतीजे पर पहुँच सकते हैं कि प्रथम तीन मास में ही-२५वें वर्ष में ही-कार्य हो जावेगा।

गोचर-फल तथा अंक-ज्योतिष का सम्बन्ध

ज्योतिष शास्त्र में इस बात का विस्तृत विवेचन किया गया है कि जन्म के समय जिस राशि में चन्द्रमा है (संक्षेप में इसे जन्म-राशि या राशि कहते हैं) उस राशि में जब कोई ग्रह आवे तो क्या फल ? उससे दूसरी राशि में आवे तो क्या ? तीसरी

राशि में क्या फल ? इस प्रकार जन्म-राशि से बारहों राशि में जब गोचरवश धूमते हुए सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु आवें तो पृथक् पृथक् क्या क्या फल देते हैं ? सूर्य, बुध, शुक्र प्रायः एक वर्ष में परिक्रमा पूर्ण कर लेते हैं। इस कारण जिस राशि में शुभ फल देते हैं उम महीने को स्मरण रखना चाहिए और अपने जीवन में अनुभव करना चाहिए कि प्रतिवर्ष वह महीना कैसा बोतता है। उदाहरण के लिए सूर्य जब कक्षे राशि पर आवे (यह समय प्रायः १५ जुलाई से १६ अगस्त तक प्रतिवर्ष होता है) तब यदि किसी मनुष्य को चिन्ता, व्याधिकथ आदि अनिष्ट फल देता है तो उसे अपने गत जीवन के प्रत्येक वर्ष में जुलाई-अगस्त का समय कैसा गया है, इसका विचार करना चाहिए। किसी वर्ष कोई घटना किसी विशेष प्रभाव के कारण हो सकती है किन्तु यदि मनुष्य अपने जीवन का बीता हुआ काल अध्ययन करके देखे कि प्रतिवर्ष जुलाई-अगस्त का समय उसे अनिष्ट, और अशुभ होता है तो भविष्य के लिए भी नतीजा निकाला जा सकता है। उदाहरण के लिए एक मनुष्य अपने मन २५ वर्ष के जीवन की डायरो (जीवन का हाल या हिसाब) का अवलोकन कर इस नतीजे पर पहुँचता है कि १५ जुलाई से १६ अगस्त के समय में जो भी उसने व्यापार या सौदा किया उसमें घाटा हुआ तो उसे अवश्य सावधान हो जाना चाहिए कि यह समय उसके लिए प्रतिकूल होता है और भविष्य में कोई बड़ा काम इस समय न करे। वराह मिहिर ने लिखा है कि 'सविता दशानां पात्तियता'।

इस सिद्धान्त के अनुसार जब सूर्य किसी राशि विशेष में आता है तब अन्य ग्रहों का फल भी सहसा अनुभूत होता है। वराह मिहिर

के पुत्र पृथुयशस ने भी लिखा है कि जब सूर्य किसी राशिविशेष में आता है तो उस राशि के स्वामी का रुका हुआ फल सहसा प्राप्त होता है ।

बहुत से लोग अपने गत जीवन का अध्ययन नहीं करते; इस कारण भविष्य के लिये भी परिणाम नहीं निकाल सकते; परन्तु जो अपने जीवन का वैज्ञानिक रीति से अध्ययन करते हैं वे भविष्य के लिये भी किसी नतीजे पर सफलता-पूर्वक पहुँच सकते हैं । अनेक विद्वानों से इस विषय में विचार विनिमय करने से हम इसी निश्चय पर पहुँचे हैं कि जिनकी जन्म-कुण्डली में कोई राशि मध्यकावर्ग में वली होती है तथा शुभ-ग्रह से युत हृष्ट होती है उनको वह महीना (जब सूर्य उस राशि में आता है) शुभ जाता है और जिनकी जन्म-कुण्डली में कोई राशि सूर्याप्टकवर्ग में निर्वल तथा पापग्रह से हृष्ट-युत या अशुभ सम्बन्ध करने वाली होती है, उस राशि में जब सूर्य आता है तब वह महीना उन्हें अशुभ जाता है । इस सम्बन्ध में हम भारतीय पालिमेन्ट "लीक-सभा" के अध्यक्ष स्वर्गीय श्री मावलंकर जी के एक पत्र का उल्लेख किये विना नहीं रह सकते । इस पत्र में उन्होंने हमको लिखा था कि उन्हींने अपने गत जीवन की घटनाओं से यह अनुभव किया है कि फरवरी-मार्च तथा नवंबर के मास उन्हें विशेष महत्वपूर्ण होते थे ।^१

यह तो हुआ सूर्य, शुध और शुक्र के गोचर का आंकज्योतिष से सामज्जस्य । यदि किसी मनुष्य के जीवन में २ संत्या शुभ-प्रद है तो उसको फरवरी (वर्ष का २रा महीना) और नवम्बर (वर्ष

१. इस पत्र के एक भाग का चित्र १८७ पृष्ठ पर दिया गया है ।

श ११वाँ नहीं। $1+1=2$) का नहीं। मुन वर्षा। हल निरचय करते उनमें यदि उन मनुष्य के यह वौद्धन की उत्तराधिक का विवरण पूछ कर दह निरचय कर दिया जावे कि कौन-कौन मनुष्य कैसा जाता है तो अंक-ज्योतिष ने उत्तराधिक करते उनमें विवरण हाली नवीन पर फूट लगाये।

चन्द्रना

चन्द्रना २३ दिन में एक राति का उत्तराधिक करता है। चन्द्रना का ग्रहण वर्ग बनाने के लिये ज्योतिष के अधिक ज्ञान की मात्रास्तराधि है। जिन उत्तराधिकों में चन्द्रना अधिक मुन रेतादुल हो उस राति के नोगों से मनुष्य को नान होता है और गोचरवग जब चन्द्रना भग्नर करता हुआ उस राति में आवे वो मुन फल देता है। यदि किसी कार्य की जून १९५७ में होने की सम्भावना है और जिस मनुष्य के लिये मुन फल देसना है उनको ७ का अंक मुम जाता है तो भास कह सकते हैं कि ७ ता०, १६ ता०, (१+६=७) तथा २५ (२+५=७) तारीख मुम है या मुम जावेगी। किन्तु यदि उत्तराधिक की जन्म-कुण्डली में चन्द्रारूपकर्ण में कन्याराति में ७ या ८ मुम रेतावें हैं तो आप पंचांग में यह देखकर कि ता० ६ तथा ता० ७ जून १९५७ को कन्याराति में चन्द्रमा रहेगा—यह निरपेक्ष पूर्वक कह सकते हैं कि ७ ता० का आपका कार्य हो जावेगा। इस प्रकार यह-ज्योतिष का अंक-ज्योतिष से समन्वय करने से तारीख तक निर्दिष्ट की जा सकती है। चन्द्रमा ददा का पोषणिता होता है। इसके सम्बन्ध में देखिये, वृहज्ञातक सारांशी, पारांशी आदि।

बृहस्पति

पहिले बताया जा चुका है कि बृहस्पति १२ यष्टे

परिक्लमा पूरी कर लेता है। जन्म-राशि से जब दूसरे, पाचवें, सातवें, नवें, ग्यारहवें वृहस्पति भ्रमण एवं श्राता है तब शुभ फल देता है। इसलिये यदि किसी की जन्मराशि हमें न भी मालूम हो, किन्तु यह मालूम हो कि अमुक वर्ष अच्छा गया है तो हम इस तत्त्वे पर पहुँच सकते हैं कि १२ वर्ष वाद जब वृहस्पति भ्रमण करता हुआ उसी स्थान पर आवेगा तब अवश्य शुभ फल देगा। एक हृष्टान्त द्वारा इसे स्पष्ट किया जा रहा है।

एक व्यक्ति की जन्म-राशि 'भीन' है और उसके ७वें वर्ष में वृहस्पति राशि से प्रथम स्थान पर आया, ११वें वर्ष में पंचम स्थान पर आया १३वें वर्ष में सप्तम स्थान पर आया और १५वें वर्ष में नवम स्थान पर आया तथा १७वें वर्ष में एकादश स्थान पर आया तो उसके जीवन में निम्नलिखित वर्षों में फिर वृहस्पति गोचर एवं उन्हीं स्थानों पर आवेगा।

प्रथम स्थान :—७वें, १६वें, ३१वे ४३वें,
५५वें, ६७वें, ७६वें, वर्ष में।

पंचम स्थान :—११वें, २३वें, ३५वें, ४७वें
५६वें, ७१वें, ८३वें, वर्ष में।

सप्तम स्थान :—१३वें, २५वें, ३७वें, ४६वें
६१वें, ७३वें, ८५वें, वर्ष में।

नवम स्थान :—१५वें, २७वें, ३९वें, ४१वें, ६३वें
७५वें, ८७वें वर्ष में।

एकादश स्थान :—१७वें, २९वें, ४१वें, ५३वें
६५वें, ७७वें, ८९वें, वर्ष में।

यदि जन्म की राशि मालूम न हो तो भी १२ वर्ष की परिक्लमा

के आधार पर प्रत्येक जीवन में ऐसा समय निकाला जा सकता है जब कोई शुभ घटना घटित हुई हो । यदि किसी के जीवन में जो अच्छे वर्ष गये हैं एक और लिखकर उनके आधार पर १२ वर्ष के परिभ्रमण काल के अनुसार शुभ वर्ष निकालने की चेष्टा करें तो सम्भवतः हम इन नतीजे पर पहुँच सकें कि किस समय को आधार मानने से उसमें बाद का प्रत्येक १२वाँ वर्ष शुभ जाता है । यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित है कि वृहस्पति धूमवार करीब १२ वर्ष में उसी राशि पर आता है—बिल्कुल ठीक १२ वर्ष में नहीं । वक्ती होने से कभी-कभी एक वर्ष में तीन राशियों में आगे पीछे धूमता रहता है । जैसे १९५७ में मार्च तक वृहस्पति कन्या में रहा फिर वक्ती होकर सिंह राशि में चला गया, २० जून १९५७ को फिर वापिस कन्या में चला आवेगा और नवम्बर में तुला में चला जावेगा । इसलिये जब ७वाँ, १६वाँ, ३१ वाँ आदि प्रत्येक १२ वर्ष के काल का निर्देश करते हैं तब इस वर्ष को न तो अपनी जन्म-तिथि से आगामी जन्म तिथि तक लेना चाहिये और न १ जनवरी से ३१ दिसम्बर तक । प्रत्येक १२वें वर्ष का एक मोटा अन्दाज है । अब मान लीजिये आप किसी आदमी के गत जीवन काल की घटनाओं से इस अनुमान पर पहुँचे कि उसके जीवन का १३वाँ, २४वाँ, ३७वाँ, ४७वाँ वर्ष विशेष भाग्योदय का था और अंक-ज्योतिष से उसकी अंग्रेजी की जन्म-तारीख के अंकों का योग २ होता है तो ऊपर के वृहस्पति भ्रमण के विचार से ४६ में १२ जोड़े तो ६१ वाँ वर्ष शुभ आया और अंक-ज्योतिष के अनुसार २ अंक वाले व्यक्ति को ७ का अंक भी शुभ जाता है । यह जानने से आपके पास आये हुए व्यक्ति की आमु का यदि ६१वाँ वर्ष चल रहा है और वह कहता है कि ६१वें वर्ष में

अब तक कोई भाग्योदय का कार्य नहीं हुआ तो आप गुरु के भ्रमण के आधार पर—ग्रह-ज्योतिष का सामन्जस्य कर निश्चयपूर्वक, ज्ञार देकर कह सकते हैं कि “६१ वर्ष वर्ष कथमपि कथमपि खाली नहीं जा सकता” ।

ऊपर वृहस्पति के भ्रमण का एक आधार है। दूसरा एक कारण और है जिसके कारण प्रत्येक १२वाँ वर्ष एक-सा जाता है। सुदर्शन चक्र बनाकर उसको धुमाने से प्रत्येक वर्ष का फलादेश करने का ज्योतिष शास्त्र में विधान है। सुदर्शन चक्र के अनुसार प्रत्येक १२वें वर्ष का विचार उसी स्थान से किया जाता है। इसके विशेष विवरण के लिये ज्योतिष के ग्रन्थ देखने चाहिये ।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक १२वाँ वर्ष किसी अंश में भाग्योदयादि के विचार से एक सा जाता है, यह सर्वांटक वर्ग से भी फलादेश का एक प्रकार है। जन्म परिका विधान में लिखा है कि यदि सर्वांटक वर्ग में किसी भाव में १४ या १५ रेखा हों और उस भाव में क्लू-ग्रह भी हों तो उस वर्ष मरण होता है^१ कुल १६ रेखा हों तो अंग पीड़ा और शरीर में महाव्याधि होती है। कुल रेखा १७ हों तो नाश। १८ हों तो धन-क्षय, १९ रेखा हों तो वान्धव पीड़ा और कुमति। २० रेखा हों तो व्यय और कलह। २१ रेखा हो तो हृदय में घोर दुःख। २२ रेखा हों तो दंन्य और परामर्द—इस प्रकार २३ रेखा तक अशुभ फल लिखा है और २८ के बाद शुभ फल। २६ रेखा हों तो लोक में सम्मान वृद्धि। ३० रेखा हों तो नवीन पद-प्राप्ति और मान; ३१ रेखा हों तो द्रव्यागमन और विशेष

१. ऐतिहासिक विधान श्ल ३६ ।

आय इत्यादि । इसके लेखक लिखते हैं कि मान लीजिए प्रथम-भाव में सर्वाप्तिकवर्ग में ३१ रेखा पढ़ी तो १ ले, १३वें, २५वें, ३७वें ४६वें, ६१वें, ७३वें वर्ष में सौख्य और द्रव्यागमन होगा । जन्म-कुण्डली के १२ भावों से इस प्रकार आगामी सब वर्षों का विचार किया जाता है और प्रत्येक १२वाँ वर्ष एकसा जाना चाहिए ।

एक अन्य कारण और भी है जिससे प्रत्येक १२वें वर्ष में कुछ समानता होती है । “संकेत निधि”^१ के निर्माता श्री रामदयालु जी ने तथा यवन ज्योतिष शास्त्र के आधार पर निर्मित “मनुष्य-जातक”^२ में लिखा है कि जन्म-कुण्डली के जिस भाव में क्लूर ग्रह ही उस वर्ष में पीड़ा होगी । उदाहरण के लिए किसी के नवम स्थान में शनि और राहु है तो इसको ६, २१, ३३, ४५ और ५७ वें वर्ष में पीड़ा होगी । पूर्व भारतीय प्रणाली यह थी कि प्रत्येक भाव को एक एक वर्ष मानकर भविष्य फल कथन किया जाता था । कुछ अंगरेज ज्योतिषियों^३ ने भी इम क्रम को अपनाया है । अतः अंक-ज्योतिष का और १२ वर्ष के भ्रगण काल का गमन्य करने से फलादेश बहुत कुछ ठीक बैठता है ।

शनि

शनि को एक राशि में २३^१ वर्ष का समय लगता है और पृथ्वी की पूरी परिक्रमा करने में ३० वर्ष । वास्तव में यह समय २६ वर्ष और कुछ महीने होता है । जन्म-कुण्डली में जिस स्थान पर शनि

१. वेलिए सप्तम संकेत, इसोक ७

२. मनुष्यजातक, दशमाधिकार, इसोक ५ ।

३. How To Use And Understand Astrological Predictive Systems by Dal Lee.

अशुभ फल देता है उससे जब ६०-६० अंश पर आवेगा तब भी अशुभ फल ही देगा। इस ६० अंश को चलने में उसे करीब ७५ वर्ष का समय लगता है। इसलिए गत-जीवन में जो अनिष्ट समय था, प्रायः उससे साढ़े सात वर्ष बाद, १५ वर्ष बाद, २२ वर्ष बाद और ३० वर्ष बाद शनि कष्ट देता है। २६-२७ वर्ष या ३० वर्ष बाद तो शनि फिर धूमकर उसी विन्दु पर आ जाता है। इस कारण अनिष्ट फल कहते समय या पीड़ा का काल-निर्देश करते समय अक ज्योतिष का, शनिश्चर की परिकल्पना काल से सामन्जस्य कर लेना उचित है।

एक कारण और है जिसके कारण प्रति ७वाँ वर्ष एक-सा जाता है। इस सम्बन्ध में चन्द्रमा के परिभ्रमण को 'संकेत निधि'^१ के निर्माता श्री रामदयालु जी ने महत्व दिया है और अंगरेजी ज्योतिष में तो चन्द्रमा के भ्रमण को अत्यधिक महत्व दिया गया है। जन्म-स्थानीय चन्द्रमा २८ दिन में १२ राशियों का धेरा पार कर अपने स्थान पर आ जाता है। मार्ग में जब वह अशुभ ग्रहों से सम्बन्ध करता है तो अशुभ फल देता है। शुभ ग्रहों से सम्बन्ध करता है तो शुभ फल देता है। अब मान लीजिए किसी स्थान पर उसने अशुभ फल किया तो ६० अंश चलने पर उस स्थान से चतुर्थ आ जावेगा। जिस प्रकार ताजिक में चतुर्थ, सप्तम, दशम अशुभ हृष्टि समझी जाती है उसी प्रकार अंगरेजी ज्योतिष में नियम है। इस पढ़ति में चन्द्रमा के प्रथम दिन के परिभ्रमण का प्रभाव जीवन के पहिले वर्ष में होता है। दूसरे दिन के भ्रमण का प्रभाव जीवन

के दूसरे वर्ष पर । यह बहुत लम्बा और गहन विषय है, जिनको इसमें विशेष दिलचस्पी हो उन्हें अंगरेजी ज्योतिष की पुस्तकों पढ़नी चाहिए । यहाँ केवल यह निष्कर्ष दिया जाता है कि:—

१. जो वर्ष अशुभ गया है उसके ७-७ वर्ष के बाद का काल अशुभ जायगा । उदाहरण के लिए तीसरा वर्ष पीड़ा-कारक है तो इस, १०वाँ, १७वाँ, २४वाँ, ३१वाँ, ३८वाँ, ४५वाँ, ५२वाँ, ५९वाँ आदि वर्ष अशुभ जावेंगे ।

२. जो वर्ष शुभ गया है उससे नवाँ शुभ जावेगा । यदि पहला वर्ष शुभ है तो १०वाँ, १६वाँ, २८वाँ, ३७वाँ, ४६वाँ—इस प्रकार प्रत्येक नवाँ वर्ष शुभ जावेगा ।

राहु और केतु

राहु और केतु १८ वर्ष में पूरा परिभ्रमण कर लेते हैं । इसलिए जहाँ पर इन्होंने गोचर द्वारा शुभ फल दिया हो उससे १८वें वर्ष में यदि उसी प्रकार के फल का अनुभव तो उस आधार पर निश्चय किया जा सकता है कि भविष्य के १८वें वर्ष में भी उसी प्रकार का अनुभव होगा ।

३६ वर्ष का परिभ्रमण—ऊपर कई भौतिकों से बताया जा चुका है कि प्रत्येक १२वाँ तथा प्रत्येक ६वाँ वर्ष एक-सा जाता है । १२ और ६ का लघुतम ३६ होता है इस कारण प्रत्येक ३६ वर्ष के बाद के वर्षों में समानता होनी चाहिए ।

१ ला, ३७वाँ ७३वाँ एक सा

२ रा, ३८वाँ, ७४वाँ „ „

३ रा, ३६वाँ, ७५वाँ „ „

४ था, ४०वाँ, ७६वाँ „ „ इत्यादि

यदि किसी व्यक्ति की हम कुण्डली, केतु-कुण्डली तथा वृहस्पति कुण्डली बनावें तो उस वर्ष का शुभाशुभ निकल सकता है। पाप-संयोग होने से उस वर्ष बहुत कष्ट होता है। लिखा है:—

“पताकी कुण्डली केतोः कुण्डली च वृहस्पतेः।

सर्वंत्र पापसंयोगे संशयो जायते महान् ॥१

इसके अनुसार ३६ वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्ति का भविष्य निश्चित करना हो तो ३६ वर्ष पहले कौसा समय बीता था इसका अन्वेषण करना चाहिए। उदाहरण के लिए एक मनुष्य की जन्म-नारीख, जन्म-महीना आदि कुछ भी मालूम नहीं है। उसके जीवन का ४८वाँ वर्ष जा रहा है, वह बड़े कष्ट में है, भविष्य जानना चाहता है। आप उससे पूछते हैं कि $48 - 36 = 12$, उसके जीवन का १२वाँ वर्ष कौसा गया है? वह कहता है कि १२वाँ वर्ष तो बड़े कष्ट का बीता किन्तु १३वें वर्ष में सब कष्ट दूर हो गए और भाग्योदय हो गया, तो आप विश्वासपूर्वक यह सकते हैं कि ४८वाँ वर्ष अच्छा जावेगा।

ताजिक द्वारा वर्णिकल तथा अंक-ज्योतिष का सामन्जस्य

यदि किसी का वर्ष प्रवेश जून या जुलाई में होता है तो 'वर्ष प्रवेश कुण्डली' का फल आगामी खून या जुलाई तक रहेगा। किन्तु अंक-विद्या के सामन्जस्य से यह निश्चय किया जा सकता है कि १६५७ अच्छा होगा या १६५८?

उपर जो अनेक प्रकार से ग्रह-ज्योतिष और अंक-ज्योतिष का सामन्जस्य बताया गया है इससे ज्योतिष के विद्वान् तो विशेष लाभ उठावेंगे ही किन्तु साधारण पाठक भी अपने गत जीवन की पटनाओं के आधार पर ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

हथां प्रकारण

‘अंकों’ से प्रश्न विचार

भारतीय मत

प्रश्न के विषय में यद्यपि ज्योतिष शास्त्र के अनेक ग्रंथ हैं^१ तथापि ‘अंकों’ या ‘संख्या’ से प्रश्न विचार, केरल देश में अधिक प्रचलित होने के कारण, इस शास्त्र को ‘केरलीय’ भी कहते हैं।

केरल प्रश्न संग्रह में लिखा है कि प्रश्न सम्बन्धी जिस वावय का प्रश्नकर्ता उच्चारण करे—उस वावय में जो-जो अक्षर आवें उनकी संख्या को जोड़ले। किन्तु यदि वावय बहुत लम्बा हो अथवा अस्पष्ट हो तो, प्रश्नकर्ता यदि ब्राह्मण हो तो उससे किसी पुरुष का नाम, क्षत्रिय हो सो किसी नदी का नाम, वैश्य हो तो किसी देवता का नाम और यदि घूढ हो तो उससे किसी ‘फल’ का नाम लेने को कहे। किन्तु ‘प्रश्न चूडामणि’ में लिखा है कि कोई भी प्रातः काल प्रश्न करे तो किसी धालक से कहे कि किसी ‘वृक्ष’ का नाम लो। यदि भद्याह्न काल हो तो किसी युवा पुरुष से किसी ‘पुरुष’ का नाम ग्रहण करने को कहे। यदि तीसरे पहर कोई प्रश्न करे तो किसी घूढ से किसी ‘फल’ का नाम लेने को कहे। अस्तु। हमारे विचार से प्रश्नकर्ता से ही कहना चाहिये कि अपना प्रश्न हिन्दी में थोड़े अक्षरों में लिख दीजिये या किसी पुरुष या फल का नाम लिस्त

१. केरल प्रश्न संग्रह, केरलीय प्रश्नरसन, प्रश्न चूड़ा मौन। आदि।

दीजिये । जिन अक्षरों को प्रदनकर्ता लिखे उनकी संख्या निम्नलिखित नियमानुसार बनाना चाहिये :

| | | | |
|---|----|----|----|
| अ | १२ | ए | १८ |
| आ | २१ | ऐ | ३२ |
| इ | ११ | ओ | २५ |
| ई | १८ | ओ | १६ |
| उ | १५ | अं | २५ |
| ऋ | २२ | | |

यह तो स्वरों की संख्या हुई । यदि 'ऋ' का प्रयोग करे तो उसे 'रि' की भाँति (इ+ई) माने । लू लू तथा अः का प्रयोग भाषा में नहीं होना इस कारण उन अंक्षरों की संख्या नहीं लिखी गई है । अब व्यंजनों की संख्या लिखी जाती है :—

| | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|
| क् | १३ | ट् | १० | प् | २७ | प् | ३५ |
| ख् | ११ | ठ् | १३ | फ् | १८ | स् | ३५ |
| ग् | २१ | ड् | २२ | व् | २६ | ह् | १२ |
| ঁ | ৩০ | ঁ | ৩৫ | ভ্ | ২৭ | | |
| ঁ | ১০ | ঁ | ৪৫ | ম্ | ৫৬ | | |
| ঁ | ১৫ | ঁ | ১৪ | য্ | ১৬ | | |
| ঁ | ২১ | ঁ | ১৮ | ঁ | ১৩ | | |
| ঁ | ২৩ | ঁ | ১৭ | ঁ | ১৩ | | |
| ঁ | ২৬ | ঁ | ১৩ | ঁ | ৩৫ | | |
| ঁ | ২৬ | ঁ | ৩৫ | ঁ | ২৬ | | |

मान लीजिये किसी ने लिखा 'गुलाब', तो पहिले इस शब्द के स्वर और व्यञ्जन अलग-अलग कर लिखें ।

टिप्पणी : एक मतानुसार 'ঁ' की संख्या २८ है ।

ग + उ + ल + आ + व + अ

२१ + १५ + १३ + २१ + २६ + १२ = १०८

इन प्रत्येक स्वर तथा व्यञ्जन के नीचे उस स्वर या व्यञ्जन की जो संख्या दी गई है वह लिखनी चाहिये और सब संख्याओं को जोड़कर उस शब्द (यथा ‘गुलाब’) का पिंड बनाना चाहिये । ऊपर सब संख्याओं का योग १०८ आया । अब इस संख्या पिंड से प्रश्न का उत्तर कैसे देना यह बताया जाता है ।

शास्त्रकारों ने प्रश्नों को अनेक शारों में विभाजित किया है । यहाँ केवल मुख्य-मुख्य विषय के प्रश्नों के सम्बन्ध में कुछ नियम बताये जाते हैं ।

(१) लाभ-अलाभ प्रश्न (द्रव्य का लाभ या हानि)

(२) जय-पराजय प्रश्न (हार या जीत)

(३) सुख दुःख प्रश्न

(४) गमन प्रश्न (जाने के विषय में प्रश्न)

(५) जीवन मरण प्रश्न

(६) गर्भ विचार (गर्भ है या नहीं)

(७) तेजी-मन्दी प्रश्न

(८) विवाह प्रश्न

(९) पुत्र कन्या जन्म प्रश्न

अब क्रमशः इनका उत्तर देने की विधि बतलाई जाती है । हम नीचे उदाहरणों में ‘गुलाब’ का उदाहरण दे रहे हैं ।

१. वास्तव में जब प्रश्न कर्ता प्रश्न करे तब प्रश्न के धरणों का जो संख्या पिंड भावे या जिस फल या पुष्ट का नाम से उसका घो संख्या-पिंड भावे—उसके आधार पर उत्तर कहना चाहिये ।

(१) मान लीजिये किसी ने लाभ या हानि सम्बन्धी प्रश्न किया और 'गुलाब' का नाम लिखा। तो, १०८ प्रश्न का संख्या-पिंड हुआ। इसमें ४२ जोड़ कर ३ से भाग देना चाहिये। यदि १ बचे तो लाभ, २ बचे तो धोड़ा लाभ। यदि शून्य बचे तो हानि।

उपर्युक्त 'गुलाब' के उदाहरण में १०८ में ४२ जोड़े तो हुए १५०। तीन भाग देने से शेष ० बचा। इसलिये उत्तर देना चाहिये कि इस कार्य में लाभ नहीं होगा बल्कि हानि होगी।

(२) यदि कोई हार-जीत सम्बन्धी प्रश्न करे तो प्रश्न का जो संख्यापिंड हो उरामें ३४ जोड़ कर ३ का भाग देना चाहिये। यदि १ शेष बचे तो 'जय'। यदि २ शेष बचे तो संघि। यदि ० शेष बचे तो पराजय।

उदाहरण के लिये प्रश्नपिंड १०८ है। इसमें ३४ जोड़ने से १४२ हुए। इसमें ३ का भाग दिया तो १ शेष बचा। इसलिये उत्तर हुआ 'जीत' होगी।

(३) यदि सुख-दुःख-विपर्यक प्रश्न ही तो प्रश्न का जो संख्या-पिंड हो उसमें ३८ जोड़कर २ से भाग देना चाहिये। यदि शेष १ बचे तो सुख। यदि ० बचे तो दुःख।

उदाहरण—प्रश्नकर्ता यह जानना चाहता है कि उसके जीवन के आगे के २ वर्ष दुःखमय जावेंगे या सुखमय। उससे किसी पुष्प का नाम लेने को कहिये। उसने कहा 'चमेली'। अब 'चमेली' का संख्या-पिंड बनाया—

च+म+र+ए+ल+ई

१५+१२+८६+१८+१३+१८=१६२

इस '१६२' के संख्यापिंड में ३८ जोड़ने से २०० हुए। इस

‘२००’ में २ का भाग दिया तो शेष ० बचा। इस कारण उत्तर देना चाहिये कि अग्रिम २ वर्ष दुखमय बीतेंगे।

(४) यदि गमन (जाऊंगा या नहीं ?) प्रश्न हो तो प्रश्न-पिंड में ३३ जोड़कर ३ से भाग देना चाहिये। १ शेष बचे तो ‘जाना’ होगा। २ शेष हो तो ‘जाना’ नहीं होगा। ० शेष हो तो यात्रा तो होगी परन्तु बीच से ही लौट आना होगा।

उदाहरण : किसी का प्रश्न है कि कलकत्ता जावेगा या नहीं ? उससे ‘किसी पुण्य का नाम लेने को कहिये। उसने कहा ‘चमली’। और बताया जा चुका है कि ‘चमली’ के अक्षरों का संख्या-पिंड १६२ होता है। इसमें ३३ जोड़े तो १६५ हुए। इसमें ३ का भाग दिया तो ‘० शेष बचा।’ इस कारण उत्तर देना चाहिये कि असफलयात्रा होगी।

(५) यदि कोई व्यक्ति बीमार हो या मृत्यु की सम्भावना हो और प्रश्न कियां जावे कि जीवन रहेगा या नहीं तो प्रश्न पिंड में ४० जोड़कर उसे भाग देना चाहिये। शेष १ बचे तो जीवन रहेगा। २ शेष रहे तो कष्टसाध्य जीवन रहेगा—अर्थात् बहुत कष्ट होगा किंतु जीवन बच जावेगा। यदि ० शेष रहे तो मृत्यु हो जावेगी। उदाहरण के लिये यदि जीवन-मरण सम्बन्धी प्रश्न हो और किसी पुण्य का नाम लेने के लिये कहा तो उसने कहा ‘चम्पा’। ‘चम्पा’ के अक्षरों का संख्या-पिंड निम्नलिखित प्रकार से बनाया तो संख्या पिंड १६१ हुआ।

च + अ + म + प + आ

१५ + १२ + ८६ + २७ + २१ = १६१

इसमें ४० जोड़ने से २०१ की संख्या हुई। ३ से भाग दने से ० शेष रहा। इस कारण उत्तर देना चाहिए कि जीवित रहने की

बहुत कम आशा है। वास्तव में ० शेष रहने से उत्तरतो मृत्यु हुआ। परन्तु ज्योतिषी को उचित है कि अशुभ वाणी न निकाले। प्रकारान्तर से उत्तर दे।

(६) गर्भसम्बन्धी प्रश्न हो कि गर्भ है या नहीं तो किसी फल या पुष्प का नाम लेने को कहे। उसका जो संख्यापिंड हो उसमें २६ जोड़कर ३ से भाग दे। १ शेष रहे तो गर्भ है। २ शेष रहे तो सन्देह है—ऐसा कहे। तीन शेष रहे तो गर्भ नहीं है यह कहना चाहिए। उदाहरण के लिए किसी ने कहा 'चम्पा'। चम्पा का संख्यापिंड १६१ है। इसमें २६ जोड़ने से १८७ हुए। ३ का भाग देने से १ शेष रहा। इस कारण उत्तर हुआ कि गर्भ है। . . .

यहाँ पर शंका हो सकती है कि चम्पा की संख्यापिंड बनाते समय यदि,

'च + अ + म + प + आ' इस प्रकार लिखते हैं तो संख्या पिंड १६१ होता है किन्तु यदि,

'च + अ + प + आ'

१५ + २५ + २७ + २१ = ८८

इस प्रकार 'लिखा जावे तो' संख्यापिंड ८८ ही हुमाँ। तब किस प्रकार संख्यापिंड बनाना उचित है। इसका समाधान यही है कि प्रश्नकर्ता से कहे कि कागज पर वह लिख दे। 'चंपा' या 'चम्पा' जैसा वह लिखे उसी के आधार पर प्रश्नपिंड बनाना उचित है।

(७) यदि तेजी-मन्दो सम्बन्धी प्रश्न हो तो किसी फल या पुष्प का नाम लेने को कहे। उसके बाद उपर्युक्त नियमानुसार प्रश्नकर्ता के बहे हुए पुष्प या फल का संख्यापिंड बनावे। उस संख्यापिंड में ३ का भाग दे। १ बचे तो मन्दी (माल सत्ता हीमा

दाम गिरेंगे)। २ शेष वचे तो भाव करीब-करीब उतने ही रहेंगे। यदि ० शेष वचे तो तेजी अर्थात् बाजार ऊचा जावेगा—दाम बढ़ेंगे। उदाहरण के लिए प्रश्नकर्ता ने कहा ‘गुलाब’। ‘गुलाब’ का संख्यापिंड १०८ होता है, यह ऊपर बताया जा चुका है। इस १०८ में ३ का भाग देने से ० शेष रहा। इस कारण उत्तर देना चाहिए कि तेजी होगी—बाजार ऊचा जावेगा।

(५) यदि विवाह का प्रश्न हो तो किसी पुष्प का नाम लेने को कहें। उस पुष्प की संख्यापिंड में ८ का भाग दें।

यदि १ शेष वचे तो विनायत के विवाह; २ शेष वचे तो प्रधिक यत्न से विवाह कहना; ३ शेष रहे तो विवाह इस समय नहीं होगा; ४ शेष रहे तो कन्या का मरण; ५ शेष रहे तो चाचा आदि का मरण या देशान्तर गमन; ६ शेष रहे तो राजभय; ७ शेष रहे तो सांघातिक रोगभय या श्वशुर को कष्ट; ० या ८ शेष रहे तो विवाह से संतान का मरण कहना।

(६) अक्षरों से संख्यापिंड बनाना एक प्रकार है। दूसरा प्रकार है कि किसी कांगज पर संख्यां ही लिखवा लीजावे और उसी संख्यापिंड से विचार किया जावे। विशेष जिजामु पाठकों को इस विषय के विस्तृत ग्रन्थ केरलीय प्रश्न रत्न आदि देखने चाहिए।

पाश्चात्य मत

वैसे तो पाश्चात्य मत बहुत प्रकार के हैं और मूक प्रश्न आदि के नियम यागे पृथक् दिये गये हैं किन्तु साधारण नियम यह है कि प्रश्न-कर्ता से कहे कि वह कोई एक शब्द कांगज पर लिख दे। उस शब्द में जो अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर आवें उनका

‘संयुक्तक’ बनालें। जैसे नाम का संयुक्तांक बनाने की पद्धति इवे प्रकरण में दी गई है उसी प्रकार जो शब्द प्रश्नकर्ता लिखे उस शब्द का संयुक्तांक बनालें और जो शब्दपिंड (संख्या) आवे उसके शुभाशुभ फलानुसार (देखिए इवां प्रकरण जहाँ १० से लेकर ७० तक के संख्यापिंड का विवरण दिया गया है) उत्तर दें।

अंकों से मूक प्रश्न जान

“सेफेरियल” नामके प्रसिद्ध अंगरेज ज्योतिषी ने अपनी अंक ज्योतिष की पुस्तक^१ में अंकों से मूक प्रश्न बनाने का जिक्र किया है और जिस दसवें प्रकरण में इसका विवेचन किया है, उस प्रकरण का नाम खाला है “अंक विद्या से मूक प्रश्न बताना—हिन्दू शास्त्रानुसार।” स्वभावतः हमे जिज्ञासा हुई कि ‘सेफेरियल’ ने हिन्दू-ज्योतिष के किस ग्रन्थ में से उपर्युक्त विषय लिया है। किन्तु बहुत अनुसंधान करने पर भी हमें अपने संस्कृत साहित्य में उस ग्रन्थ रत्न का पता न लग सका। विदेशियों के निरन्तर आक्रमणों से हमारी संस्कृति जर्जरित हो गई और हमारे कितने ही अमूल्य ग्रन्थ संवंदा को काल कबलित हो गये। अब भी जमने और इंगलैण्ड के संग्रहालयों में तथा नैपाल और तिब्बत में प्राचीन भारतीय संस्कृति और विद्या समृद्धि के परिचायक कितने ही ऐसे ग्रन्थ मिलते हैं—जो भारत में उपलब्ध नहीं। अतः पाठकों के सामायं अंक-ज्योतिष द्वारा मूक प्रश्न बताने की विधि दी जाती है।

परन्तु “मूक प्रश्न” के सम्बन्ध में एक विशेष वात ध्यान मे-

रखनी चाहिए। मूक प्रश्न एक प्रकार से दूसरे के विचार को जान लेना है। इसके लिए स्वयं अपनी मानसिक शक्ति और प्रातिमक शक्ति बेहुत प्रबल होना आवश्यक है। सूई से कपड़ा सिलता है। परन्तु सोना भी, तो आना चाहिए। अग्नि से भोजन बनता है। किन्तु जो भोजन बनाने की कला से अनभिज्ञ है वह क्या करेगा? प्रश्न में—मानसिक शक्ति की तीव्रता और चित्त का सात्त्विकता—यह दो गुण परमावश्यक हैं। जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य अच्छा गायक नहीं हो सकता—वाणी का सोष्ठव और गले की मिठास ईश्वरीय देने होते हैं, उसी प्रकार मूक-प्रश्न आदि विद्या में सब सफल नहीं हो सकते। जिनमें ‘अतीन्द्रिय ज्ञान’ विशेष मात्रा में होता है वे ही मूक प्रश्न बताने में सफल हो सकते हैं।

प्रश्न करने वाले से कहिये कि नो अंक लिख दे। इनको जोड़िये और योग में सदैव ३ जोड़ दीजिये।

उदाहरण के लिए प्रश्नकर्ता ने लिखा—

६८५६२७१४२=४४

सदैव जोड़िए
योग—४७

इस ‘४७’ संख्या के अनुसार नीचे जो उत्तर आवेगा—कम प्रश्न का उत्तर होगा। यदि कोई ६ बार केवल ० लिखे, तो—

सदैव जोड़िए=३

योग—३ होगा। सबसे बड़ी संख्या तब बनेगी जब कोई ६ बार ६ लिख दे।

ԷԷԷԷԷԷԷԷ=ՇՇ

संदैवं जोऽहिंए

योग — ८४

इसलिए सबसे बड़ी संख्या ८४ होगी । इसलिए ३ से लेकर ८४ तक की संख्याओं का फैज़ नीचे दिया जाता है ।

(३) आप किसी बीमारी, बुखार, रोग या क्रोध की व्यक्तिगत बात सोच रहे हैं।

(४) किसी कांटुम्बिक विषय में—प्रेम या धानन्ददीयक विषय में जिससे हृदय का बहुत सम्बन्ध है—या जिसकी तीव्र इच्छा आपके मन में है।

(५) विवाह के विषय में—या किसी इकरारनामे या साभेदारी के विषय में या किन्ही दो वस्तुओं या व्यक्तियों के मिलने के विषय में।

(६) किसी समाचार या खबर के विषय में, यांधा भाई या किसी सबारी या ढांके से आने वाली वस्तु के विषय में।

(७) मकान या जमीन के विषय में या भूमि के नीचे की वस्तु के विषय में, समुद्र, जलराशि, परिवर्तन या स्थानपरिवर्तन आदि के विषय में।

(८) विदेशी या प्राचीन वस्तु के विषय में।

(९) मृत्यु से सम्बन्धित या घाटे के विषय में। कोई गलत इकरार नामा हो गया है और वह कैसे ठीक हो?

(१०) कोई कष्टदायक सम्बन्ध हो गया है या कोई ऐसा इकरार नामा जिससे हानि की समावना है या भगड़े के विषय में।

(११) किसी खान, जायदाद या उसके मूल्य के विषय में।

(१२) खुशनुमा वातावरण, कोई जलसा या उत्सव, आराम की चीज़ें बढ़ियां कपड़े ।

(१३) द्रव्यों के सम्बन्ध में, सट्टे या लाभ के विषय में ।

(१४) किसी स्त्री-सम्बन्धी के विषय में (लड़की, बहिन आदि) नदी या समुद्र के उस पार से जाने वाले किसी संवाद के विषय में या किसी यात्रा के विषय में ।

(१५) किसी मृत्यु या दुःखदायी समाचार के सम्बन्ध में या किसी अन्य कट्ट के समाचार या धाटे के विषय में ।

(१६) किसी अच्छे या शुभ समाचार के विषय में, किसी लाभदायक सम्पर्क, पत्नी या किसी अच्छे इकारारनामे या बातचीत के विषय में ।

(१७) किसी रोग, तकलीफ या नोकर या अपने समीप की किसी वस्तु के विषय में ।

(१८) किसी हर्षदायक यात्रा के विषय में, प्रेम, हृप, भाई या इच्छित संन्देश प्राप्ति किंवा सुवर्ण या कोटुम्बिक बात के विषय में ।

(१९) किसी चीज़ की रुकावट, जेल, एकान्तवास, अस्पताल में रहना और वाच्चे के विषय में ।

(२०) किसी यात्रा या पत्र के विषय में, किसी से पत्र-व्यवहार या वस्तु के लाने-ले जाने के विषय में—रास्ते से सम्बन्धित प्रश्न ।

(२१) लाभ के विषय में—कुछ आर्थिक लाभ, जो वस्तु कब्ज़े में हो सकें या चाँदी की चीज़ ।

(२२) किसी ऐसे विवाह के विषय में जो इच्छा के प्रतिकूल या दुष्परिणामपूर्क हो—किसी बीमार सांभोदार या पति या

पत्नी के विषय में—किसी दात्रु या प्रतियोगी की वावत अथवा कठिनाइयों या प्रतिकूल इकरारनामे के सम्बन्ध में।

(२३) सुसम्पन्न स्थिति में रहने के विषय में, अच्छे कपड़े, उत्तम भोजन, स्वामिभक्त नौकरों के विषय में, अच्छे पद, स्वास्थ्य, तथा आराम के सम्बन्ध में।

(२४) किसी स्थिति की ढाँचाड़ील हालत के विषय में—किसी कौदुम्बिक कलह की वावत—किसी ऐसे नवीन कार्य की आयोजना के विषय में जिसमें बहुत कठिनाइयाँ तथा विपरित उपस्थित हो रही हों—वच्चों के विषय में या गुप्त प्रेम के सम्बन्ध में।

(२५) बहुत लाभ के विषय में, बहुत धन, सोना, सूर्य या किसी चमकीली वस्तु की वावत।

(२६) शान्तिपूर्ण अधिकार के विषय में, अच्छी, जायदाद, मकान, बुनियाद या समतल भूमि की वावत।

(२७) किसी बन्द कमरे या जगह की वावत—नाव ढारा छोटी यात्रा। भाई या किसी सम्बन्धी के विषय में, किसी पत्र या सन्देशा लाने वाले की वावत।

(२८) अपनी कल्पना के विषय में—सफेद कपड़ा, प्याला या चौदी की चीज़—नवीन (शुक्लपक्ष की प्रारम्भिक तिथियों के) चन्द्रमा के विषय में।

(२९) अस्वास्थ्य के विषय में—गरीबी और कठिनाइयों की परि-स्थिति के विषय में, खून फसाद या धीमारी की वावत।

(३०) प्रसन्न वच्चों के विषय में, आनन्ददायक अनुभव, संयोग, किसी विरासत या दहेज ढारा प्राप्त धन के विषय में।

(३१) जमीन के नीचे (भूगम्भ में स्थिति) वस्तु के विषय में, मकान में स्थित सर्प, विच्छू या अन्य जानवर या विदेश की वावत ।

(३२) किसी बादशाह या सरकार या सुवर्ण सम्बन्धित या अपने स्वयं के व्यक्तित्व या कार्य के बारे में ।

(३३) एक प्रसन्न दायक समाचार के विषय में, अच्छा पद या स्थिति भाई या किसी अन्य विशिष्ट उपलब्धि की वावत ।

(३४) आधिक लाभ से सम्बन्धित, भोजन या अन्य आवश्यक पदार्थ, अन्न या अन्य लाभ ।

(३५) किसी स्थी के विषय में, जन्म की वावत —किसी गुप्तयोजना या कार्यवाही से सम्बन्धित—अपनी किसी गुप्त बात की या एकान्तवास की वावत ।

(३६) सट्टे या रोजगार मे हानि, वीमार वच्चा, दुःखदायक कौटुम्बिक स्थिति दुःख और कष्ट की वावत ।

(३७) किसी ऐसे इकरारना मे के विषय में जिसका परिणाम अच्छा न हुआ हो—किसी विवाह के विषय में जिससे खुशी हासिल न हुई हो—मकान, जायदाद या अस्तवल की वावत ।

(३८) बुखार—मलेरिया या मोतीभरा से सम्बन्धित शारीरिक कष्ट या मृत्यु—यात्रा, अथवा संचाद—किसी समीप के तालाब या जलाशय की वावत; वहिने के विषय में ।

(३९) किसी बन्द जगह या मन्दिर के विषय मे—राजभवन या चमकीले मकान (सिनेमा) आदि से सम्बन्धित किंवा बाहर जाने—निष्कासन आदि के विषय में ।

(४०) अन्न के मूल्य, बहुमूल्य वस्तु, जवाहरात, जेवर, पहिनने के वस्त्र या द्रव्य विषयक ।

(४१) अपने स्वयं के या अपनी पोशाक, भोजन, स्थिति, नेकनामी, बदनामी, साख या प्रतिष्ठान के बारे में ।

(४२) किसी मिश्र या उच्च पद की स्त्री के विषय में, किसी उच्च पदाधिकारिणी की कृपा के सम्बन्ध में—किसी जन समूह की बाबत ।

(४३) मीरुसी जायदाद के विषय में, पुरानी इमारत, इमशान, खान की वस्तुओं की बाबत या किसी बृद्ध के विषय में ।

(४४) भाई के विषय में, स्वास्थ्य, आराम की वस्तु, शोकीनी, धार्मिक ग्रंथ, शास्त्र सम्बन्धी या समुद्र पार अथवा दूर से आने वाले पत्र के विषय में ।

(४५) विवाह के विषय में—लाभ या हानि सम्बन्धी प्रश्न । धोता, पक्षपात, असमानता या किसी द्योटे सूल्य की वस्तु के विषय में ।

(४६) किसी मिश्र या उच्च पदाधिकारी के विषय में—सोने की वस्तु, अंगूठी, जवाहरातं या वहसूल्य वस्तु के विषय में ।

(४७) स्वयं के विषय में न्याय-इन्साफ-मुकदमें के बारे में, नाप तोल, संतोष, आराम, शांति, मृत्युं के विषय में ।

(४८) पोशाक-गृह, मकान की किसी अन्दरूनी जगह की बाबत । किसी छिपे हुए नीकर के विषय में—किसी स्त्री के स्वास्थ्य के विषय में यां दूर से आने वाले संवाद के विषय में ।

(४९) पंद-परिवर्तन के विषय में, अपनी मार्ता या किसी विशिष्ट वस्तु की बाबत—किसी रानी या उच्च पदाधिकारिणी महिला के विषय में ।

(५०) किसी कष्टदायक यात्रा के विषय में—कष्ट में पड़ी हुई किसी

बैहिने के विषय में—किसी बुलाहट या दुःखद समाचार के विषय में ।

(५१) खांभ या आर्थिक प्रचुरता के विषय में । किसी शर्त, सट्टा, लॉटरी, किसी रोजगार, बच्चों, या दूर से आने वाले द्रव्य के विषय में ।

(५२) शारीरिक रोग या मृत्यु के विषय में—खोई हुई, छिपी हुई वस्तु की बाबत, नोकर, लाल कपड़ा, गरम भोजन, डाक्टर बैद्य 'यमराज' या सर्प विषयक प्रश्न ।

(५३) किसी उच्च पद के विषय में—राजा या तत्संह पदाधिकारी, मृत सिंह या खोये हुए सोने के विषय में ।

(५४) सांघातिक भेदानक रोग के विषय में, कप्ट की परिस्थिति में, किसी स्त्री के विषय में—पत्नी, कन्या, किसी वादे या इकरार नामे की बाबत—चहारदीवारी सम्बन्धी प्रश्न ।

(५५) मृत्यु के विषय में, किसी खोये हुए कागज या गलत जगह पहुँचे हुए सन्देश के विषय में—किसी नदी उम्र की लड़की, जन समूह या मित्र के विषय में ।

(५६) समुद्र पार विदेश सम्बन्धी-समुद्र यात्रा के विषय में, धार्मिक सम्मेलन, प्रकाशन, जहाज या भूत के विषय में ।

(५७) किसी खंडन, भंडार या प्राप्त धन-राशि के विषय में किसी विरासत, पैदान या पुरुष-सम्बन्धी की बाबत ।

(५८) वकील, जज, गुरु, पुरोहित, शास्त्र, वेद, ब्राह्मण, व्यक्तिगत जायदाद, व्यक्तिगत प्रभाव या प्राप्ति के विषय में ।

(५९) मृत्यु-गृह, अंसपताल, रोगी के कर्मरा, बच्चा, घर में जलती हुई अग्नि—किसी साहस या उद्योग सम्बन्धी प्रश्न ।

(६०) किसी पारसी के विषय में, धार्मिक संस्कार-विदेशी नूप, ऋषि, समाधि, ब्रह्म, आकाशस्थित सूर्य, ईश्वर तथा काल, विषयक प्रश्न ।

((६१) भोजन या खाद्य विषयक प्रश्न; व्यापार, उत्तम वस्त्र, पुरुष-मित्र, व्यापार स्थान या बाजार भौकर या वैष्णव त्राह्णण विषयक प्रश्न ।

(६२) किमी लेख या इकरारनामे के सम्बन्ध में—किसी वादे कार्य भार या माहिदे की वाबत-कानूनी कार्यवाही; पद, मिलिक्यत या पिता विषयक प्रश्न ।

(६३) मृत स्त्री से सम्बन्धित-खोई हुई जायदाद या धन्तुं के बारे में। कफन का वस्त्र—लीणचन्द्र—स्त्री का दहेज (स्त्रीधन), स्नान सम्बन्धी प्रश्न ।

(६४) अपनी पद—स्थिति सम्बन्धी प्रश्न। प्राप्त जायदाद के विषय में, विरासत, बृद्ध मनुष्य, सौदा या वस्तु-परिवर्तन, संयम की अवधि सम्बन्धी प्रश्न ।

(६५) छोटी यात्रा और उससे लौट आने के विषय का प्रश्न—जाना और आना—पैदल यात्रा—बन्दकमरा—सुखद कमरे में रहना वहिन, ग्रंथवा मंत्र के विषय में।

(६६) इमशान—पर्वतीय स्थल या स्थान—खनिज पदार्थ, वैद्य, मृत मित्र, जलता हुआ घर, सूखी भूमि या रेत विषयक प्रश्न।

टिप्पणी : 'सेफेरियल' ने मंत्र, ईश्वर, ऋषि, ब्रह्म, वैष्णव त्राह्णण, रामाधि, गुण, पुरोहित, यम, धैर, शास्त्र भारि शब्दों का प्रयोग किया है—जिस से यह निस्तन्देह प्रमाणित होता है कि इस प्रकरण का विषय शुद्ध संकृत शास्त्रों से संकलित है।

(६७) मृत राजा, खोया हुआ सोना, स्त्री का दहेज, करधनी, वीमार व वचे से सम्बन्धित प्रश्न।

(६८) छोटी (कम उम्र की) कन्या के सम्बन्ध में—कुटुम्ब सम्बन्धी, विश्वास योग्य पद या जमानत सम्बन्धी प्रश्न।

(६९) वस्त्र, नीका, जहाज सोदागरी का सामान, भोजन की वस्तुएं, व्यापार, वेदांग या व्यापार सम्बन्धी।

(७०) पत्नी सम्बन्धी प्रश्न, इकरारनामा, जनता के एकत्रित होने का स्थान, पूरणचन्द्र सम्बन्धी प्रश्न।

(७१) जलपात्र या 'कुम्भ' विषयक प्रश्न। किसी पुराने परिचित जन या स्थान, या मित्र के सम्बन्ध में। अन्य लोगों से अपने सम्पर्क के विषय में।

(७२) धन के विषय में—किसी रईस मित्र, वाहण, धार्मिक सम्मेलन खड़ाके या अन्य जोड़े (दो वस्तु मिलाकर पूर्ण होने) वाले पदार्थ के विषय में।

(७३) भाई, पंद, किसी शासंक की मृत्यु, शोद्रवात्रा, कोधयुक्त सन्देश सम्मान-प्रतिष्ठान उत्तराधिकार अथवा लिखने के विषय में।

(७४) चमकते हुए सूर्य के विषय में; गवितो पल्ली, शक्ति सम्पन्न शत्रु, आखेट, नेत्र ज्योति, या किसी चमकीले पदार्थ के विषय में।

(७५) खुशनुमा स्थान, सम्पन्न जमीदारी, भोक्ता, दफ़ीना (पृथ्वी के अन्दर द्रव्य राशि); गाय-भेस आदि जानवरों के विषय में।

(७६) पुत्र, विद्यास्थान, पाठ्याला स्कूल; नव परिणीत वर्धे या सेक्रेटियल ने 'वेदांग' कुम्भ, भोक्ता, शहूवारी, धोती आदि शब्दों का प्रयोग किया है।

ग्रहाचारी विषयक प्रश्न ।

(७७) सफेद पगड़ी या साफ़ा, नोकरानी, ओपृष्ठि, जल या पीने के सम्बन्ध में ।

(७८) किसी वृद्ध मित्र, संस्था, प्रचीन सम्बन्ध, अस्पताल या कारगार स्थित मनुष्य के विषय में ।

(७९) अपने विषय में—वृद्धि और समृद्धि विषयक प्रश्न—पद, शक्ति पर, खड़ाऊँ । किसी वस्तु की अति सीमा विषयक या जज, वकोल या समझ के विषय में ।

(८०) लाभ, हानि की आशंका, अभिन्न से हानि, विदेश की भूमि—दूर स्थान से मृत्यु, प्रलय,^१ यात्रा सम्बन्धी प्रश्न ।

(८१) किसी धनिक सम्बन्धी के विषय में, उत्तम वस्त्र, सुनहरी आभूषण, व्यक्तिगत स्वास्थ्य, पके फल के सम्बन्ध में ।

(८२) शांतिमय मृत्यु, बहुमूल्य दहेज, हर्ष समाचार, हाथी की सवारी, लाभ के लिये यात्रा या वहिन के विषय में ।

(८३) व्यापार सम्बन्धी । रान्धि या इन्हारनामा सम्बन्धी प्रश्न, जायदाद का डेफ़ा या किंराये पर देना—रास्ता या फ़ाटक, नव विवाहित वधू या सगाई के सम्बन्ध में ।

(८४) कन्या के विषय में । तासाव या स्नान, स्थान, जनमहोत्सव, दुर्गा, शुद्धि, साफ़ वस्त्र, प्रिय पात्र के विषय में ।

नाम के अक्षरों से जय—पराजय ज्ञान ।

प्रत्येक नाम को संख्या बनाकर यह निश्चित करना कि दो व्यक्तियों में से किसकी हार योर किसकी जीत होगी—उभ विषय

१. सेफेरियत ने 'प्रलय' 'दुर्गा' यादि संकृत शब्दों का प्रयोग किया है

में कई प्राचीन विद्वानों ने नाम के अक्षरों से जय-पराजय चक्र बनाने का प्रकार बताया है। “समरसार” नामक संस्कृत ग्रंथ के आधार पर कुछ चक्र नीचे दिये जाते हैं।

१. जय पराजय चक्र

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ६ | ६ | ८ | ८ | ८ | ६ |
| आ | आ | इ | इ | उ | ऊ | ए | ए | ओ | ओ | अ |
| क | ख | ग | ग | च | च | ज | झ | ट | ठ | ड |
| ठ | ष | त | थ | द | थ | न | प | क | ब | भ |
| म | य | र | ल | ब | श | य | स | ह | ० | ० |

जिन दो व्यक्तियों के विषय में विचार करना है—उनके नामाक्षरों की संख्या बनानी चाहिए।

(क) उदाहरण के लिए—

$$\text{राम} = ५ + \text{आ} + \text{म} + \text{य} = ३ + ५ + ५ + ५ = १८$$

$$\text{रावण} = ६ + \text{आ} + \text{व} + \text{अ} + \text{ण} + \text{य} = ३ + ५ + ३ + ५ + ५ + ५ = २६$$

इस प्रकार दोनों नामों की संख्या बना लेने पर २ से भाग देना। यदि दो का भाग देने पर दोनों में ० शेष आवे—अर्थात् कुछ नहीं बचे तो या दोनों में ‘१’ एक शेष आवे तो समझना कि दोनों पक्ष प्रायः समान बली है। अन्तिम विजय किसकी होगी यह विचार करने के लिए अन्य प्रकार बताए जावेगे। यदि २ का भाग देने से एक नाम के अक्षर की संख्या में १ बचे और दूसरे नाम की संख्या में ० बचे तो ‘जिसके नामाक्षर संख्या में ‘१’ बचे उसकी विजय (जीत) होगी।

उपर्युक्त उदाहरण में संख्या १८ तथा २६ आई है। २ से भाग

देने से दोनों में ही ० वचा । इस कारण दोनों पक्ष बली हैं । काफी ठन कर लड़ाई होगी, यह निष्कर्ष निकालना चाहिए ।

(ख) जब इस प्रकार से कोई निर्णय न हो सके तो दोनों संख्याओं में ८ का भाग दे । जिस संख्या में अधिक शेष वचे उस संख्या वाले द्वतीय भी विजय होगा ।

उदाहरण के लिए १८ तथा २६ इन दोनों में ८ का भाग दिया दोनों में '२' शेष वचा । इस प्रकार से भी यही निर्णय आया कि दोनों पक्ष समान बली है । अन्तिम विजय के निर्णय के लिए आगे के चक्रों से सहायता लेना चाहिए ।

२. जय पराजय चक्र

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | ३ | २ | ४ | ५ | ६ | ६ | ४ | ३ | ० | १ |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ | ঁ |
| क | খ | গ | ঁ | ঁ | ঁ | ঁ | ঁ | ঁ | ঁ | ঁ |
| ঁ | প | ত | থ | দ | ঁ | ন | ঁ | ক | ঁ | ঁ |
| ম | য | ৰ | স | ব | ঁ | ঁ | স | হ | ০ | ০ |

सर्व प्रथम नं० १ के चक्र से जय—पराजय का विचार करना चाहिए । उससे कोई निर्णय स्पष्ट न आवे तब इस द्वितीय चक्र की सहायता लेना उचित है ।

$$\text{राम} = ८ + \text{आ} + \text{ম} + \text{অ} = २ + ३ + ६ + ६ = १७$$

$$\text{रावण} = ८ + \text{आ} + \text{ব} + \text{অ} + \text{ণ} + \text{ঁ} = २ + ३ + ८ + ৬ + ৩ + ৬ = २८$$

यदि दोनों संख्या १२ से अधिक हों तो दोनों में से वारह वारह घटावे और शेष में आठ का भाग दे । जिसका शेष अधिक हो उसी की विजय होती है । उपर्युक्त उदाहरण में राम की संख्या

वनी १७ और रावण की २८। दोनों में १२ घटाये तो संख्या रही ५ तथा १६। इनमें पृथक् पृथक् ८ का भाग दिया तो शेष रहा ५ तथा ०। राम की संख्या में शेष '५' रावण की संख्या में शेष ० में अधिक है, इस कारण राम की विजय हुई।

३. जय पराजय चक्र

| ८ | ४ | ६ | ५ | ७ | १ | ३ | २ |
|-------------|---|---|---|---|---|---|---|
| म आ इ ई | क | च | ट | त | प | य | ष |
| उ क श्व श्व | त | थ | ठ | थ | फ | र | प |
| सु सु ए ए | ग | ज | ० | द | य | त | स |
| ओ ओ अं अं | घ | झ | ० | घ | भ | व | ह |
| अः | ट | अ | ण | न | म | ० | ० |

यदि उपर्युक्त प्रथम तथा द्वितीय चक्रों में वर्णित प्रकारों से कोई निर्णयात्मक उत्तर न आवे तो इस तृतीय चक्र से विचार करना चाहिए।

दोनों नामों में अक्षरों की संख्या बनाकर पृथक् पृथक् ७ का भाग देना चाहिए। जिसके नाम की संख्या में शेष अधिक रहे उसी की विजय होगी।

उदाहरण के लिए राम=८+आ+म+य

$$\dots = ३ + ८ + १ + ८ = २०$$

रावण=८+आ+व+अ=५+अ

$$\dots = ३ + ८ + ३ + ८ + ५ + ४ + ८ = ३४$$

दोनों में ७ का भाग दिया। शेष दोनों में ही ६ बचा। इसका अर्थ है कि दोनों में युद्ध-बल बराबर है।

इस प्रकरण में राम और रावण दो प्रतिद्वयोद्धाओं के नाम उदाहरण के लिए ले लिये गए हैं। प्राचीन ऐतिहासिक पुरुषों पर

इन्हें नहीं आजमाना चाहिए । जब कोई समस्या सामने हो तब शुद्ध और निर्मल चित्त से निर्णय के लिए इन चक्रों का प्रयोग उचित है ।

यदि प्रश्न करने वाला शुद्ध चित्त से ज्योतिषी के पास जाकर आदर पूर्वक प्रश्न करे कि “अमुक स्त्री के पुत्र होगा या कन्या होगी” तब तो प्रश्न का फल मिलेगा । यदि किसी ६० वर्ष की वृद्धा स्त्री का नाम लिखकर पूछे ‘इसे’ कन्या होगी या पुत्र तो फलादेश नहीं मिलेगा । किसी भी प्रश्न के लिए जब नाम, राशि या कुण्डली का विचार हो या संख्या या ग्रंक-ज्योतिष से विचार करना हो, तो भनमें आस्तिक बुद्धि आवश्यक है । भूतकाल के, उपहास (हँसी मजाक) या परीक्षा के लिए किए हुए प्रश्न ठीक नहीं बैठते । केवल भविष्य-विषयक प्रश्नों के लिए ही उपर्युक्त चक्र काम में लाने चाहिए ।

टिप्पणी —सिफेरियल नामक अंग्रेज ज्योतिषी ने अपनी पुस्तक, (The Kabala of Numbers) के पृष्ठ १४८—१५३ में लोपी हुई अनुभाँ का पता लगाने के लिये १ से ८४ तक के अंकों का फलादेश दिया है ।

प्रझनविषयक विशेष ज्ञान के लिए निम्नलिखित प्रथा देखने चाहिए ।
 १. प्रझन वैद्यन २. प्रझन भंवर ३. केरल प्रझन संग्रह ४. केरलीय प्रझन रत्नम्
 ५. प्रझन एथीनिधि ६. प्रझन भूषण ७. प्रझन कौगुदी ८. ताजिक नोसकंठी
 (प्रझन तंत्र) ९. प्रझन घूड़ामणि १०. केरल ज्ञान प्रझन घूड़ामणि । ११. प्रझन
 मार्ग, १२. प्रझन चंडेश्वर, १३. पट्ट पुंचाशिका, १४. भुवनदीपक, १५. उत्तर
 कालामृत आदि । ये पुस्तकें गोप्यत एष्ट कम्पनी दरीयाँ, दिल्सी से प्राप्त की
 जा सकती हैं ।

ग्रंक-ज्योतिष विज्ञान का सार बहुत से प्रथों से लेकर कमर दिया गया है । जी शुद्ध ज्योतिष का विषय है वह इन प्रथों के अवलोकन से ज्योतिषियों को विशेष उपयोगी होता ।

20 Akbar Road,
New Delhi, the 1st August, 1950

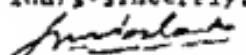
Dear Mr. Ojha.

* * * *

I have jotted such important events as may help you in your astrological research. You will note that the most important events of my life have occurred in the months of February or March, and also in the month of November.

Thanking you,

Yours sincerely,


(G.V. Mavalankar),

To...
Shri Gopesh Kumar Ojha, M.A., LL.B.,

उपर्युक्त पत्र में ४३ से अधिक परिया हैं। केवल अंतिम ४ परियां ल्लौक में दी गई हैं। (देखिये पृष्ठ १५६)

स्वार्गीय पण्मुखम् चेटी (फाइनेंस मिनिस्टर गवर्नरेंट ऑफ इंडिया) के पत्र का एक अंश नीचे दिया जाता है।

5 QUEEN VICTORIA ROAD
NEW DELHI
7th October 1947

* * * *

I must thank you for the interest that you have taken in my career.

Yours sincerely,


(R.K. Shanmukham Chetty)

Mr. Gopesh Kumar Ojha.

उपर्युक्त पत्र लम्बा है। केवल अंतिम अंश दिया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक विशिष्ट पुरुषों की जीवनी का उल्लेख किया जा सकता है। परन्तु बहुत से याज्ञन नहीं चाहते कि उनके जीवन की घटनाओं पर, मुद्रित पुस्तक में प्रकाश ढाला जावे।

